पहचान के लिए युद्ध

आज़ादी की ओर बढ़ते क़दम

लेखक: एड्रियन ईबन्स

पहचान के लिए युद्ध

आज़ादी की ओर बढ़ते क़दम

लेखक
एड्रियन ईबन्स

For more copies , please contact us:
Preparation Hour Ministry
P O Box: 75 (HPO)
Bareilly-243001, U.P. (INDIA)
Email:globalendtime@gmail.com
www.globalendtime.org

मारानथा मीडिया

विश्व अधिकार सुरक्षित है। इस पुस्तक या इसका कोई भी भाग
केवल संक्षिप्त समीक्षा को छोड़कर
प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना किसी भी रूप में छापना
या सुरक्षित रखना वर्जित है।

Copyright @ 2014, Adrian Ebens

Duracell is owned by Procter & Gamble Co. and is registered in the USA and other countries. Reference to Duracell in this context are made purely for illustrative purpose, and do not imply endorsement or affiliation with the Duracell brand, or its parent company, Protector and Gamble.

प्रकाशक
मारानथा मीडिया

यह किताब –

मेरे पिता एबल, जिहोंने मुझे सीधा खड़े होना,
सदैव ईमानदार रहना, जो आरम्भ किया उसे पूरा करना और
अन्याय को कभी भी सहन न करना सिखाया;

मेरी प्रिय माता जी ईवलिन, जिन्होंने मुझे सपने देखते रहना
रचनात्मक बनना, प्रकृति से प्रेम करना और
उदार बनना सिखाया;

और मेरे बचपन की साथी मेरी प्रिय बहन कैरिन,
जो अपनी तीव्र बुद्धि से अक्सर मुझे हंसाती रहती थी,

को समर्पित है

विषय सूची

(भाग एक) दो साम्राज्य- पहचान खो गई

1. ड्यूरासेल पेड़ 1
2. जीवन का स्रोत 7
3. परमेश्वर के हृदय के निकट 14
4. पारिवारिक साम्राज्य 17
5. पारिवारिक संकट 20
6. पृथ्वी पर नरक 24
7. स्वर्ग की जीवन रेखा 31
8. दोनो साम्राज्यों की तुलना 35
9. बेबीलोन का साहस 39

(भाग दो) एक नियति–पहिचान की पुनः प्राप्ति

10. ड्यूरासेल की जंजीरों को तोडना 44
11. स्वर्ग के दरवाज़ों को खोलना 51

(भाग तीन) पुत्र अधिकार को प्राप्त करने की यात्रा

12. ड्यूरासेला द्वारा संचालिज जीवन 55
13. स्वर्ग को जाने वाली सीढ़ियाँ 59
14. एक देवता, अनेक नाम 64
15. तुम कैसे पढ़ते हो? 70
16. अब पराधीन नहीं 74
17. बेबीलोन का पतन 78

(भाग एक)-दो साम्राज्य
पहचान खो गई

1. ड्यूरासेल पेड़

कमरे में हल्की रौशनी थी। एक दीवार पर अनेक पोस्टर थे, पॉप गायक और दूसरा एक खिलाड़ी जो प्राय: मेरी चिर प्रतीक्षित चाहत की ओर एक खिड़की खोलते थे. दूसरी दीवार के सहारे लगी मेज़ पर कुछ किताबें थीं, परन्तु इस मेज़ का मुख्य आकर्षण एक छोटा किन्तु शक्तिशाली स्टीरियो सिस्टम था. यह कमरा वास्तव में एक नव युवक की महत्वाँकाक्षाओं, उथल-पुथल और हाँ, उसके सपनों का दर्पण था.

मेरे दिल में एक बड़ा संघर्ष चल रहा था, एक नियति का संघर्ष, सच्चाई का एक पल. ''मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि मैं ऐसा कुछ करूँगा,'' फर्श की ओर देखते हुए मैं बुदबुदाया. मेरी स्व-अवधारणा की सख्त परीक्षा हो रही थी। संघर्ष इतना प्रचण्ड था कि साँत्वना की चाह में मैं उन पोस्टर्स की ओर देखने लगा जिन्होंने अनेक बार पहले भी मेरी सहायता की थी जब मुझे जब मैंने अपने दिमाग़ को उन बातों की ओर से हटाने की कोशिश की थी जिसकी फसल अभी मैं काट रहा था.

हवा निराशा के भावों से भरी हुई थी. मेरा मन ऐसे संकेतों की तलाश में था जो मेरे अस्थिर दशा को स्थिरता प्रदान कर सके: पढ़ाई, खेल, सफल वक्ता कुछ ऐसे संकेत थे जिन पर मेरी उम्मींदें टिकी हुई थीं, किन्तु अब वे सब मेरे लिये क़मज़ोर से लग रहे थे। एक डरावना बादल मेरे ऊपर छा गया और मेरी आँकाक्षाओं के भाव को निचोड़ने लगा। धक्का मार कर यह मेरे दिल के बेशक़ीमत कोने में घुस गया और मेरा ख़ज़ाना चुरा लिया, और इसने आशा के लिए सर्वोत्तम पवित्र स्थान तैयार कर दिया।

मैं अपनी माँ से ऐसे बोला था, जैसा कभी न बोलने की मैंने ख़ुद से कसम खाई हुई थी। यह अन्तिम तिनका था जिसने मुझे यह एहसास कराया कि मैं वैसा इंसान नहीं था जैसा मैं बनना चाहता था। मैं ख़ुद को पसन्द नहीं कर पा रहा था, और मैं अपने आप को बदलना चाहता था, लेकिन यह मुझे असंभव सा लग रहा था।

उदासी ाउ दासीह ीए`साए कलौताअ भिशापहै ज ोह मारेस माजक ोक ष्टद`र हाहै ाव र्ल्डहैल्थ ऑर्गनाइज़ेशन की महानिदेशक डॉ0 ग्रो हार्लेन ने कहा:

> *...आरम्भिक आंकड़े बताते हैं कि जो लोग आज जीवित हैं उनमें से लगभग 450 मिलियन लोग मानसिक या तंत्रिका संबन्धी समस्याओं से जूझ रहे हैं... उदासी, अपंगता पैदा करने वाली संसार की आज मुख्य समस्या बनती जा रही है।*[1]

1998–99 के आँकड़ों को देखकर समस्या की गंभीरता को समझने का प्रयास कीजिए।

- प्रति वर्ष दस लाख आत्महत्याएँ
- 38 लोग/मिनट आत्महत्या करने का प्रयास करते हैं।
- अमेरिका में 35–49 आयु वर्ग के पुरुषों में आत्महत्या से होने वाली मृत्यु का तीसरा नम्बर है।[2]
- वर्ष 1997 ऑस्ट्रेलिया आत्महत्या द्वारा जवानों में की मृत्यु दर में प्रथम स्थान पर था।[3]

संसार में आख़िर क्या होने वाला है? जीवन में ऐसी कौन सी उदासी है जिसकी वजह से लोग दूसरे दिन का सामना करने के बजाए मरने का चुनाव कर रहे हैं?

फिलिप डे अपनी किताब *द माइण्ड गेम* में चौंकाने वाले तथ्य पेश करते हैं:
गुजरे समय में जब चिंता करने वाले परिवार के सदस्य एक साथ जमा होकर रिश्तेदार उदास व्यक्ति से बात–चीत करते हुए आश्वासन और ध्यान दिया करते थे..., आज जबकि परिवार की इकाई में बिखराव, धर्म का पतन और 21वीं सदी के भाग दौड़ भरी ज़िंदगी के कारण परिवार एक दूसरे से दूर हो गये हैं, मनोचिक्तिसा ने उस सलाह मश्वरा की जगह ले ली है जो परिवार के प्रेम करने वाले सदस्यों या पड़ोसी पादरी द्वारा दी जाती थी। मेरा पक्का विश्वास है कि इसी के कारण समाज पर घातक असर पड़ा है।[4]

फिलिप डे तीन बातें लिखते हैं. (1) पारिवारिक इकाई में बिखराव, (2)धर्म का पतन, (3) 21वीं सदी की भाग दौड़ भरी ज़िन्दगी के कारण अनेक परिवारों का एक दूसरे से दूर रहना। इनमें निर्णायक तत्व है परिवारों में बिखराव। डेविड वैन बियेमा ने इस विषय पर बात करते हुए निम्नलिखित बात कही है: किसी भी दूसरी पीढ़ी से बिल्कुल अलग पीढ़ी आ गई है जिसमें लाखों लोगों का जीवन के आरम्भ में ही गहन दुःखों से सामना हो जाता है। वे तलाक़ के बालक हैं। वे पीड़ाओं से जूझते हुए असंख्य लोगों के संगठित दल की मात्र पहली कतार के लोग हैं।[5] *अडल्ट चिल्ड्रन ऑव लीगल एण्ड इमोनशनल डिवोर्स* के लेखक जिम कॉनवे अपनी किताब में विस्तृत विवरण के साथ उन लोगों के दर्द और हानि का वर्णन करते हैं जो कानूनी रूप से या फिर भावनात्मक रूप से परिवार के बिखराव के कारण एक दूसरे से अलग हो गये हैं। एक मुख्य गुण जिसका वे जिक्र करते हैं वह असुरक्षा की भावना और इस प्रश्न की निरन्तरता,''मैं कौन हूँ?'' और ''क्या मैं इस योग्य हूँ कि मुझसे प्रेम किया जाए?''[6]
ये प्रश्न मानवीय दुविधा के स्रोत–महत्व के अहसास तक ले जाते हैं. क्या वास्तव में कोई ऐसा है जो मेरी परवाह करता है? क्या मेरी भी कोई क़ीमत है? मानवीय सोच में ये प्रश्न कैसे आए? इस प्रश्न का

उत्तर पाने के लिए हमें वापस आरम्भ की ओर जाना होगा.

अचानक हव्वा ने पाया कि वह वर्जित पेड़ को निहार रही थी.''परमेश्वर ने हमें इस पेड़ के फल खाने से मना क्यों किया है?'' वह सोचने लगी. फल मोहक था और उसे आगे आने का बुलावा दे रहा था. अचानक उसने एक आवाज़ सुनी जो उस पेड़ से आ रही थी. अवसर पाकर शैतान साँप के माध्ययम से हव्वा को बहकाने का प्रयास करता है;''क्या सच है कि परमेश्वर ने कहा तुम इस वाटिका के किसी पेड़ का फल न खाना?''[7] यहाँ पर शैतान हव्वा को वादविवाद करने और परमेश्वर के वचन की यथार्थता पर संदेह करने के लिए प्रेरित कर रहा है. वादविवाद और चतुराई के क्षेत्र में हव्वा का शैतान से कोई मुकावला नहीं हो सकता है. इसके साथ धोख़े और अन्धकार के हथियारों के विषय में अज्ञान, यदि वादविवाद में हिस्सा लेने की इच्छा ज़ाहिर करते हुए हव्वा अपना मुँह खोल दे तो संघर्ष विनाशक किन्तु बहुत ही संक्षिप्त ही होगा.

''वाटिका के वृक्षों के फल हम खा सकते हैं, पर जो वृक्ष वाटिका के बीच में है, उसके फल के विषय में परमेश्वर ने कहा है कि न तो तुम उसे खाना और न उसको छूना, नहीं तो मर जाओगे.''[8] हव्वा ने परमेश्वर द्वारा बोले गये शब्दों को दोहराते हुए चुनौती को स्वीकार कर लिया, किन्तु वह अब बड़ी परेशानी में फंस गई. उसकी अपनी जिज्ञासा ने शैतान की चुनौती के साथ मिलकर उसे शैतान के अगले वाक्य का सामना करने के लिए उसे असक्षम पाया. ''तुम निश्चय न मरोगे.''[9]

क्या आपने किसी के साथ ''मित्रता भरी'' वादविवाद प्रतियोगिता में भाग लिया है जिसमें बात-चीत तब तक आपके नियंत्रण में थी जब तक आपके विरोधी ने आपके सामने ''बायें मैदान'' से नहीं फेंक दिया? कुछ ऐसा जिसकी आपने कल्पना नहीं की थी, कुछ ऐसा जैसे कि आपके दिमाग़ में भली प्रकार से घूमते हुई घिन्नी में मानों किसी ने पाना फेंककर उसे जाम कर दिया हो? ऐसा नहीं कि जो कुछ उन्होंने कहा वह कोई बहुत गंभीर या ज्ञानवर्धक था, परन्तु ऐसा जिसकी आपने उनसे अपेक्षा नहीं की थी. वे ऐसे शब्दों को ऐसे साहस और ऐसे दो टूक कह देंगे, यह बात कभी आपने कल्पना भी नहीं की थी.

शैतान ने जब देखा कि उसने अपने शिकार को फंसा लिया है तो उसने विनाश करने वाला अपना अचूक हथियार इस्तेमाल किया.'' ...वरन् परमेश्वर आप जानता है कि जिस दिन उसका फल खाओगे उसी दिन तुम्हारी आँखें खुल जाएँगी, और तुम भले-बुरे का ज्ञान पाकर परमेश्वर के तुल्य हो जाओगे.''[10]
ये कुछ आयतें ऐसी हैं जैसे कि आप देहात के किसी कस्बे से ग़ुजरते समय आपके सामने आयें और आप भूल जाएँ. शैतान ने यहाँ पर हव्वा का जिस संकल्पना से परिचय कराया है इसमें उस श्राप-पहचान के लिए संघर्ष के बीच पाये जाते हैं जिसने आदम की संतानों को पीड़ित किया हुआ है. एक ऐसी संकल्पना जो आज़ाद करने वाली तो लगती है परन्तु उसमें ऐसा सार पाया जाता है जो मानवीय आत्मा को ग़ुलाम

बनाकर दु:ख और अंधकार के बंधन में बाँध लेता है. क्या यह बात बढ़ा-चढ़ा कर की गई लगती है? मेरे साथ बने रहिए जब मैं संकल्पना को उधेड़ता हूँ कि *''तुम निश्चय न मरोगे''* और इसके फल और तंग करने वाले प्रश्न ''क्या कोई मेरी परवाह करता है?'' और ''क्या मैं इस लायक हूँ कि मुझे कोई प्रेम करे?'' के संबंध में इसके असर को देखते हैं.

मुझे याद है जब मैं आठ वर्ष का था, मेरी बहन को एक गुड़िया मिली जो रोती, हँसती और दूध भी पी सकती थी. आपको केवल इतना करना था कि इसकी पीठ में कुछ सेल लगा दीजिए और फिर यह अपना काम करने लगती थी. यह मेरी बहन का घंटों तक मनोरंजन करती थी. जब मैं इसके रोने से तंग आ गया तो मैं इस गुड़िया को कुत्तों के सामने फेंक देना चाहता था, लेकिन मैं ऐसा करके अपनी बहन को एक घंटे तक रोता हुआ देखना नहीं चाहता था. इस बच्ची में जीवन था, बस आपके इसमें केवल दो सेल लगाने होते थे, और शैतान भी यह विचार हव्वा के दिमाग़ में फिट करना चाह रहा था. हव्वा, तुम्हें चिन्ता करने की ज़रूरत नहीं है दूसरे लोग क्या कहते हैं, तुम्हारे अपने ही अन्दर जीवन है. तुम जैसा चाहो कर सकती हो और तुम्हें कोई नुकसान नहीं होगा क्योंकि तुम्हारे ही अन्दर जीवन है. तुम तब तक निश्चय न मरोगी जब तक तुम यहाँ वापस इस पेड़ के पास आकर अपनी बैट्री को रि-चार्ज करती रहोगी, तुम्हें कोई नुकसान नहीं होगा.

क्या आपने कभी कल्पना की है कि 18 महीने का बच्चा अपने माता-पिता से ऐसा कहेगा,''मैं सोचता हूँ कि अब मैं अपने आप को संभाल सकता हूँ, मैं पिछवाड़े में लगे हुए बौने बाग़ से बातें कर रहा था, उसने मुझे बताया कि मेरे अन्दर ही एक शक्ति है जो मुझे जीवित रखेगी और मेरी सभी ज़रूरतों को पूरा करेगी, इसलिए आप लोगों की सब मदद के लिए आपका बहुत बहुत धन्यवाद, और हो सकता है कि हम किसी न किसी दिन फिर कहीं फिर मिलेंगे.''अदन की वाटिका में आदम और हव्वा के साथ बिल्कुल ऐसा ही हुआ. यह विचारधारा कि *'तुम निश्चय न मरोगे'* ने उनके स्वर्गीय पिता पर पूरी निर्भरता की सच्चाई को ही समाप्त कर दिया है. इसने तो उनकी व्यक्तिगत पहिचान की नींव पर ही वार किया है. इसने उनकी पहिचान की समझ और परमेश्वर की संतान के रूप में उनके महत्व ही भ्रमित कर दिया. आदम और हव्वा सीधे-सीधे अपनी ग़लती का अहसास करके अपने स्वर्गीय पिता पर पूरी तरह से निर्भर होने की भावना पर वापस क्यों नहीं आ सके? काश यह इतना ही आसान होता, किन्तु *तुम निश्चय न मरोगे* क्योंकि तुम्हारे अन्दर ही शक्ति है' की धारणा को एक क्षण मात्र के लिए स्वीकार करने का परिणाम ही ऐसा है जो आपकी उस आशीषित दशा में पुन: वापस आने के मार्ग में बाधा बन जाता है. इस विषय में हम फिर बात करेंगे, परन्तु अभी हम भाग्य बदलने वाले उस पेड़ के पास के पास चलते हैं.
शैतान की सलाह पर ध्यान दीजिए कि जब वे इस फल को खाएँगे, किसी न किसी रूप में उनकी आँखें खुल जाएँगी और वे अपने अस्तित्व की एक ऊँची दशा में पहुँच जाएँगे. यहाँ पर निष्कर्ष केवल

यही नहीं है कि तुम्हारे अन्दर ही शक्ति है परन्तु संसार की वस्तुओं में भी शक्ति है जो यदि एक बार आपको मिल जाए तो आपको और अधिक शक्तिशाली बना सकती है. सांसारिक वस्तुएँ के संसार में आपका स्वागत है. उत्पत्ति 3:4,5 में शैतान अपने काल्पनिक संसार के लिए आदम और हव्वा का मन परिवर्तित करने के लिए पूरी तरह से प्रचार के मूड में है. वह एक ऐसा साम्राज्य पेश करता है जिसमें इसे स्वीकार करने वालों को शक्ति और संतुष्टि देने का वायदा किया गया है. यह साम्राज्य इन दो मुख्य सिद्धान्तों पर निर्भर है:

1. आपके अन्दर ही ऐसी शक्ति है कि आपको किसी बाहरी संरक्षक या अधिकार पर निर्भर रहने की कोई आवश्यकता नहीं है.

2. हमारे वातावरण में ही ऐसे लोग और वस्तुएँ हैं जो यदि आपको मिल जाएँ या आप उनसे जुड़ जाएँ तो वे आपको और अधिक बुद्धिमान बना सकते हैं, आपके जीवन को अधिक भरपूरी दे सकते हैं.

ज्ञान के इस पेड़ के द्वारा शैतान आदम और हव्वा को बैट्री से चलने वाला जीवन पेश कर रहा था, एक ऐसा जीवन जिसमें किसी बाहरी अधिकार या संरक्षक की आवश्यकता ही न हो, इसीलिए इस अध्याय का नाम है– ड्यूरासेल पेड़. शैतान हम से कहेगा कि यदि हम उसके जीवन दर्शन का पालन करें तो हमारी देह की बैट्री हमें हमेशा तक चलाती रहेगी.

यह बात याद रखना महत्वपूर्ण है कि जब आदम और हव्वा में उस पेड़ का फल खाया तो उस फल के भीतर ऐसा कुछ नहीं था जिसने उन्हें भयभीत, पापी और विद्रोही बना दिया. बाइबल हमें बताती है कि वह फल खाने के लिए भला था.[11] विष तो उन शब्दों में था जो शैतान ने हव्वा से बोले. विष तो इस साम्राज्य के सिद्धान्तों में है. कुछ लोग सवाल उठाते हैं,“ फल तो आदम और हव्वा ने खाया लेकिन तक्लीफ मुझे क्यों होती है? वह फल मैंने तो नहीं खाया था? मैंने तो उस पेड़ में से नहीं खाया?” सच्चाई यह है कि जब कभी भी हम परमेश्वर के ऊपर हमारी निर्भरता से हट कर व्यक्तिगत निर्णय लेते हैं, तो हम भी ठीक उसी प्रकार से जैसे कि आदम और हव्वा ने उस फल का खाया था, फल खाते हैं क्योंकि हमने शैतान के साम्राज्य के सिद्धान्त को निगल लिया है. वास्तव में हम सीखेंगे कि वास्तव में हम प्रतिदिन उस पेड़ के फल को खाते हैं और इसके परिणाम स्वरूप हमें भयानक अपच से पीड़ित हैं.

यह विचार कि हम परमेश्वर से दूर होकर भी जी सकते हैं, बहुत से लोगों को इसमें कोई बुराई दिखाई न दे, लेकिन अगले अध्याय में हम सीखेंगे कि इस प्रकार की सोच आत्महत्या करने के विचार के समान है.

2. जीवन की नींव

दिन भर कठिन परिश्रम किया था. बजट–वास्तव में नव्वे बजट थे जिन्हें एक बजट में मिलाना था उसे तैयार करने के हम अन्तिम चरण में थे. यह एक संवेदनशील प्रक्रिया थी, सभी महत्वाँकाक्षी प्रबन्धक, जो कुछ अधिक की चाह कर रहे थे, आशा कर रहे थे और यहाँ तक कि माँग कर रहे थे उनकी उपलब्ध आय को उनके लक्ष्य को ध्यान में रखकर तैयार किया जा रहा था. मेरा दिमाग़ इन सब आँकड़ों को सोच और विचार से अलग करने का व्यर्थ प्रयास करने में लगा हुआ था कि अचानक फोन की घन्टी बजने लगी. ''हैल्लो... पापा बोल रहा हूँ, बेटा.'' पापा की बातों से ऐसा लग रहा था कि उनके कंधों पर कई इमारतों का बोझ हो. ''क्या हुआ पापा?'' ''मम्मी एक गंभीर कार दुर्घटना का शिकार हो गईं थीं.'' उन शब्दों ने मानो मेरे ऊपर एक घन से वार कर दिया था. मैं तुरन्त ही कांपने लगा और मेरी हृदय गति एक ही क्षण में दोगुनी हो गयी. मेरी माँसपेशियाँ तन गईं क्योंकि मेरे पूरे शरीर में अधिवृक्क रस दौड़ने लगा. ''दुर्घटना?'' फोन को कस कर पकड़ने का प्रयास करते हुए मैं फोन में लगभग फुसफुसाया था.'' कितना गंभीर?...''
''काफी गंभीर है, बेटा.''

उस क्षण मैं चाहता था कि मैं उस फोन के द्वारा ही अपने पिता के गले से लिपट जाना चाहता था, किन्तु सड़क मार्ग से वे मुझसे 12 घन्टे के दूरी पर थे और हवाई जहाज से जाने के लिए मुझे अगली सुबह तक प्रतीक्षा करनी थी. जब मैंने फोन रखा, मेरा दिमाग़ एक ही क्षण में भय, सदमे और संवेदनशून्यता से चक्कर खा रहा था. उसी पल मैंने यीशु को याद किया और मैं अपने घुटनों के बल गिर गया और रोने लगा, ''ओह यीशु– आप प्लीज़ उसे मरने मत देना.'' मैंने अपनी बाइबल खोली और मैं तब तक प्रार्थना करता रहा जब तक मेरा मन पूरी तरह से स्वर्गीय शान्ति से नहीं भर गया. फिर मेरा दिमाग़ जीवन की दुनियावी वस्तुओं में भटकने लगा और शीघ्र ही मेरा मन फिर से भय, निराशा और सदमे से कांपने लगा. एक बार फिर से मैं अपने घुटनों पर झुक कर प्रार्थना करने लगा और मैंने यीशु का दामन पकड़ लिया.

मम्मी संगीत सिखाने की क्लास लेने के लिए कार से जा रहीं थीं. वे डबल लेन के एक हाइवे पर थीं और दोनों के बीच में दस मीटर की पट्टी थी जिसमें छोटे–छोटे पेड़ पौधे लगे हुए थे. वे एक पहाड़ की चोटी से निकलते हुए एक दूसरी कार को ओवर टेक कर रहीं थीं, उन्हें बस इतना ही याद है. सामने से आ रही एक कार ने नियंत्रण खो दिया और दोनों के बीच में बने हुए दस मीटर के गैप को क्रॉस करके मम्मी की कार में सामने से आकर टक्कर मार दी. इससे मम्मी की कार का इंजिन फाइरवॉल को तोड़ते हुए अन्दर

धँस गया जिससे लोहे का स्टियरिंग व्हील मम्मी के चेहर में धँस गया. किसी अनजान कारणों से, उस पल सीट टूट गई, और मैं बहुत धन्यवादी हूँ कि सीट टूट गई नहीं वह तुरन्त ही मर जातीं. जब वे उन्हें अस्पताल ले गये, उनके हाथ पैर टूट चुके थे और वाईं ओर का उनका चेहरा चूर-चूर हो गया था.

जब मेरी माँ को अस्पताल में लाया गया तो वहाँ एक डॉक्टर था जो अपनी शिफ्ट को समाप्त करके जाने ही वाला था. जब उसने मेरी माँ को देखा तो तुरन्त ही काम पर लग गया. उसने मेरी माँ के जीवन को बचाने के लिए आठ घण्टे तक संघर्ष किया और अन्ततः उनकी दशा स्थिर हो गयी. वास्तव में उस डॉक्टर का धन्यवाद करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं, यहाँ तक कि अभी भी उस पल को याद करके मेरी आँखों में आँसू आ जाते हैं. उस इंसान ने पूरे 16 घन्टे तक काम किया और फिर सुबह के तीन बजे मेरे पापा को फोन करके यह सूचना दी कि मेरी माँ की स्थिति गंभीर किन्तु स्थिर थी. मैं अभी भी शक्ति, दक्षता और दयालुता के चमकते हुए प्रतीक उस डॉक्टर के प्रति अत्यधिक कृतज्ञ हूँ.

कुछ दिन के बाद मेरी पत्नी और मैं उस गहन चिकित्सा कक्ष में थे जिसमें मम्मी थीं. उन्हें जीवित देखकर मैं बहुत खुश था. जिस गति से वे स्वस्थ लाभ प्राप्त कर रहीं थीं उससे डॉक्टर्स आश्चर्य चकित थे. हमें बताया गया था कि अब वे कभी पियानो नहीं बजा पाएँगी और शायद ही कभी फिर चल नहीं पाएँगी. यह एक बहुत भारी धक्का था, किन्तु वह अभी हमारे पास थीं और मैं इसके लिए आभारी था. लॉरेल मम्मी की मेडिकल डायरी में लिखी गईं बातों को देख रही थी और उसने मुझे अपने पास बुलाने के लिए संकेत किया. इसमें साफ साफ लिखा था कि किन बिन्दुओं पर वे माँ को खो सकते थे और फिर अचानक उनकी जीवन शक्ति वापस आ गई और उनकी दशा स्थिर हो गई. यह तो समझ में नहीं आया कि यह सब कैसे हुआ परन्तु मैं जानता हूँ कि मेरे स्वर्गीय पिता ने अपने पुत्र यीशु को भेज दिया कि वह मेरी माँ के जीवन को संभाले. जीवन देने वाले यीशु की शक्ति के लिए मैं अत्यन्त धन्यवादी हूँ. आज मम्मी चलती -फिरती हैं और जब कभी वे पियानो बजाती हैं, तो मेरी माँ को निश्चित मृत्यु से बचाने के लिए मेरा हृदय यीशु के लिए एक गहरी कृतज्ञता से भर जाता है.

जब जीवन के स्रोत को समझने की बात आती है, बाइबल हमें किसी अंधेरे में नहीं रखती है. यीशु के बारे में हम कुलुस्सियों की पत्री में ये पढ़ते हैं:

क्योंकि उसी में सारी वस्तुओं की सृष्टि हुई, स्वर्ग की हों अथवा पृथ्वी की, देखी या अनदेखी, क्या सिंहासन, क्या प्रभुताएँ क्या प्रधानताएँ, क्या अधिकार, सारी वस्तुएँ उसी के लिए और उसी के द्वारा और उसी के लिए सृजी गई हैं. वही सब वस्तुओं में प्रथम है सब वस्तुएँ उसी में स्थिर रहती हैं.

कुलुस्सियों 1:16,17

प्रत्येक वह वस्तु जो हम देख सकते हैं या अनुभव करते हैं, और यहाँ तक वे वस्तुएँ भी जो हमें दिखाई नहीं देती हैं परन्तु पाई जाती हैं वे सब यीशु मसीह के द्वारा संभाली जाती हैं. [12] अन्तिम

वाक्य के शब्दों पर सावधानी से ध्यान दीजिए. और *उसी में* सब वस्तुएँ स्थिर रहती हैं. वचन सफाई से बताता है कि परमेश्वर के पुत्र के माध्यम से प्राप्त होने वाली जीवन शक्ति ही वह शक्ति है जो पूरे विश्व को संभालती है. प्रेरितों के काम की पुस्तक में पौलुस इस बात को इस प्रकार से कहता है:

जिस परमेश्वर ने पृथ्वी और उसकी सब वस्तुओं को बनाया, वह स्वर्ग और पृथ्वी का स्वामी होकर हाथ के बनाए हुए मन्दिरों में नहीं रहता. न किसी वस्तु की आवश्यकता के कारण मनुष्यों के हाथों की सेवा लेता है, क्योंकि वह स्वयं ही सब को जीवन और श्वांस और सब कुछ देता है. उसने एक ही मूल से मनुष्यों की सब जातियाँ सारी पृथ्वी पर रहने के लिए बनाई हैं; और उनके ठहराए हुए समय और निवास की सीमाओं को इसलिए बाँधा है कि वे परमेश्वर को ढूँढ़ें, कदापि उसे टटोलकर पाएँ, तौभी वह हम में से किसी से दूर नहीं. क्योंकि हम उसी में जीवित रहते, और चलते-फिरते और स्थिर रहते हैं; जैसा कि तुम्हारे कितने कवियों ने भी कहा है,'हम तो उसी के वंश हैं.' प्रेरितों के काम 17:24-28.

यहाँ पर हम एक परमेश्वर को देखते हैं जो हमारे जीवन में घनिष्टता से शामिल है. पौलुस अपनी बात की शुरूआत उस बड़ी तस्वीर से करते हुए समाप्ति व्यक्तिगत घनिष्ट रिश्ते से करता है:

1. उसने प्रत्येक जाति के लिए समय और स्थान निर्धारित किये हैं.
2. वह हम में से किसी से दूर नहीं है.
3. ... और अन्त में पौलुस विषय के सबसे मुख्य भाग पर आते हुए कहता है कि हम उसी में जीवित रहते, और चलते-फिरते हैं.

यदि हम उसी में जीवित रहते हैं तब इसका सीधा सा मतलब यह हुआ कि हम उसके बिना जीवित नहीं रह सकते हैं. जैसे कि स्वर्गीय प्रतिनिधि यीशु मसीह ने कहा है,'' ...मुझसे अलग होकर तुम कुछ नहीं कर सकते''[13] कृपया इसे समझने का प्रयास कीजिए कि उसके बिना हम शारीरिक, मानसिक और आत्मिक रूप से कुछ भी नहीं कर सकते हैं. [14]_ठीक जैसे एक छोटा बालक अपने माता-पिता पर निर्भर रहता है ठीक वैसे हम भी प्रत्येक वस्तु के लिए पूर्ण रूप और सम्पूर्ण रूप से केवल परमेश्वर और उसके पुत्र के ऊपर ही निर्भर हैं.

इस बिन्दु को मुझे विस्तार से बताने दीजिए क्योंकि इसका संबन्ध बहुत सी बातों से है. हमारे शरीर के अद्भुत अंग हृदय पर ध्यान दीजिए. यह दशकों तक एक पम्प के समान कार्य करते हुए हमारे पूरे शरीर में रक्त पहुँचाने के लिए कार्य करता रहता है. हृदय के विषय में ऐसा क्या खास है कि हृदय के धड़कने के काम को किसी बाहरी वस्तु से सहायता प्राप्त होती हुई नज़र नहीं आती है.

तंत्रिकातंत्र से कोई मदद बिना प्राप्त किये ही हृदय की माँसपेशियाँ सिकुड़ और फैल सकती हैं. इसके तंत्र में विनियम करने वाला एक स्वभाविक सिस्टम पाया जाता है. शरीर विज्ञान की पुस्तक इसके बारे में यह

बताती है,''विनियमन तंत्र एक विशेष प्रकार के ऊतकों से बना होता है जो विद्युत प्रवाह को पैदा करता और उसका वितरण करता है जो ह्दय की पेशियों को सिकुड़ने में सहायता करती है.''[15] ये मांसपेशियाँ एक विशेष प्रकार की होती हैं क्योंकि वे विद्युत प्रवाह को पैदा करती हैं जो तंत्रिका तंत्र में से नहीं आता है. यह पूरी तरह से विचित्र है क्योंकि शरीर विज्ञान की किताब कहीं भी इस प्रश्न को संबोधित नहीं करती हैं कि ह्दय की ये माँसपेशियाँ किस प्रकार से यह विद्युत प्रवाह पैदा करती हैं जिसकी मदद से ह्दय सिकुड़ता और फैलता है. इसे एक विशेष प्रकार का और स्वभाविक कहा जाता है, किन्तु यह कैसे करता है और यह शक्ति कहाँ से आती है?

सड़कें यहीं से विभाजित होती हैं. बाइबल बताती है कि यह शक्ति सीधे परमेश्वर के पास से आती है, ''हम उसी में जीवित रहते हैं'' प्रेरितों के काम 17:28. परन्तु शैतान बताता है कि यह शक्ति हमारे अपने अन्दर बसी हुई है; यह जीववैज्ञानिक प्रक्रिया का हिस्सा है जो हमारा अपना ही है,'' तुम निश्चय न मरोगे.'' उत्पत्ति 3:4. यह एक आधारभूति विषय है. यह तो इस पार या उस पार की बात है. अनेक ऐसे मसीही लोग हैं जो बीच की राह निकालने की कोशिश करते हैं और कहते हैं,'' हाँ, परमेश्वर ने सब कुछ बनाया, परन्तु यह एक प्रकार की चाबी वाली घड़ी है. परमेश्वर ने इसे चलाया और छोड़ दिया.'' जैसे कि मानो परमेश्वर ने ड्यूरासेल बैट्री का निर्माण किया और उसे हमारे अन्दर फिक्स कर दिया. बाइबल इस विचार का समर्थन नहीं करती है. हम बड़ी घनिष्टता के साथ उससे जुड़े हुए हैं और प्रत्येक दिन के प्रत्येक घन्टे, प्रत्येक घन्टे के प्रत्येक मिनट और प्रत्येक मिनट के प्रत्येक सेकेन्ड और प्रत्येक सेकेन्ड के प्रत्येक मिलीसेकेन्ड प्रत्येक बात के लिए पूरी तरह से उसी पर निर्भर हैं.[16] परमेश्वर सक्रिय रूप से, पूरी तरह से जान बूझ कर और प्रेम से हमें वह विद्युत धारा प्रदान कर रहा है जो हमारे ह्दय की धड़कन को बरकरार रखता है. इस वास्तविकता के विषय में कुछ ऐसी बात है जो मानवीय रूप में हमें विचलित कर सकती है, लेकिन उसकी चर्चा हम बाद में करेंगे. तथ्य यह है कि अभी हमें यह मुद्दा भली प्रकार से समझ लेना चाहिए. हम या तो यह विश्वास करें कि,''हम उसी में चलते-फिरते और जीवित रहते हैं'' या हम यह विश्वास करें,''निश्चय ही हम कभी न मरेंगे.'' यहाँ पर बीच की राह संभव नहीं है.

अभी तो हमने मानव के केवल शारीरिक अस्तित्व की बात की है, यह विषय बहुत से लोगों के लिए चुनौतीपूर्ण हो सकता है. अब हमें इसके मानसिक और आत्मिक पहलू पर ग़ौर करना चाहिए. निम्नलिखित बातों पर ध्यान दें:

ताकि उनके मनों में शान्ति हो और वे प्रेम से आपस में गठे रहें, और वे पूरी समझ का सारा धन प्राप्त करें, और परमेश्वर पिता के भेद को अर्थात् मसीह को पहचान लें . जिसमें बुद्धि और ज्ञान के सारे भण्डार छिपे हुए हैं... कुलुस्सियों 2:2,3.

फिर यहोवा ने मूसा से कहा, ''सुन, मैं ऊरी के पुत्र बसलेल को, जो हूर का पोता और यहूदा के गोत्र का है, नाम लेकर बुलाता हूँ. और उसको परमेश्वर की आत्मा से जो बुद्धि, प्रवीणता, ज्ञान और सब

प्रकार के कार्यों की समझ देनेवाली आत्मा है, परिपूर्ण करता हूँ, जिससे वह कारीगरी के कार्य बुद्धि से निकाल निकालकर सब भाँति की बनावट में, अर्थात् सोने, चाँदी, और पीतल में और जड़ने के लिए मणि काटने में, और लकड़ी पर नक्काशी का काम करे. निर्गमन 31:1-5.

बाइबल परमेश्वर को सब ज्ञान और बुद्धि के स्रोत के रूप में प्रकट करती है. कुलुस्सियों 2:2,3 इस अवधारणा को चुनौती देती है कि मानव जाति अपने अन्दर बुद्धि और ज्ञान का विकास कर सकती है. सब ज्ञान और सब बुद्धि परमेश्वर की ओर से आती है. इसका एक उदाहरण निर्गमन 31:1-5 में देखा जा सकता है. यहाँ पर हम परमेश्वर को एक मनुष्य को कारीगरी के काम करने के लिए बुद्धि देते हुए देखते हैं. यह रुचिकर है कि हम प्राय: उन लोगों को ''गिफ्टिग/प्रतिभासंपन्न'' कहते हैं जो बड़ी योग्यता और प्रतिभा का प्रदर्शन करते हैं. वास्तव में उन्हें यह प्रतिभा परमेश्वर से प्राप्त हुई है.

आइये हम अपने आपको एक प्रतियोगिता के बीच में लेकर चलते हैं. प्रतिभावान एक जवान महिला को स्टेज पर रखे हुए एक विशाल पियानो पर अपनी उंगलियाँ बड़ी कारीगरी से ऊपर नीचे घुमाते हए देखकर श्रोतागण मंत्रमुग्ध हैं. उसके हाथ में जादू है-वह पियानो में से वास्तव में गीत निकालने में सक्षम है. फिर वह उत्कर्ष पर लेकर जाती है और हम समझ सकते हैं कि अन्त निकट है. हम चाहते हैं कि वह बजाती रहे-परन्तु गीत समाप्त हो जाता है और भीड़ उसके जोश और शान से भरी प्रस्तुति से अचंभित होकर तालियों की गड़गडाहट के साथ झूम उठती है. वह युवती झुकती और तारीफ की सुगन्ध को पीती है और स्टेज से चली जाती है.

आइये थोड़ा से पीछे चलें क्योंकि इस तरह के आम दृश्यों में कुछ खास बात है. प्रत्येक बार जब ऐसा होता है तो श्रोताओं को तालियों की गड़गड़ाहट के साथ यह गाना चाहिए, '' उस परमेश्वर की महिमा हो जिसके पास से सभी आशीषें आती हैं'' या ऐसा ही कुछ और जो परमेश्वर की महिमा से जुड़ा हो. प्रशंसा उस परमेश्वर की होनी चाहिए जिसने दक्षता और बुद्धिमानी और योग्यता प्रदान की है. पियानो बजाने वाली का हृदय उस प्रतिभा के लिए जो उसे दी गई है, परमेश्वर के लिए प्रेम और कृतज्ञता से भर जाना चाहिए, लेकिन ऐसा शायद ही कभी होता है. यदि हम वास्तव में ऐसा करते तो, सफलता से प्रफुल्लित नहीं होते या असफलता से निराश नहीं होते क्योंकि बजाने की योग्यता हमारे अन्दर से पैदा नहीं होती है, और यदि यह हमारे अन्दर से पैदा नहीं होती तो सफलता की स्थिति में न तो हम इसका श्रेय ले सकते हैं या जब हम असफल हो जाते हैं तो न ही हम इससे निराश होते.

ड्यूरासेल का श्राप पेड़ का श्राप यहीं पर पाया जाता है. कल्पना करें कि यह पेड़ एक चोटी के किनारे पर लगा हुआ है. जब हम सफल होते हैं तो हम यह विश्वास करते हुए एक प्रकार की स्वतंत्रता का अनुभव करते हैं कि हमने ही ऐसी सफलता को पैदा किया है जिसकी तुलना पहाड़ की चोटी से उस दशा में स्वतंत्रता के साथ बग्गी रस्सी से [17] छलाँग लगाने से की जा सकती है जबकि व्यक्ति के क़मर में एक रस्सी बांध कर पेड़ की जड़ से बाँध दी गई हो. फिर जब असफलता आती है, तो छलाँग लगाने वाली रस्सी गुलेल में बदल जाती है और अत्यंत तीव्र गति से हमें वापस उसी स्थान पर पटक देती है जहाँ से शुरूआत होती है. अपने अन्दर शक्ति के झूठ में जितने गहरे तक हम गोता लगाते हैं, असफलता की दशा

में उसी तीव्र गति से नकारात्मक प्रभाव पैदा होता है. ड्यूरासेल के श्राप से बचने की कोई राह नज़र नहीं आती है. एक बार जब आपने इसका फल चख़ लिया है कि रस्सी आपके पाँव में कसकर बंधी हुई है, इसके बाद जो होगा उसे तो टाला नहीं जा सकता. इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं है कि,"पूरे संसार में अवसाद अपंगता का मुख्य कारण है."[18] ड्यूरासेल पेड़ एक बड़े पहाड़ की चोटी पर खड़ा हुआ एक पेड़ है. हमारे प्रत्येक पाँव से एक रस्सी कसकर बाँधी हुई है और इस पहाड़ी से झूठ की दिशा में हम जितनी अधिक ऊँची छलाँग लगाते हैं, असफलता की दशा में हम उतनी ही कठोरता के साथ उस पेड़ की जड़ के पास वापस फेंक दिये जाते हैं. आपने अपने जीवन में अब तक कितनी टक्करें पहले ही खा चुके हैं? कितनी टक्करें आप और बर्दास्त कर सकते हैं? यह सोचने योग्य बात है.

आइए अब अगले स्तर पर चलते हैं. हमने शारीरिक और मानसिक निर्भरता के प्रभाव को देखा है परन्तु नैतिक और आत्मिक निर्भरता के विषय क्या. यह एक चुनौतीपूर्ण मुद्दा है, इसलिए अपनी सीटबैल्ट बाँध लीजिए, यह सवारी ऊबड़ खाबड़ हो सकती है.

बाइबल हमें बताती है कि "परमेश्वर प्रेम है" 1 यूहन्ना 4:8. यह बताती है कि परमेश्वर प्रेम का स्रोत है. यह परमेश्वर को आशा का परमेश्वर भी कहती है. रोमियों 15:13. गलातियों में इस विचार को काफी अधिक विस्तार दिया गया है:

परन्तु आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, शान्ति, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता और संयम है; ऐसे ऐसे कामों के विरुद्ध में कोई भी व्यवस्था नहीं. गलातियों 5:22-23

इस पद का आशय बहुत उत्तेजना भरा है. एक मिनट के लिए हम इसका विश्लेषण करते हैं. ये सब गुण पवित्रात्मा को प्राप्त करने के बाद प्राप्त होते हैं. इसका सीधा सा अर्थ यह है कि पवित्रात्मा पाये बिना आप प्रेम, आनन्द, शान्ति, धीर करुणा आदि प्राप्त नहीं कर सकते हैं. एक दिन जब मैं एक झील के किनारे बने हुए पार्क में टहलते समय मैं इस बाइबल सत्य के विषय में विचार कर रहा था. वातावरण मधुर और शान्त था. अचानक मैंने ध्यान दिया कि एक माँ अपनी बेटी को एक झूले पर झूला झुला रही थी. वे दोनो हँस रहीं थी और निश्चय ही वे दोनों एक दूसरी की संगति का आनन्द ले रहीं थीं. यह माँ जो प्यार अपनी बेटी के लिए अनुभव कर रही थी, परमेश्वर ने दिया था. अपनी बेटी के प्रति प्रेमी, दयालु और सुशील होने का विचार माँ के हृदय में नहीं किन्तु परमेश्वर के हृदय में पैदा हुआ था, और माँ को दिया गया था क्योंकि माँ ने इसे प्रकट करने का चुनाव किया था, और अब यह माँ का प्रेम बन गया था. इस भाव से यह वास्तव में माँ का प्रेम नहीं है किन्तु परमेश्वर का प्रेम है जो माँ के द्वारा प्रकट होता है. वह प्रेम माँ का हिस्सा बन गया था क्योंकि उसे परमेश्वर के आत्मा को उत्तर दिया और इस प्रेम का प्रकट किया था. सच्चे अर्थों में माँ का बच्चों के लिए या पति और पत्नी के बीच में प्रेम नाम की कोई चीज़ नहीं है. बकवास? बाइबल का सिद्धान्त!

सेमिनार में प्रचार और उपदेश के दौरान मैंने इस विचार को अनेक बार पेश किया है, और यह देखना रुचिकर है कि सुनने वाले किस प्रकार से प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं. कुछ लोगों के चेहरे से ऐसा लगता है कि मानों मैंने मानवता के आधार पर ही हमला कर दिया हो. जो करोड़ों प्रेम गीत गाये गये हैं और जो अरबों प्रतिज्ञाएँ विवाह के समय पर की गईं कि,"मैं तुम से प्रेम करता हूँ और तुमसे सदा प्रेम करता

रहूँगा'', उनमें से एक प्रतिज्ञा पूरी नहीं की जा सकती जब तक परमेश्वर ग्रहण करने वाले हमारे मनों में अपना प्रेम न उंडेले. आइए प्रेम के इस गुण को बग्गी रस्सी के सिरे पर बाँध देते हैं. इतने अधिक लोग प्रेम से ''बाहर'' क्यों हो जाते हैं? वे लोग जो यह विश्वास करते हैं कि यह प्रेम हमारी अपनी आत्मा में ही पैदा हुआ था, एक दिन अचानक सुबह को उठकर उन्हें ऐसा लग सकता है कि अब उनके दिल में अपने जीवन साथी के लिए कोई प्रेम नहीं है. वे संदेह करने लगते हैं कि क्या यह रिश्ता अब उनके लिए उचित है भी या नहीं और प्राय: किसी और को तलाश करने लगते हैं जिसे देखकर उनके दिल में फिर से वही प्रेम पैदा हो जाए. ड्यूरासेल क्रेडिट कार्ड अपनी सीमा तक पहुँच गया है और अब भुगतान करने का समय आ गया है.

उस सच्चे इंसान का क्या जिसने दिल की पूरी सच्चाई के साथ वायदा किया था कि वह अपनी पत्नी से हमेशा प्रेम करता रहेगा, फिर अचानक एक दिन वह पाता है कि वह एक दूसरी औरत की ओर आकर्षित हो रहा है. शायद वह ऐसा महसूस नहीं करना चाहता है किन्तु वह मज़बूर है. फिर वह अपने साथी से दूरियाँ बनाने लगता है क्योंकि ऐसा करने के कारण उसका अपराध बोध उसे ऐसा विश्वास करने से रोकता है कि वह अभी प्रेम के योग्य है. उसने सोचा था कि वह अपने दिल से प्रेम के प्रवाह को बनाये रखेगा, किन्तु अब बग्गी रस्सी ने उसे ड्यूरासेल पेड़ की जड़ के पास पटक दिया है जहाँ से उसने शुरूआत की थी और उसका विवाह समाप्त हो जाता है. क्या इस बात से आश्चर्य होता है कि बहुत विवाहों में प्रेम की कल्पना करना कितना कठिन हो गया है?

उनके लिए जो सोचने लगे हैं कि उनका विवाह अब आगे बनाये रखने लाइक नहीं रहा है, याद रखें कि प्रेम केवल परमेश्वर के दिल में पैदा होता है और जो उससे माँगते हैं उनके लिए भरपूरी से उपलब्ध रहता है. यदि आपको लगता है कि आपके दिल में अपने जीवन साथी के लिए प्रेम समाप्त हो गया है, परमेश्वर से पुन: अपने जीवन साथी के लिए प्रेम माँगिये. परमेश्वर आपके दिल को पुन: प्रेम से भर देगा, उसने ऐसा करने का वायदा किया है.

3. परमेश्वर के दिल के क़रीब

हम स्वतंत्र राजमार्ग पर बहुत तेज़ी से दौड़ रहे थे. लॉरेल की जच्चा पीढ़ा अब बढ़ने लगी थी. हम किसी परेशानी में नहीं फंसना चाहते थे, इसलिए हम अस्पताल की ओर चल पड़े. यह सब कुछ बिल्कुल नया और उत्साहित करने वाला था, जल्दी ही हमारा पहला बच्चा हमारी गोद में होगा! हम प्रसव कक्ष की ओर बढ़े, नर्स ने हमारे ऊपर एक नज़र डाली और बोली,''तुम बहुत ख़ुश हो, तुम्हें टहलने के लिए जाना चाहिए.'' इस बात ने तो हमारे उत्साह पर पानी फेर दिया, पैंतालीस मिनट के बाद हम वापस आ गये और अब लॉरेल बिल्कुल भी नहीं मुस्करा रही थी. तीस मिनट और प्रतीक्षा करने के बाद हम प्रसव कक्ष में पहुँच गये. हाँ! प्रसव पीड़ा का वर्णन करने के लिए कोई दूसरा शब्द नहीं है. हमने उन सब विधियों को याद करने की कोशिश की जो हमने पैरेन्टल क्लासिस में सीखे थे लेकिन फिर भी केन्द्रित रहना कठिन हो रहा था. वे पीढ़ाएँ ऐसे उठ रहीं थीं जैसे कि मालगाड़ी सामने से टक्कर मार रही हो. जैसे ही आप एक से निपटते, दूसरा आपके ऊपर सवार था. अन्तत: ग्यारह घन्टे के बाद, हमें हमारा पहला बेटा, माइकल प्राप्त हो गया.

माइकल के पैदा होने के तुरन्त बाद की मेरी और लॉरेल के अनेक तस्वीरें हैं. यह तो अद्‌भुत है. वह ऐसी बैठकर मुस्करा रही है जैसे कि यह सब एक ही दिन में हो गया हो और मैं हवा में ऐसे झुका हुआ हूँ जैसे कि अभी गिर पड़ूँगा. उस दिन मेरे दिल में महिलाओं के लिए एक नये और शक्तिशाली सम्मान पैदा हो गया. महिलाओं मैं आपको बताना चाहता हूँ कि अपनी पत्नी को बच्चा पैदा करते हुए देखना एक बड़े परिश्रम का काम है. जब आप हँसना बन्द करोगे, तब मैं अपनी बात पूरी करूँगा. जिसे आप प्रेम करते हैं उसे पीढ़ा में देखने का मानसिक दबाव समझ से परे है. हम पुरुषों के पास प्राय: सभी समस्याओं के समाधान होते हैं, परन्तु इस समय मेरे पास मेरी पत्नी की परेशानी का कोई समाधान नहीं था, और इससे मुझे बड़ी पीढ़ा हुई थी. मैंने सिर्फ प्रार्थना की ''परमेश्वर, मैं जानता हूँ कि इस पीढ़ा का कोई तो कारण है, परन्तु अभी मैं इसे नहीं देख पा रहा हूँ.'' जब यह पीढ़ा बीत गई तो मैं बड़ा ख़ुश हुआ.

जब मैंने अपने बेटे को पहली बार अपनी गोद में लिया, यह अनन्त क्षण था. मैंने उसकी आँखों में देखा, और वह भी मेरी आँखों में देख रहा था, और यह क्षण अद्‌भुत था. जब मैं भय मिश्रित आनन्द और आश्चर्य से उसे देख रहा था, एक गहरे भय की भावना मेरे ऊपर छा गयी. मैं जानता था कि मेरे बेटे को मेरे ही समान स्वभाव प्राप्त हुआ था, एक स्वभाव हो अधिकार को चुनौती देता है, जो प्राकृतिक रूप से आज्ञापालन के बजाए विद्रोह की ओर आकर्षित होता है. मैं जानता था कि यह मेरा दायित्व था कि मैं उसकी इच्छा का मार्गदर्शन करूँ और अनुशासन और वास्तविक प्रेम और करुणा और निस्वार्थ भावना और आज्ञाकारिता का

जीवन बिताने के लिए उसे प्रशिक्षण दूँ. इसके बाद मैं सोचने लगा कि क्या वह मेरा मित्र बनेगा? कहीं ऐसा तो नहीं होगा कि हमारे बीच में कोई चीज़ आ जाए और हमें एक दूसरे से अलग कर दे? मैंने वहीं पर प्रार्थना की, ''ओह! स्वर्गीय पिता, मेरे बेटे और मेरे बीच में ऐसा कुछ मत आने देना. काश हम हमेशा निकट रहें, और मैं यह प्रार्थना करता हूँ कि वह यह जान लेगा कि मैं कौन हूँ और वह मेरा मित्र बनने का चुनाव करेगा.'' उस प्रार्थना की तीव्रता मेरे साथ बनी रहती है. मैं प्राय: इसे महसूस करता हूँ, और मैं अभी इस विश्वास के साथ कि परमेश्वर इसे वास्तविकता में बदलेगा, यह प्रार्थना करता हूँ.

चार वर्ष बाद ज़िंदगी के शोरग़ुल से दूर, एक शान्त सब्बत के दिन टहलते हुए मैं अपने प्रभु से बातें करने में समय बिता रहा था. मैं अपने स्वर्गीय पिता के बारे में, और मेरे लिए उसके प्रेम के बारे में और यह कि यह कितना अद्‌भुत है इसके बारे में सोच रहा था.अचानक से मेरे बेटे के जन्म के बारे में एक फिल्म सी मेरे दिमाग़ में चलने लगी, और मैंने अपनी तीव्र इच्छा से राहत पाई कि मैं कभी भी उससे अलग नहीं होऊँगा और वह मुझे पूरी तरह से जान जाएगा. दृश्य बदल गया और मैंने शान्तिपूर्ण वातावरण में अपने दिल की गइराईयों में एक आवाज़ सुनी जो कह रही थी, ''मैं भी तुम्हारे बारे में ऐसे ही महसूस करता हूँ.'' मैं यह तय नहीं कर पाया कि हसूँ या रोऊँ, और इसे स्वीकार करना मुझे काफी कठिन लगा. ''किन्तु प्रभु'' मैंने कहा, ''तू जानता है कि मैं कैसा हूँ, तू जानता है कि मैंने कितनी ग़लत बातें की और कही हैं,'' इस तरह से मैं उससे लड़ता हुआ आगे बढ़ने लगा. आप जानते हैं कि मुझे अपने ऊपर बड़ा आश्चर्य हो रहा था. मैं एक ऐसा मनुष्य हूँ जिसने मसीह को अपना व्यक्तिगत उद्धारकर्ता स्वीकार किया है और यह विश्वास करता है कि उसके सारे पाप क्षमा हो चुके हैं, परन्तु जब परमेश्वर ने मेरे निकट आकर मुझे बताया कि वह मेरे लिये किस प्रकार महसूस करता है, इसे स्वीकार करने में परेशानी हो रही थी. अन्तत: मैं रो पड़ा, '' ओह, धन्यवाद प्रभु, मुझसे प्रेम करने के लिए धन्यवाद और मेरे लिए सब कुछ करने के लिए धन्यवाद. मैं तुझसे बहुत प्रेम करता हूँ.'' मैंने बिल्कुल ऐसा महसूस किया कि मुझे परमेश्वर ने अपनी बाहों में लपेट लिया हो. मैं अत्यन्त प्रसन्न था. मैंने महसूस किया कि हमारा स्वर्गीय पिता हमसे इतना अधिक प्रेम करता है कि वह नहीं चाहता कि हमारे बीच में कोई ऐसी वस्तु आये जो हमें एक दूसरे से अलग कर दे. यह सोचकर उसे दु:ख होता है कि हम उससे दूर हो सकते हैं और ऐसा न हो इसलिए परमेश्वर वह सब कुछ कर रहा है जो वह कर सकता है.

इस अनुभव में परमेश्वर के राज्य का भाग होने के अद्‌भुत सौभाग्य मेरी समझ के अनुसार मेरे ऊपर प्रकट किये गये. इस अनुभव के तुरन्त बाद बाइबल के कुछ पदों के ऊपर मेरे ध्यान को खींचा गया जिन्होंने मेरी आँखों को खोल दिया और मैं परमेश्वर की और अधिक प्रशंसा करने लगा. मेरी प्रार्थना है कि इस पद का महत्व आपके दिल में जलने लगे और आपको कभी भी न छोड़े. यहाँ पर परमेश्वर के राज्य के लिए एक बहुत ही स्पष्ट खिड़की दी गई है:

क्या दो पैसे में पाँच गौरेयाँ नहीं बिकतीं? तौभी परमेश्वर उनमें से एक को भी नहीं भूलता. तुम्हारे सिर के सब बाल भी गिने हुए हैं, इसलिए डरो नहीं, तुम बहुत गौरेयों से बढ़कर हो. लूका 12:6,7

यीशु अपने राज्य के सिद्धान्तों को समझा रहा है. इन पदों में वह फार्मूला पाया जाता है जो लोगों को

परमेश्वर के राज्य में महत्वपूर्ण बनाता है. कौन सी बात उनको गिनती में लाती है, कौन सी बात उनके महत्व को बढ़ाती है, कौन सी बात उन्हें बहुमूल्य बनाती है? यदि ये मुद्दे आपके लिए महत्वपूर्ण नहीं हैं, तो ये पद ज़्यादा अर्थ नहीं रखते हैं, परन्तु मैंने अभी तक ऐसा कोई मनुष्य नहीं पाया जो इन बातों से संघर्ष न कर रहा हो.

यीशु मानवीय दृष्टि से दो गौरेंयों की क़ीमत बताता है. यहाँ पर पेन्नी(पैसे) के लिए वास्तविक शब्द *अस्सारियस* प्रयोग किया गया है. एक *अस्सारियस* एक औसत आदमी की एक दिन की मज़दूरी हुआ करती थी. दो दिन में आप पाँच गौरेये ख़रीद सकते थे. इस प्रकार सांसारिक भाव से इन गौरेयों की क़ीमत बहुत कम है. फिर यीशु एक भेद करते हुए कहता है, ''तौभी परमेश्वर उनमें से एक को भी नहीं भूलता है.'' यहाँ पर भेद यह है कि चूँकि परमेश्वर गौरेयों को याद रखता है, परमेश्वर के राज्य में वे बहुमूल्य हैं. गौरेयों की तुलना में परमेश्वर हमारे बारे में कितना सोचता है, दोनों बातों की तुलना करते हुए यीशु इस सिद्धान्त का विस्तार करता है''तुम्हारे सिर के सब बाल भी गिने हुए हैं.'' यदि यह बात महत्वपूर्ण नहीं है तो फिर कौन सी बात महत्वपूर्ण होगी? क्या आप किसी ऐसे इंसान को जानते हैं जो आपको इस हद तक जानना चाहता है कि वह इस बात का भी ख़्याल रखता है कि आपके सिर पर कुल कितने बाल हैं? अब निष्कर्ष पर आ जाइये,''डरो नहीं, तुम बहुत गौरेंयों से बढ़कर हो.'' क्या आप देख सकते हैं कि परमेश्वर के राज्य में किस प्रकार से महत्व और मूल्य प्राप्त किया जाता है? इसे प्राप्त करने के लिए सीधे साधे तरीके से यह महसूस करना होता है कि परमेश्वर प्रेम से हमारे बारे में निरतंर सोचता रहता है. निश्चय ही हम उसके मन में हैं. वह हमें जीवन दे रहा है, हमारे दिल को धड़का रहा है, और सक्रिय रूप से वह हमारे जीवन में अपना प्रेम उंडेल रहा है कि हम जीवन का आनन्द ले सकें और वह हमारी संतुष्टि, आनन्द और दूसरों की सेवा के लिए हमें मूल्यवान वरदान, प्रतिभाएँ और योग्यताएँ प्रदान करता है. परमेश्वर के राज्य का रहस्य, महत्व का रहस्य यही है. यही वह चाबी है जो ग़ुलाम बनाने वाले अयोग्यता और अवसाद के राज्य का पर्दाफाश करती है. क्या इस पर विश्वास करने का साहस आपके अन्दर है?जब हम इस बिन्दु पर हैं, क्या आप जानते हैं कि परमेश्वर आपके बारे में कितना सोचता है? यह सुनिये...

हे मेरे परमेश्वर यहोवा, तू ने बहुत से काम किये हैं! जो आश्चर्यकर्म और कल्पनाएँ तू हमारे लिये करता है, वे वहुत सी हैं; तेरे तुल्य कोई नहीं! मैं तो चाहता हूँ कि खोलकर उनकी चर्चा करूँ, परन्तु उनकी गिनती नहीं हो सकती . भजनसंहिता 40:5.

यदि हमारा मूल्य उन विचारों के द्वारा ठहराया जाता है जो परमेश्वर हमारे बारे में रखता है, तब ये पद यही बताते हैं कि हम अनमोल हैं, क्योंकि ये कहते हैं कि परमेश्वर के हमारे बारे में विचार और योजनाएँ इतनी अधिक हैं कि उनकी गिनती भी नहीं हो सकती है. अनमोल होने पर कैसा लगता है? परन्तु यह इस सत्य के ऊपर हमारे विश्वास कि चाहे हम भले हों या बुरे, परमेश्वर हमसे प्रेम करता है, होगा. यह एक अद्‌भुत समाचार है और मैं इसके लिए बहुत धन्यवादी हूँ. इसलिए जब कभी भी आपके महत्व के विषय में आपके मन में संदेह पैदा हो जाए, गौरेयों को देखिये और विश्वास कीजिए!

4. परिवार का साम्राज्य

यह उमस भरा गर्म दिन है. घर उत्सव के भावों से भरा हुआ है. किचिन में से आती हुई स्वादिष्ट ख़ुश्बू स्वाद कलिकाओं से एक वास्तविक दावत का वायदा कर रही है. जब पुराने ज़माने की कहानियाँ सुनाई जाती हैं तो हंसी के फव्वारे फूट पड़ते हैं. प्रेम और जोश से भरे हुए आश्चर्यपूर्ण वातावरण में उपहारों की अदला-बदली होती है. बच्चे दादी द्वारा बनाये गये पकवान खा रहे हैं जबकि दादाजी हमें यह बता रहे हैं कि हम कितने बड़े हो गये हैं. प्राय: हमारा यही अनुभव हुआ करता था जब हम अपने दादा-दादी से मुलाक़ात करने जाया करते थे. परिवार के लिए समय, आप कहाँ से संबंध रखते हो इस बात को पुन: दोहराने का समय, जो लोग आपसे प्रेम करते हैं, उनसे मिलने और उपहारों का आदान प्रदान करने का समय, एक साथ सहभागिता करने का एक महत्वपूर्ण और बहुमूल्य समय.

अयोग्यता और अवसाद के लगातार फैलते जबड़ों की पहुँच से बचाने के लिए एक परिवार की भावना से बढ़कर कुछ भी आवश्यक नहीं है. एक परिवार ही वह स्थान हो सकता है जहाँ पर आप जो हैं उसी आधार पर स्वीकार किये जा सकते हैं, जहाँ पर आपको कोई ढोंग करने की ज़रूरत नहीं है, जहाँ पर आपकी ग़लतियाँ माफ की जा सकती हैं और आप अपने लोगों के बीच में जीवन का आनन्द ले सकते हैं.

जब यीशु ने प्रार्थना करना सिखाया तो उसने हमारे सामने परमेश्वर के राज्य की महत्वपूर्ण तस्वीर पेश की. यीशु ने कहा, ''अत: तुम इस रीति से प्रार्थना किया करो: हे हमारे पिता, तू जो स्वर्ग में है...'' यीशु ने हमारे पहले संबोधन में यह कहते हुए प्रार्थना करने के लिए नहीं कहा,''हे हमारा परमेश्वर'' या ''हे हमारे राजा,'' या ''हे पवित्र राजाधिराज'', परन्तु ''हे हमारे पिता.''

परमेश्वर का राज्य एक परिवार के समान है

बहुत से लोगों को यह स्वभाविक सा लगता है, किन्तु परिवार के राज्य का अर्थ बहुत दूरगामी है. आने वाले अध्यायों में हम इन अर्थों के विषय में विस्तार से देखेंगे.

पहली बार पिता मानव जाति से मत्ती 3:17 में बात करता है. समय की शुरूआत से लेकर यीशु के बपतिस्में तक परमेश्वर ने हमसे अपने पुत्र के द्वारा बातें कीं हैं. यीशु ही वह यहोवा था जिसने लाल समुन्द्र

को दो भाग कर दिया था, यह वही था जो सिय्योन पर्वत से दहाड़ा, और यही वह यहोवा था जो यहोशू को प्रतिज्ञा के देश में लेकर गया. 1 कुरिन्थियों 10:1-4. मसीह के बपतिस्मे के समय , परमेश्वर का पुत्र इम्मानुएल-परमेश्वर हमारे साथ हमारे जैसा बन गया. इसलिए अब पिता पहली बार बोलता और उसके शब्दों में (सदैव के समान ही)गंभीर महत्व है क्योंकि यहाँ पर परमेश्वर अपने राज्य की आधारशिला रख रहा है. *यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं प्रसन्न हूँ.* अनेक तरीके हैं जिनके द्वारा परमेश्वर अपने पुत्र का परिचय करवा सकता था जैसे कि *यह स्वर्ग और पृथ्वी का सृष्टिकर्ता है, इसकी सुने* या *यह तुम्हारा राजा है, इसकी आज्ञा पालन करो,* परन्तु परमेश्वर अपने पुत्र की पहिचान की घोषणा यह शासक या राजा के बजाय अपने पुत्र के रूप में करता है. यदि हम इस कथन का विश्लेषण करें तो हम निम्नलिखित बातें पायेंगे:

1. यह मेरा पुत्र है
   = **पहिचान**
2. जिसे मैं प्रेम करता हूँ, जिससे मैं अति प्रसन्न हूँ
   = **मूल्य, महत्व**

परमेश्वर के राज्य में हमारा मूल्य और महत्व परमेश्वर के साथ हमारे रिश्ते के द्वारा निर्धारित होता है. यह शैतान के राज्य से बिल्कुल भिन्न है जहाँ हमारा महत्व और मूल्य जैसा कि हमारे द्वारा तथा हमारे चारों ओर पाये जाने वाले लोगों के द्वारा तय किया जाता है, हमारी सफल प्रस्तुतियों और उपलब्धियों के द्वारा निर्धारित किया जाता है. परमेश्वर के राज्य में वह हमारा पिता है और हम उसकी संतानें हैं. यही हमारी पहिचान है. हम इस बात से जाने जाते हैं कि हम किससे संबंध रखते हैं बजाए इसके कि हम क्या करते हैं. यह सच्चाई कि परमेश्वर हमसे अपनी संतानों के समान प्रेम करता है और हमारे ऊपर लगातार आशीषें बरसाता है, निरंतर हमारे बारे में सोचता है, और हमारे निकट रहना चाहता है, हमें अत्यंत मूल्यवान होने का आभास करवाता है.''डरो नहीं, तुम बहुत गौरेयों से बड़कर हो.''

परमेश्वर के राज्य में हमारी पहिचान और अहमियत, हमारे कभी न बदलने वाले परमेश्वर के समान सदा काल तक सुरक्षित और बने रहने वाले हैं. सफलता और असफलता से बिना प्रभावित हुए हमारा रिश्ता बना रहता है और हमारी अहमियत भी बनी रहती है. शैतान के राज्य में हमारा मूल्य और हमारी अहमियत 11 सितम्बर 2011 के बाद से लड़खड़ाते हुए स्टॉक मार्केट के समान- पूरी तरह से असुरक्षित और डगमगाता हुआ है जो कभी भी समाप्त हो सकता है. क्या हम इस बात की गारन्टी दे सकते हैं कि हम सदैव ही सफल होंगे? क्या हमें इस बात का निश्चय हो सकता है कि वे लोग जो हमारे इर्द-गिर्द रहते हैं सदैव ही हमारे प्रयासों के लिए हमारी सहायता करेंगे और हमारी हिम्मत अफ़्जाई करेंगे? शायद ही ! क्योंकि जिनके सुनने के लिए कान हैं, बुद्धिमान अपना घर घिसकने वाले रेत के बजाए चट्टान पर बनाता है.

हमारी व्यक्तिगत पहिचान को बनाये रखने और हमें निराशा, निरुत्साह, अयोग्यता और मृत्यु के जीवन में प्रवेश करने से बचाने के लिए ही परमेश्वर ने अपने राज्य के हृदय में एक व्यवस्था को

सजाकर रखा है जो हमारे रिश्तों की सुरक्षा करेगी. यह दो प्रकार के रिश्तों से निपटती है: हमारे और हमारे स्वर्गीय पिता के मध्य रिश्ता, और परमेश्वर के राज्य के हमारे भाई बहनों के बीच में पाये जाने वाले रिश्ते. यही कारण है कि यीशु ने कहा:

तू परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख. बड़ी और मुख्य आज्ञा तो यही है. और उसी के समान यह दूसरी भी है कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख. ये ही दो आज्ञाएँ सारी व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं का आधार है. मत्ती 22:37-40.

ये दो मुख्य आज्ञाएँ परमेश्वर की संतान के रूप में हमारी पहिचान और अहमियत की सुरक्षा करने के लिए बनाई गई हैं ये दो बड़ी आज्ञाएँ वास्तव में दस आज्ञाओं का सारांश हैं. क्या कभी आपने दस आज्ञाओं को इस नज़रिये से देखा है कि वे आपकी अहमियत की हिफ़ाजत करने के लिए ज़रूरी हैं? परमेश्वर के राज्य में दस आज्ञाओं को हमारे रिश्ते की दृष्टि से देखा जाता है. जब आप इन रिश्तों से अपने आपको अलग कर लेते हैं, आप अपनी पहिचान खो देते हैं और जब आप अपनी पहिचान खो देते हैं तो मृत्यु आपको अपना शिकार बनाने के लिए आपके सामने आ खड़ी होती है. परमेश्वर के इस कथन में उसकी कोई मनमानी नहीं है कि पाप की मज़दूरी मृत्यु है. पाप (जिसकी परिभाषा बाइबल के अनुसार 1 यूहन्ना 3:4 में व्यवस्था का उल्लंघन है) हमारी पहिचान और अहमियत को नाश कर देता है. जब पहिचान और अहमियत खो जाती हैं तो आत्मा मृत्यु की अभिलाषा करने लगती है. यही कारण है कि अवसाद और आत्महत्या आज के समाज की सबसे बड़ी समस्याएँ बन गई हैं. उत्तर आसान है-पाप. क्या आप समझ सकते हैं कि परमेश्वर पाप से इतनी घृणा क्यों करता है? पाप, परमेश्वर की संतान के रूप में हमारी पहिचान और अहमियत का लुटेरा है, और परमेश्वर ने ठान लिया है कि वह पाप का नाश करके रहेगा.

जल्दी से एक नज़र डाल लेते हैं कि अब तक हमने क्या सीखा है:

1. परमेश्वर का राज्य एक परिवार है.
2. परमेश्वर हमारा पिता है और हम उसकी संतान हैं.
3. हमारी पहिचान और अहमियत व्यक्तिगत रूप से परमेश्वर के साथ हमारे रिश्ते पर निर्भर है.
4. परमेश्वर का राज्य संबन्धों का राज्य है जिसका आधार परमेश्वर और हमारे तथा हमारे मानवीय साथियों के साथ संबन्ध है.
5. इन रिश्तों की सुरक्षा के लिए दस आज्ञाएँ ठहराई गई हैं.
6. आज्ञाओं को तोड़ने से हमारे पहिचान और हमारी अहमियत नष्ट हो जाती है.

5. पारिवारिक संकट

मैं उसके चेहरे को देखकर बता सकता था कि वह किसी भयंकर स्थिति से होकर गुजरा था. उसकी आँखों के नीचे लटकती हुई त्वचा इस बात का सबूत दे रही थी कि वह सामान्य दिखाई देने का व्यर्थ प्रयास कर रहा था. मैंने उससे कहा,''तुम तो वास्तव में बहुत परेशान लग रहे हो !''

''मैं और मेरी पत्नी दोनों अलग-अलग हो गये हैं'' उसने दर्द भरी आवाज़ में कहा. ''मुझे इसका कोई समाधान दिखाई नहीं दे रहा है,'' पछतावे में डूबी हुई आवाज़ में वह बोला था. हमने उन चुनौतियों के बारे में बातें कीं जिनका वह सामना कर रहा था और फिर वह बिना समझे बोल उठा, ''मैं अपने बच्चों से अलग नहीं रह सकता-उन्हें देखे बिना मेरी जान निकल रही है.'' मैं देख सकता था कि वह अपने आपको संयत रखने का प्रयास कर रहा था और मैंने उसके दर्द को वास्तव में महसूस किया था. मेरी बड़ी चाहत थी कि मैं उसकी मदद कर पाता. उसका अन्तिम कथन था, ''मैं नहीं जानता कि समाधान कैसे होगा या मैं किस दिशा में जा रहा हूँ.''

केवल वे ही इन शब्दों के पीछे छिपी भावनाओं को समझ सकते हैं जो अलगाव और तलाक़ की पेचीदा घाटी से होकर गुजरे हैं. वह पार्टी जो तलाक के लिए इच्छुक नहीं है वह जिस सदमे, गुस्से और दु:ख से होकर गुजरती है उसकी तुलना उस पीड़ा से की जा सकती है जो अपने जीवन साथी की मृत्यु पर हो सकती है.[19] तलाक की विध्वंसक वास्तविकताओं का अर्थ धन संपत्ति के बंटबारे से अधिक होता है, इसका अर्थ एक बार फिर से अपनी पूरी पहिचान को परिभाषित करना होता है.[20] इसका सबसे ज़्यादा असर बच्चों पर पड़ता है. केवल घटना के समय ही नहीं बल्कि पूरे जीवन भर बच्चा जिस प्रकार के विनाशकारी मनोभाव से होकर गुज़रता है, उसे कभी भी पूरी तरह से नहीं नापा जा सकता है.

जिम कार्वे ने ऐसे सैकड़ों जवान बच्चों का सर्वेक्षण किया जो माता-पिता के बीच में तलाक़ से पीड़ित हुए थे, और उनके मनोभावों को निम्नलिखित रूप में वर्णन किया गया:

नाखुश	72 प्रतिशत
असमर्थ अनुभव किया	65 प्रतिशत
अकेलापन अनुभव किया	61 प्रतिशत
डरा लगा	52 प्रतिशत

गुस्सा आया	50 प्रतिशत
त्यागा हुआ अनुभव किया	48 प्रतिशत
व्यक्तिगत रूप से खारिज किया हुआ अनुभव किया	40 प्रतिशत
अयोग्य अनुभव किया	30 प्रतिशत

तलाक़ के कारण बच्चों में जो मुद्दे उठे उनके कारण उनमें निम्नलिखित गुण देखे गये:

लगातार सहमति की चाहत	58 प्रतिशत
अपने भूतकाल को बन्द रखा	54 प्रतिशत
स्वयं को कठोरता से दोषी ठहराया	53 प्रतिशत
स्वयं को अति गंभीरता से लेना	47 प्रतिशत
नियंत्रण के बाहर हालातों पर ग़लत प्रतिक्रिया व्यक्त करना	42 प्रतिशत
संबन्धों में अभी भी कठिनाई होना	40 प्रतिशत [21]

क्या इस बात में कोई ताज्जुब है कि परमेश्वर कहता है, ''मैं स्त्री त्याग से घृणा करता हूँ!'' मलाकी 2:16. इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि तलाक़ कैसे होता है, या कौन किसको छोड़कर जाता है, पारिवारिक रिश्ते सभी को तोड़ देते हैं. जब पारिवारिक रिश्ते टूटते हैं तो जीत किसी की भी नहीं होती है. फिर स्वर्ग में बिल्कुल ऐसी ही घटना घटी. जब उसके प्रिय पुत्रों में से एक उसके ख़िलाफ हो गया तो परमेश्वर का परिवार बिखर गया.

प्रकाशितवाक्य 12:7 में बाइबल कहती है, ''फिर स्वर्ग में लड़ाई हुई.'' जब हम इन आयतों को पढ़ते हैं तो हो सकता है कि हम सोचने लगें कि यह लड़ाई दो राजाओं और उनके राज्यों के बीच में हुई होगी, परन्तु यह लड़ाई परमेश्वर के परिवार को बिखेरने के लिए हुई थी. क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि परमेश्वर ने पहली बार जब लूसीफर को बनाया और कोमलता से अपने नये बच्चे को अपनी गोद में लिया? परमेश्वर ने इस स्वर्गदूत के ऊपर अपने दिल की सारी बातें प्रकट कीं. परमेश्वर ने उसे प्रेम के अलावा कुछ नहीं दिखाया और उसे यह सौभाग्य प्रदान किया कि वह परमेश्वर के परिवार के शासन में सबसे ऊँची जिम्मेदारी को निभाए. किन्तु अब उसका यह बालक गुस्से और बग़ाबत के वचन बोल रहा था. झूठ और धोख़े के द्वारा उसने परमेश्वर के अनेक दूसरे बच्चों को मनों में ज़हर भर दिया. क्या आप दु:ख की कल्पना कर सकते हैं? लूसीफर, जो सिद्धता में बनाया गया था, अब नफरत और हत्या के विचारों से भर गया था. उसने परमेश्वर के सनातन पुत्र को नाश करने की ठान ली थी, क्योंकि यीशु यह प्रकट करता है कि लूसीफर आरम्भ से ही हत्यारा था. [22] इस भावना की वास्तविकता क्रूस पर दिखाई दी जहाँ शैतान यीशु से छुटकारा पाने की आशा कर रहा था.

उस नुकसान को कौन समझ सकता है जो परमेश्वर ने अपने पुत्र लूसीफर को खोकर सहा है. हम अबशालोम के लिए दाऊद की कहानी में परमेश्वर की आवाज़ की प्रतिध्वनि को सुन सकते हैं.''हाय मेरे बेटे अबशालोम! मेरे बेटे, हाय! मेरे बेटे अबशालोम! भला होता कि मैं आप तेरे बदले मरता, हाय! अबशालोम! मेरे बेटे, मेरे बेटे!!''[23] अबशालोम, दाऊद के सुन्दर और सुरूप बेटे ने अपने पिता को मारकर उसका राज्य छीनने की इच्छा की थी, लेकिन दाऊद की सेना ने उसके बेटे की सेना को तहस नहस कर दिया और अबशालोम लड़ाई में मारा गया. जब परिवार बिखरते हैं तो जीत किसी की भी नहीं होती है.

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि परमेश्वर के राज्य में एक इंसान की पहिचान और अहमियत उसके सृष्टिकर्ता, स्वर्गीय पिता परमेश्वर के साथ उसके रिश्ते के द्वारा जुड़ी हुई है. जब लूसीफर उस रिश्ते से बाहर निकल आया, उसने मानसिक और भावनात्मक रूप से आत्महत्या कर ली और अपने लिए अंधकार भरे हुए अनापेक्षित भावनाओं का सैलाव खोल लिया . लूसीफर के विद्रोह से पहले यदि आप उससे पूछते कि ''तुम कौन हो?'' बड़े आत्मविश्वास के साथ उसका उत्तर होता, ''मैं परमेश्वर का एक बेटा हूँ, और वह मुझसे प्रेम करता है.'' एक बार जब लूसीफर ने अपने पिता का तिरस्कार कर दिया, यदि आप उससे वही प्रश्न पूछो ''तुम कौन हो लूसीफर?'' उसका उत्तर क्या हो सकता है? अब उसकी कोई पहिचान नहीं है, क्योंकि उसने अपनी पहिचान को नष्ट कर लिया है. उसके बाद वह अपने लिए जो भी पहिचान बनाने की कोशिश करेगा, वह कभी भी उस खालीपन को नहीं भर सकती जो उसके स्वर्गीय पिता के साथ उसका रिश्ता टूटने के कारण पैदा हो गया है.

अनेक बार उसने चाहा कि वह उस स्थान को पुन: प्राप्त करले जो उसने खो दिया था, लेकिन उसके घमण्ड ने उसे ऐसा नहीं करने दिया. इसके अलावा, वह अपने दिल की गहराईयों में उसे कभी भी यह विश्वास नहीं होता कि उसे खुले विद्रोह और कृतज्ञहीनता के लिए अब उसे क्षमा किया जा सकता था. लूसीफर, जो अब शैतान है, अकेला है. अब कोई नहीं है जो उसे गले से लगाये, उसे प्रेम करे और अब कोई ऐसी जगह नहीं है जिसे वह अपना घर कह सके. अब शैतान अयोग्यता, असुरक्षा, भय, खालीपन, जलन, घमण्ड, आत्म-धार्मिकता, अहंकार, क्रोध, कोप और नियंत्रण करने वाली भावना से भरा हुआ है.

शैतान नहीं जानता था कि कौन सी राह चुने. उसे अपनी पहिचान फिर से बनानी थी और किसी तरह से उस खालीपन, अयोग्यता और शून्यता जो उसमें बन गई थी उसको भरने के लिए कुछ काम करना था. किसी भी ऐसे बच्चे के समान जो अपने आपको अयोग्य महसूस करता है, शैतान अपने ऊपर असुरक्षा, भय, पागलपन और जो कोई उसे मिल जाए उससे स्वीकृति की अभिलाषा के निशानों के साथ घूमता फिरता है. वह ध्यान पाने की लालसा करता है, उस खालीपन को भरने के लिए, उसका पतित स्वभाव चाहता है कि उसकी आराधना की जाए, उसे प्रेम किया जाए और उसकी सराहना की जाए-जिससे उसके अन्दर बना हुआ दर्द, अकेलापन और अयोग्यता किसी तरस से समाप्त हो जाए.

चूँकि शैतान ने रिश्ते को जो अहमियत का आधार है, नकार दिया है, अब वह कभी भी ऐसे राज्य की स्थापनाा नहीं कर सकता है जो रिश्तों पर आधारित हो. केवल एक ही विकल्प उसके लिए बचा था. जो आप हो उसे छोड़कर जो आप करते हो, उसे अपनी पहिचान बनाना. यह राज्य कभी भी कारगर नहीं हो सकता यदि प्रत्येक जन यह स्वीकार करे कि जीवन और बुद्धि और प्रेम परमेश्वर की ओर से मिलते हैं. इसलिए शैतान ने 'अपने ही अन्दर शक्ति' की अवधारणा बनाई है ताकि परमेश्वर को एक शक्ति के रूप में सीमित कर सके जो व्यक्तिगत रिश्तों के मामले में असक्षम है. एक ऐसी शक्ति जिसे आप जब चाहें उपयोग करें या जब चाहें उसका दुर्पयोग करें. शैतान का राज्य, शक्ति और प्रदर्शन और प्रसन्नता खोजने का राज्य है. इसका मुख्य ध्येय किसी के प्रति कोई जिम्मेदारी नहीं होना, और केवल उन्हीं की चिंता करना है जो आपके लिए उपयोगी हो सकते हैं.

इस राज्य का वास्तव में सर्वनाश हो चुका है, क्योंकि जीवन शक्ति उसमें पाई जाती है जो बेजान नही है, और वह एक दिन इस शक्ति को उन सब से ले लेगा जो हठ करके अपने आपको परमेश्वर की संतान मानने से इंकार करते हैं. यहाँ पर हम नीतिवचन की सच्चाई को सीख सकते हैं, ''दुष्टों के लिए कोई विश्राम नहीं है.''

यदि हम इस संदर्भ में बाग-इ-अदन में लौटें, हम देखते हैं कि बाहर से तो शैतान चालाक और बुद्धिमान दिखाई देता है जब वह परमेश्वर द्वारा अपने आप का स्वर्ग से निकाले जाने को रोकने का प्रयास करता है. लेकिन उसके अन्दर एक दिल है जो ऐसे खालीपन और असुरक्षा से भरा हुआ है और निराशा की निरन्तर बढ़ती हुई खाई से बचने के लिए एक नई पहिचान बनाने का संघर्ष कर रहा है.

6. पृथ्वी पर नरक

जीवन में यह सबसे अधिक दिल तोड़ने वाले अनुभवों में से एक हो सकता है. यह वर्षों के दौरान हुई होगा, लेकिन समय के साथ आपने किसी के साथ एक मज़बूत मित्रता क़ायम कर ली है. कोई ऐसा है जिसकी संगति में आपको बड़ा सुकून मिलता है. अचानक आप देखते हैं कि आपका मित्र कुछ विचित्र सी हरकतें करने लगा है. आप इसपर अधिक ध्यान न देने की कोशिश करते हुए अपने आप से कहते हैं कि आपको जैसा लग रहा है वास्तव में मामला इतना गंभीर नहीं है. लेकिन समय के साथ सबूतों का ढेर लगता जाता है, और अन्ततः आपको विवश होकर अपने मित्र से पूछना ही पड़ता है कि क्या हो रहा है. आपके मित्र द्वारा खड़ी की गई दीवार को पार करने में सदियों के समान समय लगाने के बाद आपको पता चलता है कि कोई तीसरा व्यक्ति आपके मित्र को आपके ख़िलाफ भड़काने का प्रयास कर रहा है, जिसके द्वारा उन्होंने आपके कार्यों का जो अर्थ लगाया है वह आपको भ्रमित कर देता है.

निश्चय ही सच्चाई की जीत होगी और आप इस ग़लतफहमी का हल खोज लेंगे, लेकिन ऐसा नहीं होता है! जब आप एक उचित व्याख्या देते हैं तब आपके ऊपर बड़ी निर्लज्जता के यह आरोप लगाया जाता है कि आप सच्चाई को छुपाने के लिए कहानी गढ़ रहे हैं. ऐसे समय में इन अनेक भावनाओं में से कोई एक आप पर हावी हो सकती है: चोट, दर्द, क्रोध या विध्वंस कि आपका मित्र आपसे एक बार पूछे बिना ही आपका बचाव करने के बजाए किसी दूसरे की बात पर आँख मूँद कर विश्वास कर सकता है. आपका बौखला जाने या चुप रहने (जो भी लागू हो) का आपके "मित्र" के लिये अर्थ यह है कि वे सही थे और जो कुछ कहा गया था वह सही था. आपके ज़ख़्मों पर नमक और छिड़क दिया जाता है!

हो सकता है कि ऊपर के दोनो पैराग्राफ पढ़ते समय, एक दर्द भरी याद आपके दिमाग़ में उभर आई हो जो इस बात को सही ठहराती है कि यह दृश्य पृथ्वी की पैदाइश से लेकर आज तक असंख्य बार दोहराई जाती रही है. मैं भी इसे लिखते समय एक हादसे की याद ताज़ा हो जाती है जो मेरे साथ हुआ था, और मैं रुक कर पुनः पूछने लगता हूँ, "क्यों?"

मुझे पूरा भरोसा है कि हममें से अधिकाँश लोगों के जीवन में इसी तरह के तिरस्कारों के दाग़ पाये हैं, और मैं सोचता हूँ कि वे कुछ हद तक यह समझने में हमारी मदद कर सकते हैं कि जिस पल आदम और हव्वा ने अच्छाई और बुराई के वृक्ष के फल को खाया था. यह जीवन के बड़े रहस्यों में से एक है कि एक अजनबी के शब्द दो सबसे अच्छे मित्रों को अलग अलग कर सकते हैं.

मैंने अनके बार परमेश्वर द्वारा अपनी बेटी हव्वा को ध्यान से देखने की कल्पना की है जब वह बाग़ में टहलते टहलते अचानक एक ''अजनबी'' के साथ बात चीत करने लगती है. परमेश्वर ने हव्वा के साथ जो जितना समय बिताया था और अपने प्रेम के असंख्य प्रमाण उसको दिये थे, उनको ध्यान में रखते हुए, क्या वह अपने स्वर्गीय पिता के प्रेम की सुरक्षा से बंधी रहेगी या फिर साँप के द्वारा बोले जाने वाले शैतान के शब्दों को ग्रहण कर लेगी? परमेश्वर ने तुरन्त ही दख़ल देते हुए एक स्वर्गदूत को भेज कर इस रिश्ते को टूटने से बचा क्यों नहीं लिया? मैं सोचता हूँ कि इस बिन्दु पर अनके ''क्यों'' वाले सवाल हैं जो पूछे जा सकते हैं. जबकि समय और स्थान की कमी के कारण हम उन सभी सवालों को यहाँ पर नहीं ले सकते हैं, और यह भी सत्य है कि उनमें से कुछ ऐसे सवाल भी हैं जिन्हें हम तब तक पूरी तरह से नहीं सुलझा सकते जब तक हम हमारे प्रभु को आमने सामने न देखें, केन्द्रिय जबाव प्रेम है.

प्रेम चुनाव करने की आज़ादी देता है चाहे यह चुनाव चुनने के का अधिकार देने वाले को ही बुरी तरह से नुकसान पहुँचाए. यदि प्रत्येक बार जब जब उसकी संताने ग़लत राह पर क़दम रखते हैं तो वास्तव में यह चुनाव करने का अधिकार ही नहीं रहेगा. निर्देश देने और सुधारने का समय होता है, लेकिन ऐसा समय भी आता है जब चुनाव करने की आज़ादी देने वाले की चुप्पी इस बात को सही ठहराती है. उसने कहा है ''मैं तुमसे प्रेम करता हूँ'' क्योंकि चुनाव करने की स्वतंत्रता के बिना प्रेम; प्रेम नहीं रहता है. यही वह वास्तविकता है जिससे माता-पिता को उस समय दो चार होना पड़ता है जब वे अपने बालकों के साथ व्यवहार करते हैं. हमारे निर्देशों और शिक्षा के बावजूद फिर भी यदि हमारे बच्चे हमारे ख़िलाफ़ जाने का निर्णय करते हैं तो क्या हमें अपने आपको तिरस्कार की पीढ़ा से बचाने की ख़ातिर उनको रोकना चाहिए या फिर हम शान्त रहकर शोक मनाएँ और उन्हें हमारा तिरस्कार करने दें? किसी भी माता-पिता के लिए यह एक कठिन चुनाव हो सकता है.

प्रेम की शक्ति की पोशाक में परमेश्वर चुपचाप हव्वा, अपनी प्रिय पुत्री को देखता है, जो उसके प्रिय पुत्र आदम को नाश करने के लिए एक साधन बन जाती है. अब तक परमेश्वर के दिल में दर्द का स्तर बहुत ज़्यादा हो सकता है. हव्वा के पतन का परमेश्वर के दिल में जो दर्द है उसकी ख़ातिर क्या वह हव्वा के हाथों से अपने पुत्र आदम को बचाने के लिए दख़ल देगा? नहीं! स्वर्गीय प्रेम अपने दाँत पीसता है और शान्त होकर प्रतीक्षा करता है, जो इस बात को प्रमाणित करता है कि परमेश्वर वास्तव में स्वतंत्रता और चुनाव की आज़ादी देने वाला परमेश्वर है. वह आदम को आज़ादी देगा कि वह स्वयं ही अपना चुनाव करे. जब हम परीक्षाओं की बात करते हैं, तो कृपया मूर्खता के इस विचार में मत उलझिये कि स्वर्ग की सुरक्षा में बैठकर परमेश्वर लापरवाही से यह देख रहा था कि आदम और हव्वा ने वह योग्यता हासिल कर ली है या नहीं कि उन्हें स्वर्गीय क्लब में शामिल हो सकें. कभी नहीं! आदम और हव्वा के साथ साथ परमेश्वर की भी परीक्षा हो रही थी. क्योंकि परमेश्वर जानता था कि यदि आदम और हव्वा गिर जाते हैं तब उसे भी उनके साथ नुकसान होगा, जिसका अर्थ यह है कि मानव को पुन: जीतने के लिए उसे अपने पुत्र-यीशु मसीह को त्यागने की उस प्रतिज्ञा को लागू करना पड़ेगा जो संसार की सृष्टि[24] से पूर्व निर्धारित

की गई थी. जब परमेश्वर शान्त होकर आदम और हव्वा को देख रहा था तो वह इन बातों को पूरी तरह जानता था. उस चुप्पी में किस प्रकार का प्रेम शामिल था? प्रेम का यह प्रकटीकरण उस दुष्ट विचार को हमेशा के लिए नष्ट कर देगा कि हमारे आदि माता-पिता के साथ व्यवहार करते समय परमेश्वर ने स्वार्थी भाव अपनाया था.

अध्याय 1 में हमने उस सोच पर बातचीत की थी जो आदम हव्वा ने वर्जित वृक्ष का फल खाते समय अपनाई थी और पिछले अध्याय में हमने दु:ख मिश्रित भावनाओं के बारे में अध्ययन किया था जिसने शैतान को यह विचारधारा गढ़ने के लिए प्रेरित किया कि हम परमेश्वर के बिना जीवित रह सकते हैं और हम अपने कार्यों के द्वारा अपनी पहिचान बना सकते हैं. अभी जबकि आदम और हव्वा के पेट के पाचक रस उस वर्जित फल को पचा ही रहे थे, उनके दिमाग़ के ऊपर अयोग्यता और दोषभाव के ग़मगीन बादल छा रहे थे और परमेश्वर तथा मनुष्य के बीच में बने हुए उस सुन्दर और सुखमय रिश्ते की डोर को तोड़ने लगे थे. ड्यूरासेल पेड़ के श्राप के धोख़े ने काम करना आरम्भ कर दिया और थोड़े ही समय में आदम और हव्वा को भय और दोषी भावनाओं ने घेर लिया. उन्होंने, शैतान और उसके दूतों के समान ही मानसिक और भावनात्मक आत्महत्या कर ली थी. उन्होंने अपनी पहिचान और अहमियत खो दी थी और अब वे इसे पुन: पाने के लिए कुछ भी करने में असमर्थ थे. वे पुन: परमेश्वर का समर्थन प्राप्त करने में पूरी तरह से असमर्थ थे. उन्होंने उस रिश्ते को तोड़ दिया था जिसे केवल परमेश्वर ही जोड़ सकता था.यदि कोई हमारे साथ संबन्ध तोड़ लेता है तो संबन्ध को पुन: बहाल करने की जिम्मेदारी अब उस इंसान की है जो संबन्ध को तोड़ने के काम में शामिल नहीं था, क्योंकि अपराध करने वाली पार्टी पहले ही रिश्ते के अधिकार का समर्पण कर चुकी है.

इस बिन्दु पर जो हमने 2 अध्याय में सीखा था उसे याद रखना ज़रूरी है. परमेश्वर ही जीवन, बुद्धि और आनन्द का स्रोत है. आदम और हव्वा ने यह विश्वास करने के द्वारा कि उनके अन्दर ही जीवन का स्रोत है, अपने आपको अब इस स्रोत से अलग कर लिया. उनके सोचने समझने की शक्तियाँ अब निस्वार्थ रूप से या समझदारी के साथ प्रयोग करना उनके लिए संभव नहीं रह गया. उनके दिमाग़ अब पूरी तरह से शैतान के दिमाग़ से मेल खा रहे हैं. अब उनके अन्दर यह क्षमता नहीं रही कि जो कुछ शैतान उन्हें बताता है उसमें छिपे हुए झूठ को पहिचान सकें. शैतान उनके दिमाग़ों में परमेश्वर के चरित्र के बारे में तमाम तरह की झूठी बातें भरना शुरू कर देता है. लेकिन इसके साथ साथ शैतान उन्हें यह भी बताता है कि वे बुरे हैं. वह उन्हें बताता है कि अब उनकी कोई व्यक्तिगत अहमियत नहीं है और वे मृत्यु के हक़दार हैं. शैतान हमारी पहिचान को मिटाने के लिए हमसे हमारे बारे में और हमारे परमेश्वर के बारे में झूठ बोलता है. जब तक हम अपने बारे में और परमेश्वर के बारे में झूठी बातों पर विश्वास करते रहेंगे, हम कभी भी परमेश्वर से मेल नहीं कर सकते.
अजनबी ने घन्टिष्ट मित्रों को अलग कर दिया है. जब परमेश्वर उनसे मिलने आता है और उन्हें नाम लेकर बुलाता है, जो आवाज़ एक समय उनके लिए दुनिया में सबसे मधुर होती थी, अब वही आवाज़ सुनकर वे

भय और निराशा के मारे छिप जाते हैं. शैतान की योजना काम कर गई है !

कल्पना कीजिए कि एक दिन जब आप काम से घर वापस आते समय उस मधुर मिलन की परम्परा की अपेक्षा करते हुए जो आपने अपने बेटे के साथ मिलकर बनाई हुई है. प्रत्येक शाम सामने के दरवाज़े से आपका बेटा दौड़ते हुए यह गाता हुआ आता है,''डैडी, डैडी,'' और अपने आपको आपकी बाहें में फेंककर आपके गले लग जाता है. जैसे ही आप अपने घर पहुँचते हैं आप पाते हैं कि आपका प्रिय बेटा आपसे मिलने के लिए घर से बाहर नहीं आया. इस बात से परेशान होते हुए जब आप सामने के दरवाज़े से घर में घुसते हैं तो आप भय से निकलती हुई उसकी चीख़ सुनते हैं और वह जल्दी से अपने छोटे छोटे क़दमों से बाग़ में छिपने के लिए भाग जाता है. किसी बात ने वह रिश्ता तोड़ दिया है. जहाँ प्रेम हुआ करता था, वहाँ आज भय है. कोई भी वास्तविक पिता यह पसन्द नहीं करेगा कि उसकी आवाज़ सुनकर उसके बच्चे उससे दूर भाग जाएँ. इससे दुःख होता है. यह बहुत दुःख की बात है कि पाप हमें दुनिया के सबसे प्रेमी, उदार, धैर्यवान, स्वतंत्रता प्रेमी व्यक्ति से भयभीत कर देता है.

परमेश्वर के सामने एक गंभीर दुविधा है. अब वह आदम और हव्वा के पास कैसे पहुँचे जबकि वे किसी की आवाज़ को सुन रहे हैं? परमेश्वर द्वारा बोले गये प्रत्येक शब्द का अब ग़लत अर्थ लगाया जाता है. वे जानते हैं कि वे दोषी हैं, परन्तु अब उनके पास कोई सुरक्षा या अपनी ग़लती को स्वीकार करने के लिए अपनी अहमियत नहीं है क्योंकि उन्होंने परमेश्वर के बारे में ज़ो जीवन और बुद्धि का स्रोत है, गलत विचारों को स्वीकार कर लिया है. दोषी और असुरक्षा की भावना के वश में होकर वे अब ललकारने लगते हैं. उन्होंने ईमानदारी से सोचने की शक्ति खो दी है.

परमेश्वर ने बड़े धैर्य के साथ जिस प्रेम को प्रकट किया है मैं उसके पर आश्चर्य करता हूँ. परमेश्वर आदम को पुकारता है, ''तू कहाँ है?'' इसलिए नहीं कि वह जानता नहीं कि आदम कहाँ है परन्तु इसलिए कि आदम को मुद्दे का सामना करने की अनुमति देने के लिए. *आदम तुम्हारा दिमाग़ कहाँ है? तुम्हारी पहिचान को क्या हो गया है?* शारीरिक दशा सदैव आत्मिक दशा की पहिचान कराती है, और शारीरिक रूप से छिपने से आदम और हव्वा के दिमाग़ की सही दशा पता चल जाती है कि उनके दिमाग़ों में क्या चल रहा है. उन्होंने अपने आपको झूठ और धोख़े के द्वारा ढक लिया है जिससे उन्हें सच्चाई का सामना न करना पड़े जो भयभीत करने वाली दिखाई दे रही है. समस्या को समझने में परमेश्वर उनकी मदद करने की कोशिश कर रहा है जिससे कि वह धन्य समाधान के द्वारा उनकी समस्या का समाधान कर सके.

परमेश्वर के प्रश्न का उत्तर देते हुए आदम उसे बताता है कि वह डर गया था क्योंकि वह नंगा था. यह स्वीकारोक्ति उत्पत्ति 2:25 के संदर्भ में रुचिकर है.''आदम और उसकी पत्नी दोनों नगे थे, परन्तु वे लजाते न थे.'' फल खाने से पहले ही आदम नंगा था लेकिन वह लजाता न था. यहाँ पर निष्कर्ष यह है कि आदम अब लजा रहा था. इब्रानी शब्द (बुव्श) का अर्थ भ्रमित, ग्लानि, और निराशा को भी दिखाता है. वह जो था उसके बारे में वह भ्रमित था, और उसने जो कुछ किया था उसके लिए वह अब ग्लानि महसूस कर रहा था. अब परमेश्वर अपनी उँगली आदम के दर्द की अधिकता पर रखता है, ''तुझे किसने बताया कि तू नंगा है? क्या तूने उस वृक्ष का फल खा लिया है जिसका फल खाने के लिए मैंने तुझे मना

किया था?'' परमेश्वर आदम से यह नहीं पूछता कि, ''तुझे कैसे पता चला कि तू नंगा है?'' उसने आदम से पूछा, *''तुझे किसने बताया कि तू नंगा है?''*परमेश्वर आदम का ध्यान उस बहकाने वाले के झूठ की ओर ले जाने का प्रयास कर रहा है. दूसरे शब्दों में,''तुम्हें मुझसे दूर भागने के लिए कौन कह रहा है? तुम्हारे और मेरे बीच में कौन आ गया है?'' आदम से सीधा सवाल किया जाता है,''क्या तूने उस वृक्ष का फल खा लिया है जिसके विषय में मैंने तुझे मना किया था?'' यह एक साधारण सवाल है जिसका उत्तर साधारण हाँ या ना में दिया जा सकता है. अब आदम के दिमाग़ में परमेश्वर की एक स्वार्थी और बदला देने वाले की बनी हुई है, और वह स्वयं मूर्ख और अयोग्य बन गया है, वह अपने मन में दो और दो को एक साथ रखता है और 64 बना लेता है. आदम जानता है कि यदि वह हाँ कहे, तो वह पकड़ा जाएगा, और यदि वह ना कहे तो वह दो बार पकड़ा जाएगा, एक बार फल खाने के लिए और दूसरी बार झूठ बोलने के लिए. जानते हुए कि बचने का अब कोई रास्ता नहीं बचा है, आदम अपने बॉक्सिंग ग्बॅज़ पहन कर परमेश्वर के साथ दो दो हाथ करने के लिए (जैसे कि कोई भी असुरक्षित व्यक्ति करता है) बाहर आ जाता है. जैसे कि कहावत भी है,''यदि तुम्हें गिरना ही है तो लड़ते हुए गिरो.''

'' वह स्त्री जो तूने मुझे दी, उसने मुझे उस वृक्ष का फल दिया और मैंने खाया,'' उसने दोष लगाया. ..... यह आदमी रंगे हाथों पकड़ गया है और वह दो हमले हव्वा के ऊपर करता है और एक हमला परमेश्वर के ऊपर करता है. क्या आप हव्वा के सदमे को महसूस कर सकते हैं, जिस आदमी ने अभी थोड़ी ही देर पहले यह कहा था कि जो कुछ होगा दोनो साथ साथ निपटेंगे, लेकिन वह तो पहली ही बाधा के सामने औंधे मूँह गिर पड़ा! निस्वार्थ भाव से दूसरे की सहायता और सहयोग करने वाले व्यक्ति को भी पाप , बहादुर नहीं बना सकता है. इसका परिणाम सदैव यही होता है कि मनुष्य अपना बचाव ही करता है.

जो कुछ यहाँ हो रहा है वह हम खोना नहीं चाहते हैं. आदम की प्रतिक्रियाएँ उसकी ग्लानि और असुरक्षा के कारण है जिनमें परमेश्वर के चरित्र के विषय में सही समझ की कमी भी शामिल है और इसकी मदद उसका घमण्ड कर रहा है. अब चूँकि वह अपने आपको परमेश्वर के पुत्र के रूप में नहीं देख सकता है, उसे उस सोच को पकड़ना होगा, ''यदि मैं दोषी हूँ, तो निर्दोष कोई और भी नहीं है.'' वह ऐसा इसलिए सोचता है क्योंकि उसके पास अब पिता नहीं है. पाप का बड़ा परिणाम यही है: परमेश्वर आदम को कैसे समझाये कि पिता के विषय में उसकी तस्वीर सही नहीं है और न ही वह अयोग्य और बेक़ार है? आदम को उसकी स्थिति का सही आंकलन कैसे करवाया जाए जबकि वह समझदारी के साथ सोचने की क्षमता ही खो चुका है? परमेश्वर ही सच्ची बुद्धि का एक मात्र स्रोत है और आदम ने अपने आपको उससे अलग कर लिया है. और जब आदम सोचे भी तो उसकी सोच घमण्ड और ग्लानि के मिश्रण से रहित कैसे हो सकती है जबकि वह बल पूर्वक ऐसे किसी भी विचार का विरोध करता है जो सत्य के समान दिखाई देता है. जब परमेश्वर आदम को पूरे प्रेम के साथ और उसी की भलाई की ख़ातिर यह बताता है कि उसने ग़लती की है, आदम यह सह नहीं पा रहा है.
मेरी यह निष्कपट प्रार्थना है कि आप यह समझ लेंगे कि एक बार जब आदम और हव्वा ने अपने आपको

परमेश्वर से अलग कर लिया, वे इस लाचारी तक खो गये कि वे लगभग उस दशा में पहुँच गये जहाँ से वापसी संभव नहीं थी. वे पूरी तरह से शैतान की आत्मा के नियंत्रण में थे. उनके दिलों में वे बीज थे जिसके कारण यरूशलेम में उनकी संतानें अन्तत: दुष्ट स्वर्गदूतों के साथ मिलकर परमेश्वर के पुत्र को मार डालने पर उतारू हो जाएँगी. यद्यपि यह पूरी तरह से प्रकट नहीं हुआ था, इस बात का ऐहसास किये बिना, उनके दिलों में परमेश्वर या उसके राज्य के लिए कोई स्थान नहीं था.

इस जगह पर आप ऐसा कहने की आज़माइश में हो सकते हैं,"रुकिये, रुकिये, आप इस बात को कुछ ज़्यादा ही खींच रहे हैं. मैं मानता हूँ कि उनकी समस्या थी, लेकिन यह कहना कि वे पूरी तरह से परमेश्वर से घृणा करने लगे थे, यह तो बात को कुछ ज़्यादा ही तूल दे रहे हैं." प्रतिक्रिया में मैं कहना चाहूँगा कि हमें यह बात सदैव याद रखनी चाहिये कि सब भलाई और प्रेम और बुद्धि परमेश्वर से ही निकलती है. यह मनुष्य के हृदय में पैदा नहीं होती है. यदि हम इस महत्वपूर्ण बिन्दु को भूल जाते हैं तो हम इस कहानी को सच्चाई से न तो पढ़ सकते हैं और न ही अपने आपको सही तरह से समझ ही सकते हैं. बाइबल इस विषय में बहुत स्पष्ट है.निम्नलिखित आयतों को देखिये:

> *क्योंकि शरीर पर मन लगाना तो परमेश्वर से बैर रखना है, क्योंकि न तो परमेश्वर की व्यवस्था कि अधीन है और न हो सकता है:* रोमियों 8:7

> *कोई धर्मी नहीं, एक भी नहीं. कोई समझदार नहीं, कोई परमेश्वर का खोजनेवाला नहीं. सब के सब भटक गए हैं, सब के सब निकम्मे बन गए हैं. कोई भलाई करने वाला नहीं, एक भी नहीं.* रोमियों 3:10-12

> *मन तो सब वस्तुओं से अधिक धोख़ा देनेवाला होता है, उस में असाध्य रोग लगा है, उसका भेद कौन समझ सकता है?* यिर्मयाह 17:9

बाइबल बताती है कि प्राकृतिक दशा में हमारे मन, घृणा करते है या परमेश्वर से बैर रखते हैं. प्राकृतिक दशा में हमारे मन विद्रोही है, वे परमेश्वर की आज्ञाओं के सामने समर्पण नहीं करते, और यह असंभव है कि हमारे मन इस दशा से छुटकारा पा सकें. मैंने अपने अनुभव में, और बहुत से दूसरे लोगों के अनुभव में यह पाया है जिनके साथ मैंने यह सच्चाई बाँट है, अत्यधिक विरोध करने की आत्मा पाई जाती है. विरोध करने वाली यह आत्मा की सत्यता कि मानवीय स्वभाव परमेश्वर से बैर रखता है, यह उसी विरोध की प्रतिध्वनि है जो आदम ने परमेश्वर के सामने दिखाया था, जब उसने अपनी दशा को स्वीकार करने के बजाए हव्वा और परमेश्वर के ऊपर दोष लगाया. आदम के अन्दर पायी जाने वाली असुरक्षा की भावना हमें विरासत में मिली है, और हम सच्चाई का सामना आदम से बेहतर रीति से नहीं कर सकते हैं. यदि इन कथनों को पढ़कर आप अपने आपको व्याकुल या क्रोध में पाते हैं, यदि इन कथनों को पढ़कर आप अपने आपको अपमान और नफरत की दशा में पाते हैं, यदि आप अपने आपको इस किताब के लेखक को कुछ

बेहतर करने को नहीं मिला तो लोगों को बुरा कहने लगे–आनन्द समाप्त करने वाला सोचते हुए पाते हैं तो अपने आपसे पूछें कि ऐसा आप क्यों महसूस कर रहे हैं? यदि आप अपने आप में सुरक्षित हैं, तब इन कथनों से आप के ऊपर कोई फर्क नहीं पड़ना चाहिए. आदम की असुरक्षा और खालीपन हमें विरासत में मिली है. यही सब वह हमें दे सकता था, इससे अधिक नहीं.

यदि आप इस वास्तविकता को स्वीकार कर लेते हैं कि मानवीय स्वभाव परमेश्वर से बैर रखता है, तो आप एक वास्तविक उत्सव की ओर बढ़ रहे हैं. हमें बचाने के लिए परमेश्वर की योजना के संदर्भ में, आप कुछ अच्छा नहीं कर सकते इस बात को मानने में बड़ी स्वतंत्रता है. आप प्रयास करना बन्द कर सकते हैं. जब आपका पापी स्वभाव छलाँग लगाकर बाहर आता है और किसी को शारीरिक या भावनात्मक रूप से किसी को घेर लेता है तो आप अपने आपको पीटना बन्द कर सकते हैं, परन्तु मैं अपने आप से आगे जा रहा हूँ; हम इसे अगले अध्याय के लिए बचाकर रखेंगे.

वापस आदम और हव्वा के पास, हम देख सकते हैं कि उनके और परमेश्वर के बीच में बने हुए अवरोध को तोड़ना एक बेहद कठिन कार्य होगा. उनकी वापसी और उनकी संतानों की वापसी इन बातों की माँग करेगी:

1. एक ऐसा साधन जिसके द्वारा मानव जाति को उसकी वास्तविक दशा को समझने के लिए बुद्धि के साथ साथ एक ऐसी राह का प्रबन्ध करना होगा जिसके द्वारा चुनाव करने की स्वतंत्रता का उलंघ्घन किये बिना उन्हें सही दिशा में जाने के लिए प्रभावित किया जा सके.
2. उन्हें बताने के लिए एक रास्ता कि उन्होंने परमेश्वर के चरित्र और उसके राज्य के बारे में ग़लत सोचा है और किसी तरह से उन्हे बताने के लिए परमेश्वर वास्तव में उनसे प्रेम करता है.
3. उनकी ग्लानि और असुरक्षा की भावना दूर करने का एक तरीका और परमेश्वर की संतान के रूप में उन्हें उनकी वास्तविक पहिचान लौटाना.
4. उनके जीवन का उद्देश्य उन्हें वापस करना, जीवित रहने का कारण उन्हें समझाना या उनके जीवन का लक्ष्य उन्हें याद दिलाना.
5. ऊपर बताई गई सभी बातों के लिए समय की ज़रूरत थी. आदम और हव्वा अपने जीवन को गँवा चुके थे, इसलिए उन्हें जीवन के लिए सपोर्ट सिस्टम की जरूरत थी जिससे उन्हें चुनने और फैसला करने का समय मिल सके.
6. यह सब करते समय परमेश्वर को न्याय की भावना भी बनाए रखनी थी. ठीक है यह कहकर वह उनके विद्रोह की अनदेखी भी नहीं कर सकता था. जबकि परमेश्वर ने अपनी दया में उनके ऊपर पूरा दण्ड नहीं आने दिया, लेकिन आदम और हव्वा को अपने पाप के दण्ड के परिणाम का अनुभव तो करना ही था ताकि उन्हें इस बात का एहसास रहे कि उन्होंने किस वस्तु का चुनाव किया है.

यह एक महत्वपूर्ण बात है जिसका ज़िक्र करना ज़रूरी है. परमेश्वर इस बात से भौचक्का नहीं था. पिता और पुत्र पहले ही यह तय कर चुके थे कि ऐसा होने पर वे क्या करेंगे. योजना पहले बना ली गई थी–एक ऐसी विस्तृत योजना जो इस तरह के संकट से निपटने के लिए पूरी तरह से तैयार थी.

7. स्वर्ग की जीवन रेखा

एक रेल्वे स्टेशन मास्टर की कहानी बताई जाती है जिसकी यह जिम्मेदारी थी कि जहाज़ों को पुल के नीचे से निकलने के लिए वह रेल्वे के एक पुल को खोले और बन्द करे. जब पुल ऊपर उठा हुआ होता था, तो रेल्वे लाइन पर रेल के ड्राइवर को एक संकेत देता था कि पुल खुला हुआ है इसलिए वह प्रतीक्षा करे. इस विशेष दिन, पुल खुला हुआ था और कुछ समय के लिए उसे नीचा करने की कोई संभावना भी नहीं थी. अचानक रेल्वे मास्टर ने रेल के मोड़ पर एक ट्रेन को आते हुए देखा. शायद सिगनल फेल हो गया था. उसने महसूस किया कि इतने समय में वह पुल को नीचे झुका सकता था किन्तु तब उसने ध्यान दिया कि उसका अपना बेटा उन बड़े दाँतेदार पहियों के ऊपर चढ़ रहा था जो पुल को ऊपर उठाते और नीचे झुकाया करते थे. रेल्वे स्टेशन का मास्टर जानता था कि यदि उसने अपने बेटे के जीवन को बचाने के लिए पुल को नहीं झुकाया तो ट्रेन में सवार सभी यात्री मारे जाएँगे. यदि वह ट्रेन के यात्रियों को बचाना चाहता था तो उसे अपने बेटे का बलिदान देना होगा. फैसला करने में देरी करने के लिए समय नहीं था. उसके हृदय में अत्यधिक पीढ़ा के साथ, उसने लीवर नीचे खींचा और पुल नीचे झुकने लगा, जब उसने अपने बेटे की दर्दनाक चीख सुनी तो सुबकते हुए वह अपने घुटनों पर गिर पड़ा जबकि दाँते दार पहियों ने उसके एकलौते पुत्र को कुचल कर मार डाला. ट्रेन पुल पर से सुरक्षित पास हो गयी, जबकि यात्रियों को उनके ऊपर छाये हुए ख़तरे के बारे में कोई भी आभास नहीं था और न ही वे यह जानते थे कि उन्हें मृत्यु से बचाने के लिए कितनी बड़ी क़ुर्बानी दी गयी थी.

मुझे ख़ुद को संयत रखने में बड़ी परेशानी होती है जब मैं इस कहानी को सुनता हूँ जो परमेश्वर के उस निर्णय से बहुत मिलती जुलती है जिसका उसने मानव जाति को अनन्त मृत्यु से बचाने के लिए सामना किया था. क्या परमेश्वर मानव जाति को विनाश के अन्धेरे में नाश होने के लिए गिर जाने देगा, या वह कोई विकल्प उपलब्ध करवायेगा? कार्यवाही करने के लिए समय सीमित था क्योंकि आदम और हव्वा पहले ही अपने आपको जीवन शक्ति के स्रोत से अलग कर चुके थे,और शीघ्र ही उनका भविष्य हमेशा के लिए मुहरबन्द हो जाएगा तथा उनके शरीर मृत्यु की कब्र में लाश बनकर सड़ जाएँगे.

मानव जाति की सृष्टि से पहले, पिता और पुत्र दोनों आपस में गहन बातचीत में शामिल हुए जिसे बाइबल शान्ति की मंत्रणा कहती है.[25] उस समय यह योजना बनाई गयी कि उस स्थिति में क्या करना है जब मानव जाति उनके विरुद्ध हो जाए. अब उस योजना को लागू करने का समय आ गया था. परमेश्वर की पीड़ा का

अनुमान कौन लगा सकता है? क्या अपने बेटे को आदम और हव्वा के स्थान पर मरने की अनुमति देगा और उनके चुनाव की क़ीमत आप चुकाएगा? क्या वह अपने बेटे को यह अनुमति देगा कि वह अपने ऊपर आदम हव्वा की पापमय स्थिति की अयोग्यता और निराशा लेकर कब्र में चला जाए. क्या वह अपने बेटे को अनुमति देगा कि वह अपनी पूरी पहिचान खोकर उसके पुत्रत्व से अलग होकर उस पीड़ा और कष्ट सहे कि उसके हृदय से यह चीख़ निकल पड़े,''तूने मुझे क्यों छोड़ दिया?''

जब मैं ये शब्द लिख रहा हूँ, मेरा बेटा शान्ति से ठीक मेरे सामने बैठा हुआ है. जब मैं उसकी ओर मुड़कर उसके सुन्दर चेहरे को देखता हूँ तो मेरा हृदय में उसके लिए प्रेम और आनन्द से भर जाता है. फिर मैं अपने आपको परमेश्वर के स्थान पर रखने की कल्पना करते हुए मेरे बेटे को ऐसे लोगों के एक समूह के दण्ड को अपने ऊपर लेने की अनुमति देता हूँ जो मुझसे और जो कुछ मैं हूँ उस सब से घृणा करते हैं. मैं स्वीकार करता हूँ कि मेरा दिमाग़ ऐसे विचार सोचने से भी मना कर देता है. मेरा अचेतन दिमाग़ कहता है कि ऐसा विचार भी मेरे लिए इतना अधिक पीड़ादायक है जैसे कि मैं बेहोश होकर गिर जाऊँगा! मेरे विचार परमेश्वर और उसकी दुविधा पर लौटते हैं और मैं सुन्न पड़ जाता हूँ. मेरा दिल परमेश्वर के लिए गहनतम आभार से भर जाता है कि उसने ऐसा होने दिया, यह जानते हुए मैं उन यात्रियों में से एक था और बहुत वर्षों तक इस बात के लिए धन्यवाद तो दूर मुझे स्वर्गीय स्टेशन मास्टर और उसके महान बलिदान के बारे में कोई समझ भी नहीं थी. यह विचार मुझे हमेशा रोक देता है और रुक कर मैं उसके असीमित प्रेम और बलिदान के लिए धन्यवाद करते हुए उसकी आराधना करता हूँ.

मैं अचंभित हूँ कि परमेश्वर का बेटा जो बाद में यीशु बना, हमारे लिए यह करने के लिए तैयार था. बाइबल बताती है कि परमेश्वर प्रत्येक बात को आदि से अन्त तक जानता है, और जब पिता ने अपना यह ज्ञान अपने पुत्र के साथ बाँटा, वह देख सकता था कि पृथ्वी पर तिरस्कार, पिटाई, उपहास, नफरत, श्राप, गालियाँ, नंगापन और क्रूस पर अंधकार, उसके ऊपर अरबों आत्माओं की अयोग्यताओं का भार, सैकड़ों पीढ़ियों की ग्लानि और दु:खों का बोझ उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे. उसने यह सब देखा फिर भी परमेश्वर का पुत्र कहता है, ''हे मेरे परमेश्वर, मैं तेरी इच्छा पूरी करने से प्रसन्न हूँ, और तेरी व्यवस्था मेरे अन्त:करण में बसी है.'' परमेश्वर का बेटा अनेच्छा से यह करने के लिए सहमत नहीं हुआ, वह स्वयं ही ऐसा करना चाहता था. पिता के हृदय के समान उसका हृदय परमेश्वर की संतानों को उनकी नियति होने के आनन्द की भरपूरी से भरकर पुन:स्थापित करने के लिए उत्सुक है. यह परमेश्वर किस किस्म का है? इसकी तुलना हम किससे करें और उसकी महिमा के लिए कौन से शब्द उचित हो सकते हैं? हमने पिछले अध्याय में देखा था कि आदम और हव्वा को जीवन चलाने वाली शक्ति, और सत्य और झूठ में भेद करने की क्षमता, उन्हें परमेश्वर के बारे में सच्चाई को देखने और शैतान उन्हें जो झूठ बता रहा था उसको पकड़ने, बेनकाब करने और त्यागने की क्षमता की ज़रूरत थी. उन्हें एक नैतिक कंपास की आवश्यकता थी कि वेआत्मिक उत्तर को पहचान सकें. संसार के लिए ये सब चीज़ें परमेश्वर के पुत्र के उपहार के द्वारा उपलब्ध करवाई जाएँगी. आदम और हव्वा को यह बात उत्पत्ति 3:15 में बताई गईं. सीधे

शैतान से बातें करते हुए परमेश्वर ने उससे यह कहा:

और मैं तेरे और इस स्त्री के बीच में, और तेरे वंश और इसके वंश के बीच में बैर उत्पन्न करूँगा; वह तेरे सिर को कुचल डालेगा, और तू उसकी एड़ी को डसेगा. उत्पत्ति 3:15

यह आयत प्रतिज्ञाओं और आशा से भरी हुई है. परमेश्वर ने कहा कि वह शैतान और स्त्री के बीच में बैर उत्पन्न करेगा. जब परमेश्वर स्त्री की बात करता है तो वह उन सब की बात करता है जो उसके द्वारा इस संसार में आएँगे अर्थात् वह संपूर्ण मानव जाति की बात कर रहा है. बैर शब्द का अर्थ शत्रुता या दुश्मनी है.[26] परमेश्वर मानव परिवार कि ह्रदय में कुछ ऐसा उत्पन्न करेगा जो बुराई से घृणा करेगी और भलाई तथा सच्चाई की इच्छा रखेगा. केवल एक ही कारण हो सकता है कि परमेश्वर ऐसा करे, क्योंकि उसका पुत्र इस पृथ्वी पर आकर मानव परिवार को अपने जीवन और मृत्यु के द्वारा पुन: स्वर्गीय परिवार के साथ एक करने वाला था. स्त्री के वंश और शैतान के वंश या संतान के बीच में बैर होने का यही अर्थ है. रोमियों के पत्र की निम्नलिखित आयतों में पौलुस इस बैर का वर्णन अनुग्रह या शक्ति के रूप में करता है:

पर जैसी अपराध की दशा है, वैसी अनुग्रह के वरदान की नहीं, क्योंकि जब एक मनुष्य के अपराध से बहुत लोग मरे, तो परमेश्वर का अनुग्रह और उसका जो दान एक मनुष्य के, अर्थात् यीशु मसीह के अनुग्रह से हुआ बहुत से लोगों पर अवश्य ही अधिकाई से हुआ. रोमियों 5:15

सही को चुनने की योग्यता सीधे ही इस बैर से आती है जो परमेश्वर ने अपने पुत्र के वरदान के द्वारा हमारे दिलों में डाला है. यही वरदान तो सबसे अधिक बड़ा वरदान है जो जीवन प्रदान करता है.[27] पौलुस भी रोमियों के उसी अध्याय में इसका वर्णन करता है:

इसलिए जैसा एक अपराध सब मनुष्यों के लिए दण्ड की आज्ञा का कारण हुआ, वैसा ही एक धर्म का काम भी सब मनुष्यों के लिए जीवन के निमित्त धर्मी ठहराए जाने का कारण हुआ. रोमियों 5:18

यह वह अनोखी सच्चाई है जो ऐसी शान्ति और आनन्द प्रदान कर सकती है जिसकी तुलना नहीं की जा सकती है. ऊपर बताई गई सच्चाई यही बताती है कि आप जो भी श्वाँस लेते हैं(चाहे आप परमेश्वर के पुत्र और उसके बलिदान पर पर विश्वास करें या न करें) वह सीधे ही यीशु मसीह के द्वारा प्राप्त होती है. यह उसका जीवन है जिससे आपका ह्रदय धड़कता है, आप श्वाँस लेते हैं और आप जीवित रहते हैं. वे सब गतिविधियाँ जो स्वेच्छा से नहीं होती हैं वे सब परमेश्वर की ओर से स्वेच्छा से ही होती हैं. सबसे बड़ी सच्चाई यह कहती है:

परमेश्वर ने ऐसा इसलिए किया है कि वे परमेश्वर को ढूँढ़ें, कदाचित उसे टटोलकर पाएँ, तौभी वह हम में से किसी से भी दूर नहीं. क्योंकि हम उसी में जीवित रहते, और चलते फिरते, और स्थिर रहते हैं: प्रेरितों के काम 17:27,28

परमेश्वर हम में से किसी से दूर नहीं है क्योंकि हम यीशु मसीह की शक्ति के द्वारा, हमारे बदले में क्रूस पर उसकी मृत्यु द्वारा संभाले जाते हैं. यदि आपको ऐसा लगे कि आप परमेश्वर से दूर हैं तो सच्चाई यह है कि परमेश्वर हम में से किसी से भी दूर नहीं है. आप अपनी नाड़ी को महसूस करें और पाएँगे कि परमेश्वर ने आपको छोड़ा नहीं है.

इसके साथ यह तथ्य जोड़ दीजिए कि परमेश्वर आपके दिल में सही कार्य करने की इच्छा और बुराई का विरोध करने की चाहत डालता है, इस प्रकार धन्यवाद देने के लिये हमारे पास बहुत सी बातें हैं. उन समयों के बारे में सोचिये जब आप कुछ बुरा करना चाहते थे, तब आपने इसके बारे में कुछ बेहतर सोचा और फिर वह नहीं किया. यह वह उपहार था जो परमेश्वर ने आपको दिया था. इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप परमेश्वर में विश्वास करते हों या न करते हों, यीशु के द्वारा आपको यह उपहार फिर भी दिया गया है. बाइबल में हमें बताया गया है कि परमेश्वर धर्मी और अधर्मी दोनों पर मेंह बरसाता है.[28] कल्पना कीजिए कि कितनी ही बार शैतान ने आपको नुकसान पहुँचाने या आपका जीवन या संपत्ति हर लेने के लिए किसी के मन में बुरे विचार डाले हैं, और फिर परमेश्वर द्वारा उनके मन में बुराई के लिए बैर डाला गया जिससे उसने वह बुरा विचार त्याग दिया. यह सही है कि हमारे हाथों में अभी इस प्रेरणा को नकारने और बुरा करने का चुनाव करने की शक्ति है, परन्तु यदि वह बैर न होता तो हममें से कोई भी उस बुराई को करने से अपने आपको नहीं रोक पाता जो शैतान के द्वारा हमारे मनों में डाली जाती है.

क्या अद्‌भुत है हमारे परमेश्वर जो हमारे लिए यह सब करता है! इंसानों की एक नस्ल के रूप में हम सब शैतान के बुरे कामों के लिए पूरी तरह से खो चुके थे. हम सब पूरी तरह से अपनी सहायता करने की हदों से पार हो चुके थे और पूरी तरह से विनाश को प्राप्त करने वाले थे. परन्तु हमारे करुणामय स्वर्गीय पिता ने हमारे लिए हिम्मत नहीं हारी. उसने हमारे लिए अपना सबसे क़ीमती वरदान अपना पुत्र दे दिया है. यीशु हमेशा मानव परिवार का हिस्सा और हम में से एक बना रहेगा. यह वह बलिदान है जो शेष अनन्तकाल तक हमारे अध्ययन और विचार का मुख्य विषय बना रहेगा.

जब आप इन बातों के विषय में सोचते हैं, परमेश्वर ने आपके लिए जो कुछ किया है उसके विषय सोचते हुए आपको कैसा लगता है? परमेश्वर का आत्मा आपको खींच रहा है कि आप उसे स्वीकार करें और उसके बारे में जो सच्चाई है उसे स्वीकार करें. वह चाहता है कि आप यह जाने कि वह आपको अपने दिल-ओ-जान से प्रेम करता है और आपके प्रेम को पुन: पाने के लिए उसने अपना सब कुछ क़ुर्बान कर दिया है. मैं इस तरह के प्रेम का प्रतिरोध नहीं कर सकता हूँ, यह तो मेरे लिए अद्‌भुत रूप से शक्तिशाली है. आप क्या कहते हैं?

8. दोनों राज्यों की तुलना करना

इससे पहले हम आगे बढ़ें, मैं सोचता हूँ कि यह बेहतर होगा यदि हम उन दोनों राज्यों की आपस में तुलना कर लें जो संसार में पाये जाते हैं. परमेश्वर का सनातन राज्य और शैतान का राज्य जो आदम और हव्वा के सामने अदन की वाटिका में पेश किया गया था. यदि हम एक पल के लिए सोचें कि एक राज्य की परिभाषा क्या होती है, तो तीन गुण हैं जिन पर हमें ध्यान देना होगा:

1. **सरकार.** एक सिस्टम जिसके द्वारा राज्यों पर शासन किया जाता है, जैसे प्रजातंत्र या तानाशाही.
2. **मुद्रा.** मूल्य सिस्टम जिसके द्वारा उस राज्य के नागरिक अपनी चीज़ों की अदला-बदली कर सकते हैं.
3. **नागरिकता.** एक ऐसा तरीका जिसके द्वारा यह तय किया जाता है कि कोई इंसान उस विशेष राज्य का नागरिक कैसे बन सकता है.

हम निम्नलिखित रीति से दोनों प्रकार के राज्यों में तुलना कर सकते हैं:

	परमेश्वर का राज्य	शैतान / संसार का राज्य
सरकार	परिवार	सबसे ताक़तवर
मुद्रा	प्रेम मय रिश्ते	पूँजी
नागरिकता	परमेश्वर की संतान	सफलता प्रस्तुतियाँ और उपलब्धियाँ जिनका आप तथा दूसरे लोग मूल्याँकन करते हैं

परमेश्वर का राज्य परिवार पद्धति पर आधारित है. सरकार का मुखिया पिता होता है. लीडर और उसके नागरिकों के मध्य में रिश्ते घनिष्ट और निकटता वाले होते हैं. दूसरी ओर शैतान के राज्य में सबसे बलवान का राज्य है. जो सबसे अधिक शक्तिशाली होते हैं वे राज्य करते हैं. प्रजातंत्र में भी जो अपने संदेश को सबसे ताक़तवर तरीक़े से प्रचार कर सकते हैं और जो मतदाताओं को सबसे ताक़तवर तरीके से समझाने में सफल हो सकते हैं, वे शक्तिशाली बन जाते हैं.

परमेश्वर के राज्य में रिश्तों की ताक़त का व्यापार होता है. स्वर्ग की मुद्रा प्रेम है. यहाँ के नागरिक पिता के प्रेम में सुरक्षित है, और उन्हें अपनी अहमियत या मूल्य साबित करने की कोई ज़रूरत नहीं है. बिना किसी गुप्त मनसा के वे एक दूसरे की संगति का निर्भय होकर आनन्द ले सकते हैं. परमेश्वर के विषय में सीखना सबसे बड़ा आनन्द और आकांक्षा है [29] और क्योंकि परमेश्वर का ज्ञान और बुद्धि और चरित्र असीमित है, यह आनन्दमय कार्य कभी भी समाप्त नहीं होगा. परमेश्वर के बारे में सीखने के लिए हमेशा कुछ न कुछ बचा ही रहेगा. इसके नागरिक परमेश्वर के विषय में ज्ञान सीधे या फिर उन वस्तुओं के द्वारा प्राप्त करते हैं जो उसने बनाई हैं. इसलिए एक दूसरे पर ध्यान देना और प्रकृति और विश्व के बारे में सीखना भी इस राज्य का आनन्दमय कार्य है. चूँकि यह स्पष्ट रूप से मान लिया गया है कि प्रत्येक वस्तु परमेश्वर से ही प्राप्त होती है, इसलिए सारी सृष्टि बड़े आनन्दमय कृतज्ञता और धन्यवाद के साथ परमेश्वर की आराधना करती है.[30]

इसके ठीक विपरीत, शैतान के राज्य में व्यापार इसके नागरिकों की पूँजी से होता है. हमारी अहमियत उन चीज़ों से होती है जो हमने हासिल की हैं, इसलिए अहमियत हासिल करने के लिए पूँजी जमा करना महत्वपूर्ण होता है. ये पूँजियाँ वस्तुओं, मानसिक या रिश्तों की दौलत के रूप में हो सकती हैं. जितना बड़ा आपका घर हो, जितने अधिक ख़िलौने आपके पास हों, उतनी अधिक अहमियत आप हासिल कर सकते हैं. आपकी शिक्षा का स्तर जितना अधिक ऊँचा हो, आपकी पदवी जितनी ऊँची हो, आपकी अहमियत उतनी ही अधिक होगी. जो लोग आपके साथ जुड़े हुए हैं वे बहुत महत्वपूर्ण हैं क्योंकि आपके कार्य के लिए एक इंसान एक बड़ी पूँजी हो सकता है. शैतान का राज्य विश्वास करता है कि शक्ति लोगों के अन्दर ही होती है, इसप्रकार यदि आपके नियंत्रण में जितने अधिक लोग होंगे, आप उतने ही अधिक शक्तिशाली बन जाएँगे. लोगों के साथ रिश्ता एक ऐसा साधन बन जाता है जिसके द्वारा आप अधिक हासिल कर सकते हैं. इससे दूसरे लोगों पर नियंत्रण रखना बहुत महत्वपूर्ण हो जाता है. दूसरों के साथ भलाई और मित्रता का व्यवहार करना एक सामान्य बात है. विक्रेताओं के द्वारा इसे हमेशा प्रयोग किया जाता है. बड़े काम करने से अधिक लोगों को प्रभावित किया जा सकता है, और जब ये बातें काम न करें तो आप ताक़त, ब्लैकमेलिंग और डराने के द्वारा लोगों पर नियंत्रण प्राप्त करके उनकी राजभक्ति हासिल कर सकते हैं. यही कारण है कि आज इतने अधिक रिश्ते दर्द और दु:ख से भरे हुए हैं, क्योंकि लोग प्राय: अपनी अहमियत और मूल्य बढ़ाने के लिए एक साथ जुड़ जाते हैं.

दूसरा विरोधाभास जो हमने नोट किया है वह नागरिकता का है. परमेश्वर के राज्य में आप परमेश्वर की संतान होने के नाते उसके नागरिक बन जाते हैं. जीवन में चाहे जैसे भी हालात हों, चाहे

कितनी ही परेशानियाँ हों, यह सच्चाई कभी नहीं बदलती है. आपकी नागरिकता इसलिए सुरक्षित है क्योंकि परमेश्वर आपका पिता है. शैतान के राज्य में आपको नागरिक आपके द्वारा कुछ किये जाने या न किये जाने पर निर्भर है. उपलब्धियाँ और आलस दोनो ही तब तक आपकी नागरिकता को बरकरार रखेंगे जब तक आपका फोकस कुछ करने और प्रदर्शन करने पर केन्द्रित है. इस राज्य में प्रति भोर को उठकर आप सोचते हैं कि आप ऐसा क्या करें कि आपको अपने बारे में अच्छा महसूस हो. यदि लोग आपकी राहों में बाधा बनते हैं तो आप क्रोधित और कुण्ठित हो जाते हैं. यदि शाम को आपको ऐसा लगता है कि आज आपने कुछ खास हासिल नहीं किया है तो आप अपने अन्दर एक खालीपन महसूस करते हैं और या तो आप निराश हो जाते हैं या फिर अगले दिन और अधिक मेहनत करने का निश्चय करते हैं. ज़िंदगी घमण्ड और अयोग्यता के चारों ओर घूमने वाला एक पहिया है. जब आप हासिल करते हैं तो आप घमण्ड करने लगते हैं और जब आप हासिल नहीं कर पाते हैं तो आप अयोग्य हो जाते हैं. सफलता और असफलता के बीच में जीवन या तो प्राप्त करने के लिए चिढ़ा हुआ दृढ़ निश्चय है या फिर उल्टा डर कि जो आपने कमाया है वह कहीं खो न जाए. यह चक्र तब तक समाप्त नहीं होता जब तक या तो आप मर नहीं जाते या फिर अपना राज्य बदल नहीं लेते हैं.

शैतान के राज्य काभावनात्मक चक्र

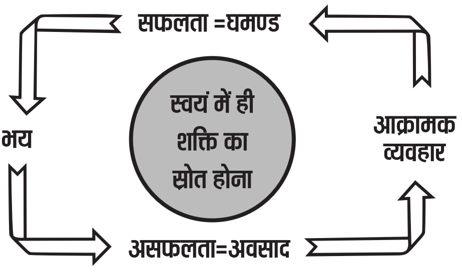

इस चक्र का साधारण सा कारण यह विश्वास करना है कि सामर्थ्य हमारे अपने ही अन्दर है. यदि हमारे अन्दर सामर्थ्य है तो हमें किसी पर भी निर्भर नहीं हैं और अहमियत भी किसी से नहीं पाते हैं. हमें ख़ुद ही अपनी अहमियत बनानी और हासिल करनी होगी. प्रत्येक सफलता हमारा समर्थन करती है और प्रत्येक असफलता हमें शून्य की ओर लेकर जाती है.

मुझे याद है मेरे दिल में किस प्रकार का संघर्ष होता था जब मैंने उपदेश देना आरम्भ किया था. जब मैं लोगों को बाइबल की सच्चाईयों में लेकर जाता था तो मैं आशीषित महसूस करता था परन्तु जब दरवाज़े पर खड़े होकर लोगों का अभिवादन करता था जब वे बाहर जा रहे होते थे तो मेरे दिल में यह सुनने की बड़ी लालसा रहती थी कि मैंने अच्छा उपदेश दिया था–जो मैंने किया था उसके लिए समर्थन. जितना बेहतर मेरा उपदेश होता था उतना ही अधिक मेरा दिल लोगों के समर्थन की चाह करता था. मैं जानता हूँ कि ऐसा सोचना ग़लत है, इसलिए जब तक लोग मुझसे कहते थे कि मैंने अच्छा प्रचार किया, मैं

कहता था, ''परमेश्वर का धन्यवाद करो, मेरा नहीं'' परन्तु यह भी भद्दा लगता था और लोग सोचते थे कि मैं उन्हें दूर ढकेल रहा था. जब हमने यह पहचाना कि सभी उत्तम वस्तुएँ परमेश्वर द्वारा मिलती हैं और हमारी अहमियत परमेश्वर की ओर से है जिसका हमारे कार्यों से कोई संबन्ध नहीं है तब तो हम बिना किसी चिन्ता या अयोग्यता की भावना और दूसरे लोगों की सराहना के बिना सफल और असफल होने के लिए स्वतंत्र हैं.

परमेश्वर के राज्य में भावनात्मक चक्र

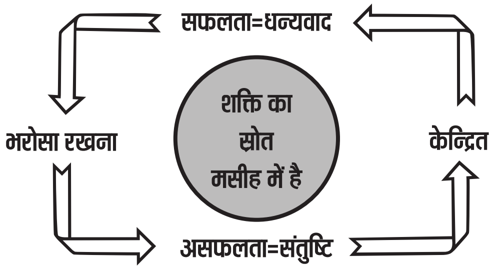

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि परमेश्वर के राज्य के सदस्य अपनी अहमियत अपने कामों से नहीं पाते हैं, फिर भी वे उपलब्धियाँ हासिल करते हैं. वास्तव में उनके अन्दर अधिक प्राप्त करने की क्षमता है क्योंकि जब वे असफल होते हैं तो अयोग्यता के भय का सामना करने की चिंता नहीं रहती है. फिर भी उन्हें प्रेम मिलता है, अभी भी वे परमेश्वर की संतान हैं चाहे वे सफल हों या असफल हो जाएँ. परमेश्वर का राज्य आपके रिश्ते को बिगाड़े बिना और आपकी अहमियत को समाप्त किये बिना ही आपकी पूरी क्षमता के अनुसार तरक्की करने के लिए आपको सबसे बढ़िया अवसर प्रदान करता है.

इन दो राज्यों के स्वभाव के बारे में हमने संक्षेप में रूपरेखा पेश की है. इस किताब के शेष पन्नों में हम यह देखेंगे कि मानवीय इतिहास में ये दोनों राज्यों का कैसे विकास हुआ है और इन राज्यों में रहने वाले कौन कौन से संघर्षों से होकर गुज़रते हैं. दोनो ही राज्य स्वतंत्रता का वायदा करते हैं, दोनो ही राज्य बहुत कुछ देने का वायदा करते हैं, परन्तु कौन सा राज्य आपको अहमियत का गहरा अहसास और मूल्य प्रदान करेगा जो हिल न सके?

9. बाबुल का हृदय

''हमने ग़लती कहाँ पर की?'' एक पिता के टूटे हुए दिल की दुहाई जब वह उन हालातों को समझने का प्रयास कर रहा था जिनका वह अभी सामना कर रहा था.'' हमारे पास अच्छी पारिवारिक स्थितियाँ थीं और वह जानता था कि हम उसे प्रेम करते थे'' उस पिता ने कहना जारी रखा जबकि वह इस बात को समझने का प्रयास कर रहा था कि उसका बेटा ड्रग्स रखने, चोरी और हत्या करने के अपराध में क्यों पकड़ा गया था.

दिल तोड़ने वाली वे आहें हमारी कल्पना से भी कहीं अधिक बार निकली हैं. माता-पिता अपने उस बच्चे के कारण पीड़ा और शर्मिन्दगी की ज़िंदगी जीने के लिए मजबूर हैं जिन्होंने बगावत और बुराई की ज़िन्दगी अपना ली है. दिल तोड़ने वाली इस पीड़ा का पहला स्वाद हमारे आदि माता पिता को अपने बेटे कैन की त्रासदी में देखने को मिला. माता पिता को वह आनन्द प्राप्त होगा जो आदम और हव्वा को प्राप्त हुआ था जब उन्होंने अपने पहलौठे बेटे कैन को अपनी गोद में लिया था. उनके प्रेम का फल उनके हाथों में था कि वे उसका आनन्द लें. जब हव्वा ने अपने बहुमूल्य बेटे को दुलारा, तो वह बोल उठी, ''मैंने प्रभु से एक पुरुष पाया है.''[31] हव्वा ने विश्वास किया कि कैन ही प्रतिज्ञा की संतान है जिसका वायदा उत्पत्ति 3:15 में किया गया था जो जातियों के लिए चंगाई और आशीष प्रदान करेगा. काश कि यही सच होता, क्योंकि हव्वा के लिए कड़ुवी विडम्बना यह थी कि कैन के वंश के द्वारा लाखों लोगों को कष्ट, विनाश और मौत प्राप्त होगी. कैन आराधनकों के ऐसे समूह का मुखिया बन गया जो अपनी शर्तों पर आराधना करना चाहता था. इस समूह के लोगों की संख्या संसार में ज़्यादा है, जिन्हें बाइबल की भाषा में ''बाबुल'' नाम से पुकारा गया है. इस अध्याय में हम इस समूह के लोगों को प्रेरित करने वाली बातों की खोज करेंगे और यह भी देखेंगे कि ये बातें मुझे और आपको किस प्रकार प्रभावित करती हैं.

''डैडी, हमें इस बेचारे निर्दोष मेम्ने को क्यों मारना पड़ता है?'' मानव परिवार के सामने बध किया हुआ मेम्ना रखा गया था, उनके उद्धार की क़ीमत जो परमेश्वर के द्वारा अपने पुत्र का बलिदान करने के द्वारा चुकाई जाएगी. यह एक रस्म थी जो आने वाली आशा और बीते समय की शर्मिन्दगी दोनो की ओर इशारा करती थी. यह परमेश्वर के तसल्ली देने वाले अद्‌भुत् प्रेम की याद दिलाने के साथ साथ मनुष्य की ऐहसान फ़रामोशी और स्वार्थ को भी याद दिलाती थी. इस आराधना में शामिल होने से हमेशा ही मिली जुली भावनाएँ पैदा होती थीं. शान्ति के साथ रक्त बहाते हुए निर्दोष मेम्ने के चेहरे को देखने मात्र से मनुष्य

को उसके उद्धार की क़ीमत समझ मे आ जाती थी. उन सबके लिए जो परमेश्वर के सच्चे मेम्ने के चेहरे को देखते हैं, उद्धार की क़ीमत समझ में आते ही हमेशा उनके दिल उम्मीद के साथ साथ आत्मा की पीड़ा से भी भर जाते हैं. यदि ऐसा न किया जाए, या तो आत्मा निराशा से भर जाएगी या फिर भयभीत करने वाले इस दृश्य से दूर भागकर इंसान मानवीय इतिहास को पुन: लिखने का प्रयास करेगा जिसमें ऐसी किसी पतन की बात से इनकार किया जाएगा. यदि हम परमेश्वर के प्रेम पर जो उसने अपने पुत्र को देने के द्वारा किया है, संदेह करने लगें, तो क्रूस प्रकाश से अन्धकार में, आशा के प्रतीक से शर्मिन्दगी के प्रतीक में बदल जाएगा.

अपने माता-पिता द्वारा मेम्ने को बध करते समय आने वाले वंश की प्रतीक्षा, आशा, धैर्य और आत्मविश्वास मिश्रित आँसुओं के साथ करते हुए देखने के अनेक वर्षों बाद, कैन ने फैसला किया कि वह दीनता को ज़रूरी बताने वाले शर्मिन्दगी के दृश्य को अब नहीं देख सकता.मानवीय असफलता को बेनक़ाब करने वाले बध किये हुए मेम्ने को देखना, कैन ने ऐसे वरदान में परमेश्वर के महान प्रेम को याद न करने का चुनाव किया. कैन के लिए, मेम्ना केवल असुरक्षा की भावना जगाता था, पहलौठे के अधिकार का एक भाग उसे अपने पिता से मिला था, जो उसे शैतान से प्राप्त हुआ था. कैन के लिए मेम्ना केवल यही कहता था कि परमेश्वर उसे उसकी ही शर्तों पर स्वीकार नहीं करेगा और यह कि परमेश्वर उसके व्यवहार को स्वीकार नहीं करता था. निश्चय ही शैतान ने कैन को साहसी क़दम उठाने के लिए प्रोत्साहित किया होगा कि वह अपनी आराधना में से मेम्ने के बलिदान को निकाल कर बाहर कर दे. बाइबल बताती है कि कैन परमेश्वर के लिए फलों की भेंट लेकर आया.[32] हमें यह भी बताया जाता है कि कैन एक किसान था जो अपने कार्य के द्वारा अपना भोजन पैदा करता था. कैन की भेंट उसके हाथों के कार्यों के द्वारा परमेश्वर का सम्मान पाने का प्रयास का प्रतीक थी. उसने अपने आराधना अनुभव को विनम्र विश्वास से एक घमण्ड भरे दिखावा और घन्ष्ठिता एवं भरोसे भरे रिश्ते से क्रोध शान्त करने वाली आराधना में बदल लिया. ऐसा धर्म इस सच्चाई को नज़रअंदाज़ करता है कि हम परमेश्वर के साथ मोल भाव नहीं कर सकते हैं; हमारे पास हमारा अपना जीवन नहीं है जिसके सहारे हम परमेश्वर से अपनी ही शर्तों पर मिल सकें. अफसोस, कैन इस बात को भूल गया. शैतान ने उसे मेम्ने की शर्मिन्दगी से आज़ादी दिलाने का वायदा किया था, किन्तु मेम्ने को अलग करने के बाद कैन का धर्म सच्चे परमेश्वर के साथ विश्वापूर्ण रिश्तों से अपने ही हाथों से बनाए गये देवता के समक्ष कार्यों पर आधारित रस्म में बदल गया. इस बदलाव में कैन ने ड्यूरासेल के ज़हर को अपना लिया, उसने कार्यों द्वारा ड्यूरासेल बंग्गी रस्सी से छलाँग लगाई, और जबकि आरम्भ में उसने जोश भरी आज़ादी के भाव को महसूस किया, परन्तु यह तभी तक था जब तक रस्सी अपनी हद तक पहुँच गयी और ज़हर ने काटना शुरू कर दिया.

पाँचवे अध्याय में हमने भावनात्मक दाग़ों में से कुछ एक के विषय में सीखा था जो पारिवारिक रिश्तों के टूटने के कारण लगते हैं. उनका यहाँ पर साराँश दिया जा रहा है:

- निरन्तर अनुमोदन की चाहत

- अपने आपको बड़ी सख्ती से दोषी ठहराना
- जिन परिस्थितियों पर उनका कोई नियंत्रण नहीं है उन पर प्रतिकूल प्रतिक्रिया करना. अर्थात् वे प्राय: बहुत अधिक नियंत्रण चाहते हैं.
- रिश्तों में परेशानी होना [33]

जब कैन उसको बचाने के लिए परमेश्वर द्वारा निर्धारित योजना से हट गया, वह परमेश्वर से दूर हो गया; उसके पारिवारिक रिश्ते पूरी तरह टूट गये. इस दूरी ने उसकी असुरक्षा की भावना को ज्वलंत कर दिया; अब परमेश्वर का आत्मा उसके भय को शान्त करने और शैतान के झूठ का सामना करने में उसकी सहायता करने में उसकी मदद नहीं कर सकता था. खालीपन और शर्मिन्दगी का भाव बढ़ता ही चला गया. शैतान के समान ही कैन ने भी परमेश्वर के साथ टूटे रिश्तों को बहाल करने का व्यर्थ संघर्ष किया. उसने चाहे कितनी ही कोशिश की किन्तु वह उस खालीपन को भरने में कभी सफल नहीं हुआ जब तक कि वह भावनात्मक रूप से पुन: परमेश्वर के पास, उसके राज्य और उसकी योजना के पास नहीं आया.

कैन की अशान्त भावनाएँ बहुत जल्दी ही फटने वाली थीं. यह बलिदान के समय हुआ जब कैन और उसका भाई हाबिल परमेश्वर की आराधना करने के लिए आये. परमेश्वर ने हाबिल के बलिदान को आग से भस्म करने के द्वारा स्वीकार किया, किन्तु उसने कैन के बलिदान को छुआ तक नहीं. कैन को क्रोधित करने के लिए इसी की ज़रूरत थी. पाप अत्यधिक अतार्किक होता है. कैन, दिये गये निर्देशों का पालन नहीं करता है, और जब यह उसके लिए काम नहीं करता है तो वह भयभीत होकर अचंभा करने लगता है.

कल्पना कीजिए कि आप एक दुकान में जाकर केक बनाने की सभी सामग्री ख़रीदकर लाते हैं. आप दुकानदार से पूछते हैं कि केक कैसे बनता है, और वह आपको घर लाने के लिए कुछ वस्तुओं की लिस्ट दे देता है. सब कुछ ठीक चल रहा है जब तक आप ख़मीर की महक सूँघ कर मन में कहने लगते हैं कि ब्रेड इसके बिना ही बेहतर रहेगी. आप इसे ऑवन में ठूँस देते हैं और थोड़ी देर बाद आपको एक बहुत बुरी सी चपटी सी ब्रेड मिलती है. अब क्रोध में आकर दुकानदार के पास दौड़ जाने और उसके ऊपर अपना गुस्सा निकालने से क्या कोई फायदा होने वाला है क्योंकि उसने आपको एक घटिया कुक बना दिया है. शायद ही ! लेकिन कैन ने परमेश्वर के साथ ठीक यही किया.

कैन उस स्थान के निकट पहुँचने वाला है जहाँ से वापसी संभव नहीं है. शैतान के राज्य के स्वीकार करने के कारण जहाँ अहमियत उसके अपने प्रयासों और प्रदर्शनों पर निर्भर है, उसमें मार्गदर्शन करने और सुधारने की क्षमता बहुत तेज़ी से समाप्त होती जा रही है. कैन जानता है कि उसने ग़लत काम किया है, परन्तु मानव दिमाग़ अपने आपको आसानी से धोख़ा दे सकता है और नम्रता से परमेश्वर के सामने दीन बनाने के बजाए वह नाराज़ हो जाता है. बड़ी कोमलता से परमेश्वर कैन की मदद करने और उसे सुधारकर उसका ध्यान प्रतिज्ञा किये हुए उसके बेटे के उपहार की ओर लाने का प्रयास करता है, किन्तु कैन चेतावनी पर कोई ध्यान नहीं देता है. विद्रोह की उसकी भावनाएँ बढ़ती हैं और अन्धकार के राज्य ने इसके मानवीय प्रयोग को पूरी सफलता के साथ लगभग पूरा कर लिया है.

अब तक कैन का दिल पूरी तरह से उन भावनात्मक शक्तियों से भर गया है जो शैतान ने स्वर्ग में छोड़ी थीं. वह परमेश्वर का अनुमोदन तो चाहता है लेकिन अपनी ही शर्तों पर. उसके अयोग्यता का भाव इतना अधिक बढ़ चुका है कि वह बस फटने ही वाला है. अपनी अहमियत और मूल्य की लालसा को पूरा करने के लिए उच्च शक्तियों से अनुमोदन की लालसा करते हुए वह एक भयानक स्थिति में फंस गया है, जबकि वह इस बात को नज़रअन्दाज़ करना चाहता है कि जो कुछ उसके पास है वह परमेश्वर की ओर से ही मिला है इसलिए मेम्ने के प्रबन्ध के लिए विनम्रता से परमेश्वर का धन्यवाद करना चाहिए. अभी भी सुलगते हुए, उसके भाई हाबिल के सामने खुले रूप से अपमानित करने के लिए, वह उससे बहस करने लगता है. कैन की आराधना के तरीके के लिए हाबिल उसको चुनौती देने लगता है और उसे परमेश्वर की योजना पर वापस आने के लिये उत्साहित करता है. कैन को इसी की ज़रूरत थी. कुछ उसके अन्दर टूटा. उसके अयोग्यता की भावना ने उसे ऐसी स्थिति में पहुँचा दिया जहाँ पर वह किसी भी बात की परवाह नहीं करता, और जब ऐसा क्षण आता है, शैतान को पूरी तरह से नियंत्रण करने की छूट मिल जाती है. शैतान कैन के दिल में उसके भाई के लिए बड़ी नफरत भर देता है, पारिवारिक रिश्ते भुला दिये जाते हैं, और अब शैतान का राज्य अपने आपको पूरी तरह से प्रकट करता है. जब पहला कत्ल, बहुमूल्य रिश्तों का पहला ख़ून किया गया तो पूरा स्वर्ग देख रहा है. यही होता है जब परमेश्वर के नियमों का उलंघन किया जाता है! स्वर्ग धक्क से रह गया और शैतान और उसके दूतों ने भी क्षण भर के लिए सुन्नपन का अनुभव किया होगा जब हाबिल के जीवन रहित शरीर ने भूमि को ख़ून से लाल कर दिया.

शैतान इस घटना के भय से उसे हिला देता है और कैन के दिमाग़ में ग्लानि इतने गहरे तक भर देता है कि उसे यह कभी भी विश्वास न हो कि परमेश्वर उसे क्षमा कर सकता है. शैतान का यही पागलपन है, वह हमें आज़ादी और आनन्द की प्रतिज्ञा करते हुए हमसे विद्रोह के मार्ग पर चलने के लिए उकसाता है, और जब हम पाप में गिर जाते हैं तो सबसे पहले वही परमेश्वर से हमारे विनाश की माँग करता है. उसी समय यह उसकी आवाज़ है जो हमारे कानों में फुसफसाती है कि हम इतने अधिक बुरे और दुष्ट हैं कि परमेश्वर हमें कभी भी पुनः स्वीकार नहीं करेगा, यह शैतान की ही आवाज है जो हमारी ग्लानि की भावना को इतना अधिक बढ़ा देती है कि हम ऐसी स्थिति में पहुँच जाते हैं कि हम मरना चाहते हैं. मानव जाति के नीच शत्रु-तुझे तेरे क़ायराना कुटिल चालों का प्रतिफल ज़रूर मिलेगा! अब शैतान ने सभी सीमाओं को पार कर गया है अब उसके प्राण के लिए कोई सुरक्षा नहीं बची है और शैतान उसे यह चिल्लाने के लिए विवश कर देता है, ''मेरे पाप ऐसे हैं जो क्षमा नहीं हो सकते.''[34] ये वे सबसे दुखदायी शब्द हैं जिनकी कोई कल्पना कर सकता है. परमेश्वर कैन के पास उसे अपने पास से दूर करने के लिए नहीं बल्कि इसलिए आया था कि उसे दुबारा हासिल कर सके. उसने कैन पर दोष लगाने के लिए यह नहीं पूछा था कि उसका भाई कहाँ था, परन्तु इसलिए कि कैन को पश्चाताप करने और परमेश्वर के पास वापस आने का एक और मौका दे सके. कितने दु:ख की बात है कि कैन ने ये दुख भरे शब्द बोले, ''मेर पाप क्षमा होने से परे है.'' उसने परमेश्वर के बजाए शैतान के शब्दों का यकीन किया. जो उसने बोया वही काटा.

अध्याय 4 के 11 और 12 पद में परमेश्वर एक श्राप की घोषणा करता है. श्राप के अन्तिम भाग में,

परमेश्वर कैन को बताता है कि वह भगोड़ा और भटकने वाला होगा. यह शब्द उस व्यक्ति की तस्वीर पेश करता है जो लड़खड़ाने और हिलने वाला है, यह ऐसे इंसान के बारे में बताती है जिसके पास कोई भविष्य और कोई आशा नहीं है. परमेश्वर ने यह श्राप जादू की कोई छड़ी हिलाकर उस पर लागू नहीं किया था, परन्तु यह श्राप तो परमेश्वर के पारिवारिक राज्य, घनिष्ठ रिश्तों को त्यागने के कारण विरासत में ही मिला था. उसकी आत्मा पीड़ित थी क्योंकि उसकी सृष्टि घनिष्ट रिश्तों के लिये की गई थी परन्तु उसने एक अलग रास्ता–हमेशा प्रेम की चाह, फिर भी उन्हें ख़ुद से दूर करना जो उसके पास आते हैं, नज़दीकी की चाह करना फिर भी लोगों को कभी भी इतने क़रीब नहीं आने देना कि वे उसके दिल के ख़ालीपन को देख सकें, हमेशा दोस्तों की चाहत रखना किन्तु हमेशा अपने प्रतिद्वन्दी की वीरता से सावधान. इस कहावत की सच्चाई यहीं दिखाई देती है,''दुष्टों को कहीं शान्ति नहीं मिलती है.''

बाइबल बताती है कि कैन यहोवा परमेश्वर की उपस्थिति से दूर चला गया.[35] अब उसके विचारों में परमेश्वर के लिए कोई जगह नहीं थी. यह विश्वास करते हुए कि उसके पाप ने उसे परमेश्वर से दूर कर दिया था, उसने परमेश्वर को अपने विचारों से दूर कर दिया. अब सहमति और अहमियत की सबसे अधिक चाह के साथ उसने एक शहर बसाना शुरू किया. वह अपने चारों ओर लोगों को इक्कठा करेगा और उनका लीडर बन जाएगा. वह बड़ी बड़ी इमारतें बनाएगा और उनसे अपनी अहमियत हासिल करेगा. वह अपने चारों ओर अपने हाथों के कामों का ढेर लगाएगा और जहाँ तक हो सकेगा, वह अपने विवेक से परमेश्वर के कार्यों की मौजूदगी के निशान मिटा देगा. वह अपने आपको इतना अधिक व्यस्त कर लेगा कि उसकी आत्मा की दशा जानने के लिए उसके पास समय ही नहीं बचेगा.

और इस प्रकार, कैन इस पृथ्वी पर शैतान के राज्य की स्थापना का माध्यम बन गया. उसके द्वारा एक ऐसी पीढ़ी का विकास हुआ जिसमें असुरक्षा और अयोग्यता के सभी चिन्ह दिखाई दिये. वे शक्ति और पदवी के चाहने, नियंत्रण रखने वाली आत्मा के थे जो किसी प्रतिद्वन्दी से ईर्ष्या रखने, स्वर्ग और पृथ्वी को बनाने वाले परमेश्वर के बिना निरन्तर पहिचान की तलाश में रहती थी. जब तक शैतान मानव जाति को महान व्यक्तिगत और तार्किक परमेश्वर की बाहों के बजाए उसके अपने ही अन्दर अहमियत खोजने में व्यस्त रख सकता था, तब तक वह उन पर नियंत्रण रख सकता था. और उसने ऐसा ही किया है. पिछली हज़ारों पीढ़ियों से शैतान लोगों के एक समूह को अपने नियंत्रण में रखकर उनकी अयोग्य, असुरिक्षत आत्माओं को अपने साथ बाँधकर संसार पर शासन करने की कोशिश कर रहा है.

हमने बाबुल के दिल का अध्ययन किया है, एक दु:खी हृदय अपने कामों के द्वारा, अपनी उपलब्धियों के लिए सहमित हासिल करके और हालात के साथ खिलबाड़ करके जिससे कि उसे कोई धमकी न दे सके, अपनी पहिचान बनाने की तलाश में है. अगले अध्याय में हम इस दिल को विकसित होते हुए देखेंगे जबकि यही मानवीय इतिहास में धड़कता है.

(भाग 2) एक पहिचान
पहिचान की पुनः प्राप्ति

10. इ्यूरासेल की जंजीरों को तोड़ना

जब वे दोनों एक दूसरे को थामे हुए थे एक लम्बा ठहराव रहा. भावनाओं की धाराएँ बह रहीं थीं लेकिन वे दोनों यह जानते थे कि समय आ गया था. युगों युगों से पिता और पुत्र ने सदैव एक दूसरे के साथ घनिष्ट संबन्ध बनाये रखा और अब वे जानते थे कि इस बातचीत के टूटने का समय आ गया था. परमेश्वर का पुत्र अब मानवीय पुत्र और पुत्रियों को पुनः हासिल करने के लक्ष्य को लेकर अपने मिशन पर निकल पड़ता है. पिता और पुत्र ही जोख़िम और क़ीमत को भली प्रकार से समझते हैं, लेकिन प्रेम उन्हें आगे बढ़ने के लिए विवश करता है.

एक क्षण के लिए, पिता और पुत्र भविष्य में मिशन को खुलते हुए देखते हैं. घृणा, तिरस्कार, नफरत, बैर, थूकना, घूँसे मारना, कोड़े मारना, कीलें उस क्षण के सामने फीके पड़ जाते हैं जब स्वर्ग और पृथ्वी साँसे थामकर पिता और पुत्र का बिछुड़ना देखते हैं. पुत्र अपने ऊपर आने वाली ग्लानि, कष्ट, विद्रोह और अयोग्यता को अपने ऊपर आता हुआ और उसे मृत्यु की वेदना के लिए छोड़कर पिता का अलग हट जाने का एहसास करके अपने आप को एक पत्ते के समान हिलता, फटता और बिखरता हुआ देखता है.*36*

आलिंगन की पकड़ सख्त होती जाती है-पिता अपने पुत्र को ऐसी मुसीबत का सामना करने के लिए कैसे भेज सकता है? एक गहरे स्तर पर दोनों ने ही पाप से पराजय और विनाश की संभावनाओं पर विचार किया. परमेश्वर का पुत्र मानवीय स्वभाव स्वीकार करके अपने सबसे बड़े शत्रु शैतान को उस पर जयवन्त होने के लिए सुअवसर की एक खिड़की प्रदान करेगा. क़ामयाबी की कोई गारन्टी नहीं दी गयी थी. वे ऐसे पागलपन की योजना कैसे बना सकते थे जिसमें इतना बड़ा जोख़िम शामिल था. वे ऐसी बेतुकी योजना पर विचार ही कैसे कर सकते थे? फिर भी प्रेम आगे बढ़ने के लिए उन्हें विवश करता है.

लम्बा ठहराव जो अनन्त के समान लम्बा लग रहा था अन्ततः समाप्त होता है, वे दोनो अपनी योजना पर क़ायम रहने का दृढ़ निश्चय करते हैं. पुत्र स्वर्ग के किनारे की ओर क़दम बढ़ाता है, पिता के चेहरे पर एक अन्तिम दृष्टि और फिर वह विदा ले लेता है.

अध्याय 6 में हमने उन बातों की एक लम्बी लिस्ट देखी थी जो परमेश्वर को करने की आवश्कता होगी

यदि वह पृथ्वी पर पाये जाने वाले अपने बेटों और बेटियों को बचाना चाहता था. अध्याय 9 में हमने मनुष्य के मन में शैतान के राज्य का विस्तार होते हुए देखा और यह जाना कि हमारी अयोग्यता का अहसास दिलाकर वह किस प्रकार से वह शासन करता है. यदि यीशु को अयोग्यता के अहसास पर विजयी होना था तो उसे अयोग्यता का यह अहसास ख़त्म करना होगा. परमेश्वर की संतान के रूप में उसे हमारी पहिचान को पुनःस्थापित करना और ड्यूरासेल वृक्ष के द्वारा हासिल की गई झूठी पहिचान पर जयवन्त होना होगा.

अनहोनी के एहसास ने शैतान के हृदय को जकड़ लिया होगा जब उसने स्वर्गदूतों को मसीहा के आने की ख़ुशी में चरवाहों के लिए आनन्द के गीत गाते हुए देखा होगा. वह चमकता हुआ सितारा जिसने बुद्धिमान लोगों की उस विनम्र पशुशाला तक अगुवाई की, उससे उसे कुछ आराम नहीं मिला होगा. कल्पना करें जब शैतान ने इस कुलीन बालक को यह समझते हुए देखा होगा कि वह बालक उसके विनाश के लिए पैदा हुआ था. शैतान उस कुलीन बालक के चेहरे पर छाई हुई सुखमय शान्ति को भंग करने में सफल नहीं हुआ जैसा कि वह अब तक पैदा हुए सभी बच्चों की के चेहरे की शान्ति को भंग करने में सफल हुआ था. यह हैरानी की बात थी कि लहू और माँस के बने इस बालक के चेहरे पर ऐसी शान्ति पाई जाती थी जिसे शैतान भंग करने में में पूरी तरह नाकाम रहा था. शैतान जान गया कि वह अब संकट में फंस गया था.

परेशान आत्मा हेरोदेश के दिल के ऊपर छाई रही और हम देख सकते हैं कि अंधकार के संसार में कितनी अधिक बेचैनी फैल गई थी. हेरोदेश के ऊपर हावी असुरक्षा की भावना ने उसे शैतान के जाल में फंसा कर परमेश्वर के राज्य से लड़ने के लिए उकसा दिया. परन्तु नवजात राजा का शान्तिपूर्ण विश्वास भंग नहीं हुआ परन्तु परमेश्वर ने उसके बचाव का रास्ता निकाल लिया, इसलिए वह अंधकार के शासक के साथ लड़ाई करे और मानवीय शरीर में होकर असुरक्षा की उन जंजीरों को ठुकरा दे जो श्रापित मानव जाति को जकड़े हुए हैं.

यीशु के जीवन को यूहन्ना 8:29 के शब्दों में समझा जा सकता है. "मेरा भेजनेवाला मेरे साथ है; उसने मुझे अकेला नहीं छोड़ा क्योंकि मैं सर्वदा वही काम करता हूँ जिससे वह प्रसन्न होता है." कोई फर्क नहीं पड़ता शैतान चाहे जो कोई भी चाल चले वह उस गौरव और आत्मविश्वास को भंग नहीं कर सका. मसीह पुत्र होने के अपने रिश्ते के साथ जिस तरह से अटल बना रहा उसने तो अंधकार का राजकुमार भी चौंक गया. शैतान निश्चय ही अपने ऊपर बहुत गुस्साया होगा जब वह मसीह को पाप करने के लिए विवश नहीं कर सका. आख़िरकार कोई तो ऐसा आ खड़ा हुआ जो शैतान का सामना कर सकता था.चार हज़ार वर्ष तक प्रत्येक इंसान पर जयवंत होने के बाद शैतान मानवता की चट्टान से टकराया जो परमेश्वर के पुत्र होने के अपने रिश्ते में अडिग बना रहा. पुत्रत्व जयवन्त होने की चाबी थी; पुत्रत्व ही मूल्यहीनता की तेज़ धार जो मानवता को डुबो रही थी उससे बचने का निश्चित उपाय था, इसलिए दो विरोधियों के बीच लड़ाई का मुख्य बिन्दु था.

नासरत शहर उत्तेजना से धड़क रहा है. बपतिस्मादाता का समाचार बड़ी तेज़ी के साथ फैलता है. मसीहा के आगे चलने वाला आ गया था, और जैसे ही यह समाचार विनम्र बढ़ई की दुकान तक पहुँचा, यीशु जान गया कि संघर्ष का समय आ गया था. वह अपनी छेनी और आरी रख देता है, अपनी माँ को गले लगाता है और यरदन नदी की ओर चल पड़ता है.

यीशु अपने पुत्रत्व के प्रति पूरी तरह से आश्वस्त है, परन्तु जंगल में होनेवाला संघर्ष उसकी ऐसी परीक्षा करेगा जैसी अब तक किसी भी इंसान की नहीं की गई थी. टूटते हुए बाँध के समान उसके ऊपर मानवीय कष्टों की बाढ़ आयेगी. यीशु को मानवीय अयोग्यता की ऐसी शक्ति का सामना करने के बाद भी गिबराल्टर की चट्टान के समान अडिग बने रहना होगा. यदि वह अडिग बना रहे तो पहली बार कोई ड्यूरासेल की जंजीरों को तोडने् की स्थिति में होगा. इस विजय का लाभ उन सबकी विरासत हो जाएगी जो यीशु पर विश्वास रखेंगे.

जंगल का संघर्ष क्रूस के कार्य के लिए आधारशिला थी. क्षमा प्रदान करने का क्या महत्व है यदि मनुष्य अपनी अयोग्यता की जंजीरों को नहीं तोड़ सकता है? प्रेम के इतने बड़े प्रकटीकरण से क्या लाभ यदि कोई स्त्री, पुरुष या बालक में इस उपहार को हासिल करने की हैसियत नहीं है! सबसे पहले ड्यूरासेल की अयोग्यता और मूल्यहीनता पर जयवन्त होना जरूरी है और इस पर जयवन्त होने का लाभ मानव जाति के हाथों में रखकर उसे क्रूस के उपहार को हासिल करने के योग्य बनाना है.

पिता जानता है कि क्या होने वाला है और वह संघर्ष समय में अपने पुत्र की सहायता करेगा, शक्तिशाली दिखावे के द्वारा नहीं और न ही सेना के हथियारों के प्रयोग के द्वारा. आने वाले शत्रु का सामना करने में इनमें से कोई भी साधन सक्षम नहीं होगा. परमेश्वर सबसे अच्छा हथियार देता है–वह शक्ति जो उनके एक दूसरे के साथ बने हुए रिश्ते में बंधे रहने से प्राप्त होती है. जैसे ही यीशु पानी से बाहर आता है, और कबूतर उसके ऊपर उतरता है और यीशु अपने पिता की स्पष्ट आवाज़ सुनता है, ''**यह मेरा प्रिय पुत्र है जिससे मैं अत्यन्त प्रसन्न हूँ.**'' ये शब्द वह सबसे तेज़ तलवार हैं जिन्हें संघर्ष करने के लिए पिता अपने पुत्र के हाथ में रख सकता था. अपने पिता के **वचन** में सुरक्षित वह दुष्ट शत्रु से संघर्ष करेगा और हम सब के ऐवज़ में उस जंजीर को तोड़ देगा जिसे आज तक कोई नहीं तोड़ पाया था.

इस कथन का महत्व उससे कहीं अधिक है जितने की अधिकतर लोग कल्पना करते हैं. यह सच्चाई कि परमेश्वर मानवता के एक सदस्य को स्वीकार कर रहा है, हम सभी शेष लोगों के लिए एक बड़ी आशा का संदेश देता है. यीशु के द्वारा परमेश्वर हम सब तक पहुँचता है और हमसे कहता है कि हम सब उसके प्रिय बच्चे हैं. यदि हम कभी क्रूस के उपहार को स्वीकार करने की आशा करते हैं हमें पहले इन बहुमूल्य शब्दों को सुनना ज़रूरी है. ''तुम मेरे प्रिय बच्चे हो और मैं तुमसे अत्यन्त प्रसन्न हूँ.'' इस बात को जाने बिना कि इसमें कोई धोख़ा है या इसके साथ कोई शर्त जुड़ी हुई है किसी अजनबी से कोई भी उपहार

स्वीकार करना असंभव है, परन्तु परिवार के एक प्रिय सदस्य से इसलिए उपहार स्वीकार किया जा सकता है क्योंकि यह एक शुद्ध और साधारण उपहार है. परमेश्वर के पुत्र और पुत्री होने के रिश्ते को स्वीकार किये बिना क्रूस तक आने के लिए कोई और रास्ता नहीं है. कोई भी दूसरा रास्ता कर्मकाण्ड में विश्वास या पाप करने के लायसेंस की राह पर लेकर जाएगा.

स्वर्ग से आये इन शब्दों से शैतान क्रोधित हो गया होगा. इन शब्दों ने उसे याद दिलाया होगा कि एक समय वह पुत्र हुआ करता था लेकिन अब वह इस रिश्ते से बाहर आ चुका था! यह उसकी मूल्यहीनता और अयोग्यता को याद दिलाता है. फिर भी घमण्ड जल्दी नहीं मरता है, और इसलिए शैतान ने जंगल में यीशु के ऊपर परीक्षा रूपी गोला बारूद की बरसात शुरू करने की तैयारी कर ली.

बाइबल का रिकॉर्ड बताता है कि ''जंगल में चालीस दिन तक शैतान ने यीशु की परीक्षा की.''[37] मैं सोचता हूँ कि अधिकांश लोग दस मिनट तक लगातार परीक्षा का सामना नहीं कर सकते, चालीस दिन तो बहुत बड़ी बात है! लोगों को परीक्षा में पराजित करने का 4000 वर्ष का अनुभव था और आप विश्वास करें कि यीशु के ऊपर नरक का प्रत्येक हथियार अज़माया गया था. इस संघर्ष की गहराई को कौन समझ सकता है? सम्पूर्ण विश्व अपनी सांसें रोके हुए देख रहा था जब शैतान परमेश्वर के पुत्र के ऊपर एक के बाद एक हमला कर रहा था. जहाँ तक हमारा संबन्ध है, हम सब सोई हुई दशा में थे जब हमें आज़ाद करने के लिए यीशु ने वीरता पूर्वक शैतान का सामना किया था. यदि यीशु यहाँ पर असफल हो जाता तो हम सब भी मूल्यहीनता की जंजीरों के भार के नीचे कुचल गये होते. अंधकार को चीरने के लिए केवल और केवल यीशु ही हमारी एक मात्र आशा था.

आप जानते हैं, जब मेरे दिमाग़ में ऐसी बातें आती हैं तो मैं रुककर उसके बारे में सोचने लगता हूँ. मेरे कहने का मतलब यह है कि मैं क्या कह सकता हूँ? हमारी बुरी दशा से छुड़ाने के लिए इस सर्वशक्तिशाली राजकुमार के अटल और अडिग और कभी हिम्मत न हारने वाले प्रयास के लिए मेरा दिल उसके प्रति धन्यवाद के आनन्द से भर जाता है. यह तो उन माता या पिता के समान है जो अपने बालकों को आग में से निकालने के लिए अपनी जान की बाज़ी लगा देते हैं. शैतान ने उसे मानसिक रूप से तोड़ दिया था फिर भी मसीह ने हिम्मत नहीं हारी. यह आदमी मेरे दिल में ऐसे विचार पैदा कर देता है कि मैं रोने के लिए विवश हो जाता हूँ–''मेरी भी कोई अहमियत (क़ीमत) है.'' जब तक कोई आपकी परवाह नहीं करता, कोई भी ऐसा नहीं करेगा! मैं आपको बताना चाहता हूँ कि यह प्रेम मुझे इस तरह से खींचता है कि मैं ख़ुद को रोक नहीं पाता हूँ. मैं उसका विरोध करता, परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो कि उसका निश्चय तो मुझसे भी अधिक दृढ़ है!

जब यीशु मानवीय रूप से पूरी तरह दुर्बल दशा में थका हुआ, भूखा और अकेला ऐसी दशा में जब मानवीय स्वभाव सब बातों में समझौते करने के लिए तैयार हो जाता है, उस समय शैतान सबसे बड़ी

परीक्षा लेकर उसके सामने आता है,"यदि तू परमेश्वर का पुत्र है तो कह दे ये पत्थर रोटियाँ बन जाएँ."[38] पुत्रत्व की परीक्षा करने के लिए और कौन सी परीक्षा की जा सकती थी? यीशु को यह नहीं बताया गया था कि कितने दिनों तक उसे रेगिस्तान में रहना पड़ेगा; बाइबल यह नहीं बताती कि उसे यह बता दिया गया था कि चालीस दिन में उसकी परीक्षा समाप्त हो जाएगी. यीशु अभी भी जंगल में ही था और अभी कोई कौआ उसके लिए रोटी लेकर नहीं आया था, स्वर्ग से कोई मन्ना नहीं बरसा था. कहीं ऐसा तो नहीं कि उसने जो आवाज सुनी थी वह स्वर्ग की ओर से नहीं थी? "तुम्हारा पिता नहीं चाहता कि तुम ऐसी दशा में रहो. इसके बारे में कुछ करो," शैतान उसके कानों में फुसफुसाता है.

शैतान भूख के माध्यम के प्रयोग करके यीशु के पिता के वचन में उसका विश्वास तोड़ने की कोशिश कर रहा था. चालीस दिन पहले, परमेश्वर ने कहा था, "*यह मेरा प्रिय पुत्र है जिससे मैं अति प्रसन्न हूँ.*" यदि यीशु पत्थरों को रोटियों में बदलता है तो निश्चय ही वह परमेश्वर के वचन पर संदेह कर रहा है, और यह संदेह उसकी पहचान को भ्रम में डालने के लिए पर्याप्त होगी. इससे भी आगे यीशु से कहा गया है कि वह अपनी पहचान को साबित करने के लिए कुछ करे.यह साबित करने के लिए कि वह कौन है, यीशु से पत्थरों को रोटियों में बदलने के लिए कहना, सीधे ही शैतान के राज्य में पहुँचने के लिए द्वार खोलता है– अपनी पहचान के लिए कार्य करना और उपलब्धि हासिल करना.

हम में से कितने हैं जो अपनी उपलब्धि के द्वारा अपनी अहमियत को साबित करने के जाल में नहीं फंसेगे? यह दिखाने के लिए आपमें सबसे ऊँचे पद पर पहुँचने की क़ाबलियत है, केवल उस पदोन्नति या बोनस को पाने के लिए –नींद और आराम से वंचित और सबसे अधिक प्रार्थना और बाइबल अध्ययन के लिए समय नहीं निकालना, परिवार के साथ समय बिताने के बजाये देर तक अपने कार्यालय में काम करते रहना. हम अपने आप पर इतना बोझ क्यों डालते हैं? मैं विश्वास करता हूँ कि बहुत सी बातों में हम उसी प्रश्न का उत्तर दे रहे हैं "यदि तुम परमेश्वर के पुत्र या पुत्री हो तो यह साबित करने के लिए कुछ खास करके दिखाओ."

क्या आपको ऐसा लगता है कि जब आप सुबह को सोकर उठते हैं तो आप बाइबल अध्ययन और मनन में कुछ समय परमेश्वर के साथ बिताना चाहते हैं तभी आपके दिमाग़ में वे सब काम याद आने लगते हैं जो आपको उस दिन करने हैं, फिर ऐसा होता है कि आप प्रार्थना में केवल 5 मिनट का समय लगाने का समझौता करते हैं और दिन भर के कामों को करने के लिए निकल पड़ते हैं. क्या आपके साथ कभी ऐसा हुआ है? क्यों? यदि आप दिन के अन्त में पहुँचने पर पायें कि उस दिन आप कुछ ज़्यादा हासिल नहीं कर पाये हैं तो, क्या आप फिर भी लगाव रखते हैं और प्रसन्न हैं या फिर आप निराश और उदास हैं? क्या

आपको "बीमारी के कारण" बिस्तर पर लेटे रहने में चिढ़ होती है जबकि उसी समय में आप अपने एक एक कार्य को समाप्त कर सकते थे? ये सब बातें निसंदेह ही एक ही बात की ओर इशारा करती हैं कि हम

सब शैतान को कुछ करके दिखाने की परीक्षा के शिकार हुए हैं. यही कारण है कि हम अपने दिलों की गहराई में असुरक्षा की उस भावना को दबाए रहते हैं जो हमें आदम और हव्वा से मिली है, और हम बड़ी आसानी से अपने आपको ढकने के लिए आत्मिक और मानसिक अंजीर के पत्ते तलाशने में लग जाते हैं. एक असुरक्षित व्यक्ति उसकी पहचान को चुनौती मिलने पर सदैव ही प्रतिक्रिया करेगा जबकि एक सुरक्षित व्यक्ति तो इस बात की परवाह तक न करेगा. यह मुझे उस समय की याद दिलाता है जब मैं अपने एक मित्र के साथ टहल रहा था जिसके पास रॉटवेलर नस्ल का कुत्ता था. हम एक पड़ोसी के घर के पास से निकले जिसके पास एक छोटी नस्ल का कुत्ता था. वह छोटा कुत्ता बड़े कुत्ते का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने के लिए भौंकते, छलाँग लगाते हुए दौड़ रहा था. मुझे लगा कि मानो वह छोटा कुत्ता कह रहा था, '' मिस्टर रॉटवेलर आ जाओ, मैं तुमसे लड़ूगा और अपने मालिक को दिखाना चाहूँगा कि मैं तुम जैसे बड़े कुत्ते को पराजित कर सकता हूँ,'' परन्तु रॉटवेलर तो अपनी पहचान के प्रति पूरी तरह से आश्वत था और उसने उस चुनौती की ओर ध्यान तक नहीं दिया. ऐसा करने से उसकी अहमियत में क्या इजाफा होगा?

यही कारण था कि यीशु को जंगल में जाकर परीक्षा का सामना करना पड़ा था. मानव परिवार को एक ऐसे व्यक्ति की ज़रूरत थी जो यह दिखा सके कि वह विश्वास करता था कि वह परमेश्वर की संतान है क्योंकि परमेश्वर ने ऐसा कहा है, न कि उसे अपने कार्यों के द्वारा यह साबित करने की ज़रूरत थी. संसार को दाऊद जैसे एक इंसान की ज़रूरत थी कि वह गोलियत जैसी शक्तिशाली मूल्यहीनता को पराजित कर सके जिसने हमारे पापों में बाँध कर हमें शैतान का ग़ुलाम बना दिया है. वास्तव में जंगल में मसीह की परीक्षा और दाऊद तथा गोलियत की कहानी में काफी समानताएँ पाई जाती हैं:

1. आत्मिक जीव होने के नाते शैतान यीशु से अनेक बातों में अधिक शक्तिशाली था जबकि यीशु मानवीय स्वभाव के बोझ से दबा हुआ था. 1 शमूएल 17:33

2. यीशु पूरी मानव जाति का प्रतिनिधित्व कर रहा था, इसलिए मसीह की जीत में हम सब की आज़ादी थी, वैसे ही शैतान भी अंधकार की सेनाओं का प्रतिनिधि होकर मसीह का सामना कर रहा था और उसकी जीत का अर्थ था कि हम सब हमेशा के लिए अंधकार की शक्तियों के ग़ुलाम बने रहेंगे.

3. यीशु जंगल में चालीस दिन से शैतान की परीक्षाओं और मज़ाक का सामना कर रहा था ठीक उसी तरह से गोलियत भी चालीस दिन से इस्राएल को ललकार रहा था. 1 शमूएल 17:16

4. शैतान अपनी ही शक्ति में आया था लेकिन यीशु प्रभु के नाम में होकर उसको नाश करने आया था जिसने परमेश्वर की सेना को ललकारा था. 1 शमूएल 17:45

5. यीशु ने जिस हथियार का प्रयोग किया वह कुछ हद तक सांसारिक स्तर का था– उसने परमेश्वर के वचनों पर भरोसा रखा और उनका प्रयोग सटीक तरीके से शैतान के दिमाग़ पर किया.

दोनों में अद्‌भुत् समानताएँ हैं और मैं अपने आपको पहाड़ी पर खड़े हुए उन इस्राएलियों में से एक मानने के लिए विवश हो जाता हूँ, जो गोलियत के द्वारा मेरे परमेश्वर की, मेरे धर्म की और व्यक्तिगत रूप से मेरी अपनी निन्दा सुन रहे थे.''कहाँ है तुम्हारा परमेश्वर? यदि तुम इतने ताक़तवर हो तो मुझसे लड़ते क्यों नहीं? तुम कमज़ोर और बेकार हो और तुम्हारे परमेश्वर पर लानत है?'' चालीस दिन तक लगातार इस प्रकार की लानत की बातें सुनना निश्चय ही निराशा पैदा करने के लिए काफी था. उसका आकार तो देखो! जब उसकी राक्षसी आवाज़ घाटी में गूँजती है तो उसके हथियार सूरज की रौशनी में चमकते हैं. हालात काबू के बाहर दिखाई देते हैं, और सैनिकों में दिल डुबाने वाली भावना कि वे ग़ुलाम बन जाएंगे पनपने लगी थी. क्या आज के हालात कुछ अलग हैं? हम अपनी क़मज़ोरियों और अयोग्यताओं के लिए शैतान के ताने सुनते रहते हैं. उसकी परीक्षाएँ इतनी ताक़तवर और भयानक लगती हैं कि हम उनमें बार-बार गिरते रहते हैं, और दिल डुबाने वाली भावना कि हम शैतान के ग़ुलाम बन कर रह जाएंगे हमारे दिल में पनपने लगती है. यहाँ तक कि ऐसे प्रचारक भी हैं जो कहते हैं कि हम पाप की ग़ुलामी से कभी भी आज़ाद नहीं हो सकेंगे और पाप हम पर हमेशा जयवन्त होता रहेगा. ऐसे विचारों को झटक कर दूर भगाएँ! दाऊद का पुत्र हमारे कैंप में आ गया है और उसने हमें शैतान की ग़ुलामी की जंजीरों से आज़ादी दिला दी है. जंगल में उसकी विजय पूरी मानव जाति की विजय है. आप यह सोचने का चुनाव कर सकते हैं कि आपको अभी भी गोलियत का सामना करना है, या फिर आप पहाड़ी पर खड़े होकर आश्चर्य से यह देखें कि यीशु किस तरह से आपकी परीक्षा का सिर उसके धड़ से अलग करता है. यह सोचने के बजाए कि वह आपको छुड़ायेगा, आप यह विश्वास करें कि यीशु के कारण *आपकी विजय पहले ही हो चुकी है,* तब आपने असली विश्वास प्राप्त कर लिया है.

मैं अत्यन्त खुश हूँ कि दाऊद के पुत्र ने मुझे मूल्यहीनता की शक्ति से आज़ाद कर दिया है. उसने मेरे घमण्ड और विद्रोह के दिल को मुझसे अलग कर दिया है. उसने मेरे पाँव उस दृढ़ चट्टान पर स्थिर कर दिये हैं जो परमेश्वर के पुत्र के रूप में मेरी पहचान करवाती है. उसने ख़ुद मेरे बदले में संदेह का सामना किया है और पिता के वचन पर विश्वास के द्वारा उस पर जय हासिल कर ली है. हे परमेश्वर के पुत्र और पुत्रियों मेरे साथ आनन्द करो और ख़ुशी से गाओ. यीशु ने ड्यूरासेल की जंजीरों को तोड़ दिया है और हमें प्रिय पिता में स्वीकार कर लिया गया है.

11. स्वर्ग के दरवाज़ों का खुलना

अंधकार को चीरती हुई प्रकाश की एक किरण इस बात का संकेत देती है कि दिन निकलने वाला है. यह काम के शुरू होने का भी संकेत करती है. धड़कन बड़ जाती है, साँसे छोटी हो जाती है जब यात्रा के लिए तैयारी की जाती है. जब वे प्रात:काल में बाहर निकलते हैं, अब्राहम के दिमाग़ में यादों के सैलाव उमड़ने लगते हैं. वह उस दिन को याद करता है जिस दिन उसने इज़हाक को पहली बार अपनी गोद में लिया था, और इतने बड़े इन्तज़ार के बाद उन्हें कितनी बड़ी खुशी हासिल हुई थी. वह इज़हाक का पिता के बिस्तर पर कूदना और जब वह आदम और हव्वा, नूह और अनेक दूसरी कहानियाँ ध्यान से सुनने के लिए उससे सटकर बैठना उसके दिमाग़ में घूम रहा था, जब उसने उस काम पर ध्यान दिया तो ये बातें उसके कंधों पर एक भारी बोझ बनकर लटकने लगीं:

अपने पुत्र को अर्थात् अपने एकलौते पुत्र इज़हाक को जिसे तू प्रेम रखता है, संग लेकर मोरिय्याह देश में चला जा; और वहाँ उसको एक पहाड़ के ऊपर जो मैं तुझे बताऊँगा होमबलि करके चढ़ा. उत्पत्ति 22:2

परमेश्वर ने बोला था और अब अब्राहम आज्ञा पालन करने के लिए अपनी पूरी ताक़त बटोरता है. यह बात समझाई नहीं गई और न ही इसका कोई कारण बताया गया, केवल आज्ञा दी गई थी. इतने वर्षों तक अब्राहम परमेश्वर के साथ चलता रहा था, और उसने यह सीखा था कि परमेश्वर की आज्ञाओं का विरोध न करे. उसने भरोसा रखना सीखा था कि परमेश्वर बेहतर जानता था और उसी की राह पर चलना सबसे अधिक सुरक्षित था. लेकिन राह बहुत कठिन थी, कल्पना से भी अधिक कठिन !

अब्राहम के दिमाग़ में संघर्ष कर रहे तूफान को कौन समझ सकता था? बड़ी खुशी से वह अपने पुत्र के स्थान पर बलिदान होना स्वीकार कर लेता. अपने पुत्र को इस मृत्यु से बचाने के लिए वह कुछ भी करने को तैयार हो जाता. अपने दर्द को इज़हाक से छुपाने के प्रयास में अब्राहम की सांसे उखड़ने लगती हैं. यह एक बुरा सपना होगा जो जल्दी ही बीत जाएगा. जब इज़हाक सवाल करता है तो वास्तविकता सामने आ जाती है, ''देख, आग और लकड़ी तो हैं, पर होमबलि के लिए भेड़ कहाँ है?'' अब्राहम के दिल में एक तीर चुभ जाता है. वह क्या उत्तर दे? बुद्धि के लिए एक तीव्र प्रार्थना परमेश्वर के पास पहुँचती है और फिर अब्राहम उत्तर देता है,''हे मेरे पुत्र, परमेश्वर होमबलि की भेड़ का उपाय आप ही करेगा.''

पहाड़ के ऊपर बड़ी दर्द भरी आवाज़ में अब्राहम ने इज़हाक को बताया कि इज़हाक को ही भेड़ के स्थान पर बलि करने की आज्ञा परमेश्वर ने दी है. इज़हाक एक जवान पुरुष हो गया था और वह आसानी से अपने पिता की पकड़ से आज़ाद होकर भाग सकता था, लेकिन इज़हाक ने आज्ञापालन और अनुशासन सीखा था और वह अपनी इच्छाओं को अपने पिता की बुद्धि के सामने समर्पित कर देता है. पूरा स्वर्ग बड़ी उत्सुकता से देखता है जब अब्राहम अपने पुत्र को, अपने प्रिय पुत्र को इस अन्तिम क्षण के लिए तैयार करता है. इंसानी सोच अब विश्वास के ख़िलाफ बहस खड़ी करती है, लेकिन अब्राहम केदार के वृक्ष के समान तूफान के झोंके के सामने मुड़ तो जाता है लेकिन अपने स्वर्गीय पिता की आज्ञा का पालन करने के अपने प्रण से पीछे नहीं हटता है.

सब कुछ तैयार है और अब्राहम अपने पुत्र पर एक दृष्टि डालता है. दर्द उसके दिल को चीरता है और उसकी शक्ति उसका साथ छोड़ने लगती है लेकिन वह फिर भी अडिग रहता है. एक प्रार्थना करने के बाद वह अपने दिमाग़ को अपने पुत्र के ऊपर छुरा चलाने के लिए तैयार करता है जिसके साथ ही उसके प्रिय पुत्र का जीवन समाप्त हो जाएगा.

ठीक उसी क्षण उसे एक आवाज़ सुनाई देती है,' '*अब्राहम ! उस लड़के पर हाथ मत बढ़ा, और न उससे कुछ कर, क्योंकि ...इससे मैं जान गया हूँ कि तू परमेश्वर का भय मानता है.* ''

जब मैं इस कहानी पर ध्यान देता हूँ, मैं अपने आपको अब्राहम के स्थान पर और अपने पुत्र को इज़हाक के स्थान पर रखने के लिए विवश हो जाता हूँ. मैं उस दर्द को समझने की कोशिश करता हूँ जिससे होकर अब्राहम को ग़ुज़रना पड़ा किन्तु तुरन्त ही तस्वीर रुक जाती है. कोई बात मेरे दिल में उतरती है और तस्वीर को पूरा होने से रोकती है. भावनात्मक रूप से मैं इस तरह के दृश्यों को नहीं सह सकता हूँ.

क्रूस पर मसीह की दर्दनाक और डरावनी मौत को समझने के लिए हमें पिता और पुत्र के रिश्ते की गहराई में झाँकना पड़ेगा. उनके राज्य के गुण उनमें दिखाई देते हैं, जीवन के प्रति उनका दृष्टिकोण उनके आपसी प्रेम से प्रकट होता है. यदि हम क्रूस के रिश्तों की इस गहराई को न जोड़ें तो हम निश्चय ही निशाना चूक जाएँगे.

> *क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखाा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए.* यूहन्ना 3:16

किसी इंसान के जीवन में एक बहुमूल्य रिश्ते का टूटना सबसे अधिक दु:खदायी अनुभव है. अपने प्रिय जनों से दूर होने का डर प्रत्येक मानव के दिल में झाँकता रहता है. केवल एक हफ्ते तक सुसमाचार प्रचार के काम से परिवार से दूर रहने पर मेरा दिल मेरे प्रियों से मिलने के लिए तड़पने लगता है. इस दुनिया में

ऐसा कुछ भी नहीं है जिसके लिए मैं अपने परिवार के साथ अपने रिश्ते को तोड़ दूँ. ऐसा सोचना भी डरावना लगता है, और जब हम परमेश्वर के दिल में जैसा कि बाइबल में दिखाया गया है, हम पाते हैं कि परमेश्वर हमारा पिता और उसका पुत्र दोनों एक दूसरे से सदैव के लिए अलग होने के लिए तैयार, यदि मैं और आप स्वर्ग में प्रवेश पाने का हक़ पाकर हमारे सृष्टिकर्ता के साथ एक हो जाएँ.

कोई कह सकता है, ''हाँ, लेकिन यीशु जानता था कि वह मुर्दों में से पुन: जी उठेगा और अपने पिता के साथ एक हो जाएगा, इसलिए यह कोई बुरा नहीं था.'' यदि आपने अपने दिल में ऐसे विचारों को आने दिया है तो मैं आपसे कहूँगा कि आप यीशु से पूछो कि उस समय कैसा लग रहा था जब वह, ''हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों छोड़ दिया?'' जब विद्रोही संसार के पापों का भार उसके ऊपर उंडेल दिया गया और पापों से घृणा करने के कारण उसके पिता के प्रेम पर पर्दा पड़ गया था, यीशु ने उस अंधकार के बीच में उस प्रेमी चेहरे की तलाश की जो हमेशा से उसके आनन्द का स्रोत रहा था, परन्तु उसे केवल अलगाव और क्रोध ही नज़र आया. उसकी आशा निराशा में बदल गयी और उसे अपने सामने केवल मौत का तांडव नज़र आने लगा; उसने महसूस किया कि वह सदैव के लिए अपने प्रेमी पिता से दूर हो जाएगा इसलिए वह चिल्ला उठा, ''हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों छोड़ दिया?'' केवल एक मिनट इसके बारे में सोचिए, यह बहुत ही अनोखा है, बहुत ही अनोखा.

यह सवाल केवल एक ही बात पूछता है कि हमारे और उसके बीच में पायी जाने वाली बाधाओं को दूर करने के विषय में परमेश्वर कितना अधिक गंभीर है? अब्राहम और इज़हाक की कहानी में परमेश्वर को शामिल कीजिए और कल्पना कीजिए कि यीशु का स्थान लेने के लिए कोई मेम्ना प्रकट नहीं हुआ और न ही अपने ही हाथों से अपने ही पुत्र को बलिदान करने के दिल चीरने वाले काम से रिहाई देने के लिए किसी ने पिता के हाथ को रोकने के लिए अपना हाथ आगे बढ़ाया. उस संकटमय दिन में जब हमारे पापों के कारण सबसे महान प्रेम का बंधन टूटा था तो भूकम्प और अंधकार के बीच में, मैं पिता के दिल की पुकार को सुनता हूँ,''हे मेरे पुत्र, हे मेरे पुत्र, मैं तुझे कैसे त्याग सकता हूँ? मैं तुझे कैसे नाश होने दे सकता हूँ?'' यही तो नरक का अलगाव है. पिता और पुत्र दोनों ने अपने संबंधों के टूटने में नरक के अलगाव को महसूस किया. नरक का सार, परमेश्वर के राज्य-प्रेममय घनिष्ट संबंधों के वितरीत होने के अलावा और क्या हो सकता है?

इसलिए हमारे लिए इसका क्या अर्थ हो सकता है? इसका मतलब है कि परमेश्वर के पुत्र ने हमारे बदले में स्वर्गीय प्रेम से अलगाव के आतंक का स्वाद चखा कि हमें इसका अनुभव करना न पड़े.''हे मृत्यु तेरी जय कहाँ रही? हे मृत्यु तेरा डंक कहाँ रहा?''[39] अब जो कुछ मसीह ने और उसके पिता ने हमारे लिए किया है उसकी वज़ह से परमेश्वर के प्रेम से हमें कुछ भी अलग नहीं कर सकता है.

हमारे लिए स्वर्ग का दरवाज़ा खुल गया है क्योंकि परमेश्वर के पुत्र ने नरक के दरवाज़े के हमेशा के लिए बन्द कर दिया है, कि हमें वहाँ प्रवेश करके उन लोगों के रोने और दाँत पीसने के अनुभव का कभी भी

सामना न करने पड़े जो लोग यीशु के कार्य को त्याग कर हमेशा के लिए स्वर्गीय प्रेम से अलग हो चुके हैं. जो चुनौती हमारे सामने रह जाती है वह यह है कि हमें अपने मन में अपनी मूल्यहीनता, विद्रोह और हठ की दशा से (अपने कार्यों के द्वारा पहचान बनाने के प्रयास) जीवन के स्रोत की ओर यात्रा करना है, जहाँ पर प्रेम हमारी प्रतीक्षा कर रहा है और हम जानते हैं कि हम परमेश्वर की प्रिय संतानें हैं. हालाँकि यीशु ने हमारे लिए स्वर्ग का दरवाज़ा खोल दिया है, फिर भी हमें ड्यूरासेल के राज्य से निकलकर परमेश्वर के राज्य की ओर, अपने कार्यों के द्वारा पहचान बनाने से परमेश्वर के पुत्र और पुत्री होने के द्वारा या दूसरे शब्दों में कार्यों द्वारा उद्धार से विश्वास द्वारा उद्धार पाने की ओर यात्रा करना होगी. इस किताब का शेष भाग इस यात्रा की चुनौतियों और सुविधाओं के लिये समर्पित रहेगा.

भाग 3
पुत्रत्व की ओर वापस यात्रा

12. ड्यूरासेल के द्वारा चलने वाला जीवन

कमरे में अपेक्षाओं का माहौल है. मैं अपने साथी विद्यार्थियों के साथ ऑडोटोरियम में बैठा हूँ और एक परिचित नाम सुनने की इच्छा कर रहा हूँ. उस वर्ष मैंने कठिन मेहनत की थी और जबकि मैंने अपने आपसे कहा था कि इससे कोई फर्क नहीं पड़ता, मेरे दिल में एक गहरी इच्छा बढ़ने लगी थी.

स्कूल उस वर्ष अनेक विद्यार्थियों को उनकी उपलब्धियों के लिए पुरुस्कार दे रहा था. इस घटना के दौरान मैं अपने मन में एक बहुत ही रुचिकर खेल खेलता हूँ. ''इस वर्ष तुमने कठिन मेहनत की है, अगला पुरुस्कार तुम्हें मिल सकता है..., नहीं, यह तो किसी और को मिलेगा... फिर भी तुम्हारे लिए भी संभव है.'' जब नाम पुकारे जाने का समय आता है तो, उम्मीद से मेरे दिल की धड़कन बढ़ जाती है और तब मैं जो नाम सुनता हूँ वह मेरा नहीं परन्तु मेरे एक मित्र का है. यहाँ पर खेल रुचिकर हो जाता है. बाहरी तौर से तो मैं अपने मित्र के लिए तालियाँ बजा रहा हूँ लेकिन मेरे अन्दर एक अलग ही दृश्य चल रहा है: ''यह इनाम उसे क्यों मिला? मैंने उससे कठिन मेहनत की, मुझे विश्वास नहीं होता कि वे यह पुरुस्कार उसे दे सकते हैं. आह, मैं समझ गया कि उन्होंने यह पुरुस्कार उसे क्यों दिया. वह उनमें से एक शिक्षक का रिश्तेदार है और इसीलिए उन्होंने उसे चुना है. इसमें तो धोखा है; इसमें यह नहीं है कि आप क्या जानते हैं बल्कि आपको कौन जानता है.'' जबकि मैं मुस्कुराते हुए तालियाँ बजा रहा हूँ और शान्त दिखाई देने का प्रयास कर रहा हूँ. बादल छाने लगते हैं और अगले कुछ घन्टों तक मैं कुछ हद तक निराश और नाराज़ नज़र आता हूँ. ड्यूरासेल द्वारा चलने वाला यह एक और दिन है.

एक बच्चे को यह समझने में ज़्यादा देर नहीं लगती है कि यदि वे चाहते हैं कि उनका महत्व हो और उन्हें स्वीकार किया जाए, उन्हें अपने साथ के बच्चों में अव्वल आना होगा. तुलना करने वाले संसार में स्वागत है. क्या कभी आपके साथ ऐसा हुआ है कि आपने अपने उस बच्चे के जन्मदिन के लिए उपहार ख़रीदा हो और उसके दूसरे भाई-बहन के लिए कुछ न ख़रीदा हो? घर में प्राय: कोहराम मच जाता है और जिस बच्चे को उपहार नहीं मिला है, वह रोते और चिल्लाते और कभी कभी तो बौखलाहट में इन शब्दों की रट लगाने लगता है, ''यह तो अन्याय है.'' फिर पार्क में ''मुझे देखो'' प्रतियोगिता होती है. आप अपने एक बच्चे को फिसल पट्टी पर फिसलते हुए देखकर मुस्कराते हैं. आपके पीछे से एक दूसरी आवाज़ आती है,''मुझे देखो'' और आप अपने दूसरे बच्चे को झूले पर झूलते हुए देखते लगते हैं. आपका ध्यान किसी दूसरी वस्तु पर चला जाता है और आप अपने एक बच्चे की ''मुझे देखो'' पुकार पर ध्यान नहीं दे पाते हैं, और फिर मशीन गन की तरह आपके ऊपर ''मुझे देखो'' की झड़ी लग जाती है, प्रत्येक ''मुझे देखो''

आवाज़ में तेज़ी और तीव्रता बढ़ती जाती है. फिर हम दोपहर के भोजन के लिए बैठ जाते हैं और जैसे आप भोजन शुरू करने वाले होते हैं, आप यह प्यारी और छोटी सी धुन सुनते हैं,''उसे मुझसे ज़्यादा मिला है, यह तो अन्याय है, मुझे भी और चाहिए.'' यह उस जीवन की कहानी है जो ड्यूरासेल की मदद से चलता है. जैसे जैसे हम उम्र में बढ़ते हैं, हम अधिक सभ्य होते जाते हैं, लेकिन तुलना करना और दूसरों का ध्यान अपनी ओर खींचने वाली आदत बनी रहती है.

अधिकतर स्कूल की किताबें तुलना और ध्यान खींचने की ज़रूरत को भली भाँति पहचानते हैं. घर के प्रेम भरे वातावरण से दूर, अपनी उम्र के बच्चों का झुण्ड, ड्यूरासेल के सिद्धान्तों पर चलने वाली संस्कृति के लिए बिल्कुल सही वातावरण पैदा करता है. अगले 12 वर्ष एक या एक से अधिक क्षेत्रों में दूसरों की तुलना में आगे निकलकर एक सुन्दर और सुखी भविष्य हासिल करने की होड़ में बीतेंगे. हमारी पश्चिमी संस्कृति अधिक बुद्धिमान का पक्ष लेती दिखाई देती है. दूसरों से अधिक बुद्धिमान होना एक ऐसा गुण है जो आपको बहुत आगे तक लेकर जाएगा. कभी आपने सोचा है कि वे बच्चे जो बातों को दूसरों से अधिक याद रखने की क्षमता रखते हैं उन्हें उन बच्चों की अपेक्षा अधिक इनाम मिलते हैं जो अपने हाथों से बेहतर कार्य कर सकते हैं?[40] क्या आप एक विश्वविद्यालय में इस आधार पर प्रवेश पाने की कल्पना कर सकते हैं कि आपको अपने बगीचे की देखभाल करना आती है या फिर आप कार का इंजन सुधार सकते हैं? ये काम करने वाले लोगों के लिए दूसरी जगहें हैं, लेकिन भाग्य तो उनका साथ देता दिखाई देता है जिनके पास शिक्षा की सबसे ऊँची डिग्रियाँ हैं.

साल दर साल बच्चे अपने रिपोर्ट कार्ड्स घर लेकर आते हैं, और वे अपने आपको अपनी सफलता के आधार पर आँकने लगते हैं. मैंने ऐसे कई हालात देखे हैं जहाँ एक व्यक्ति हाथ का अच्छा कारीगर है लेकिन पढ़ाई में वह बहुत अच्छा नहीं है. इसके परिणाम स्वरूप आप उन्हें अक्सर ऐसा कहते हुए सुन सकते हैं,''यह मुझसे नहीं हो सकता,'' या''मैं ऐसा कभी नहीं कर पाऊँगा,'' या फिर एक दम सीधा जबाव,''ऐसा करना मेरे बस की बात नहीं है.''

लेकिन डरे नहीं, सफल होने के दूसरे तरीके भी हैं. प्रत्येक स्कूल में खेलों के आयोजन की व्यवस्था है जिसके द्वारा बच्चे खेल कूद में आगे निकल सकते हैं. बच्चे इस आशा में कि एक दिन उन्हें भी वह शक्ति और महिमा मिल सकेगी जिसकी वे उम्मीद लगाये बैठे हैं, शारीरिक दक्षता हासिल करने के लिए हज़ारों घन्टे प्रैक्टिस में लगाते हैं. हम सब जानते हैं कि खेल तो बस एक खेल है, ठीक? वर्ल्डकप के दौरान यूरोप की गलियों में उपद्रव मचाते हुए इंग्लिश फुटबाल प्रेमियों से यह बात कह दीजिए. उस आदमी के बारे में सोचिये जो क्रिकेट वर्ल्ड कप में अपनी टीम को हारते हुए देख रहा है. इसलिए उसको दिल का दौरा पड़ा और मैच ख़त्म होने से पहले ही वह मर गया. और अनेक खिलाड़ियों को चमड़े के एक टुकड़े को दो छड़ियों में बीच में टकराने के बदले में लाखों डॉलर क्यों दिये जाते हैं? खेल एक गंभीर व्यवसाय है जैसे कि यह वह सब कुछ हासिल करने के लिए जिसकी आपने कल्पना की है, जिसे अपने प्रयास द्वारा

प्राप्त करने और लोगों को ध्यान अपनी ओर खींचने के लिए यह एक आसान सी राह दिखाता है. ड्यूरासेल सिस्टम को बढ़ावा देने और इस विश्वास को ख़त्म करने कि आप अपनी अहमियत उपलब्धि के बजाए संबन्धों के द्वारा हासिल कर सकते हैं, का काम करता है.

खेलों के विषय में सबसे अधिक रुचिकर बातों में से एक बात यह है कि चाहे आप कितना ही बढ़िया प्रदर्शन करें, यदि आप पहले स्थान पर न आकर दूसरे स्थान पर आते हैं तो कोई भी आपका नाम याद नहीं रखेगा. हारने का भावनात्मक सदमा विनाशकारी हो सकता है. मुझे याद है मैं फुटबाल खिलाड़ी को देख रहा था जो पैनाल्टी शूट आउट में गोल न कर पाने के कारण जिसकी वज़ह से उसकी टीम बहुमूल्य ट्रॉफी जीतने से वंचित रह गई थी, वह एक छोटे बालक के समान सुबक-सुबक कर रो रहा था. मुझे याद है कि मैंने उसके कोच को उसे संभाल कर मैदान से बाहर ले जाते देखा था, जो यह देख रहा था कि गोल न कर पाने के कारण वह खिलाड़ी अपनी कितनी कम अहमियत आँक रहा था. हाँ, यह वह खेल है जो अहमियत और स्वीकार किये जाने के लिए खिलाड़ियों के लिए जीने या मरने का संघर्ष बन गया है.

हम और भी दूसरे ईश्वरों को गिनवा सकते हैं जिनके विषय में हम सोचते हैं कि वे हम पर अनुग्रह करके हमारी मन चाही ख़ुशी और कामयाबी दिला सकते हैं. शारीरिक सुन्दरता का एक क्षेत्र है. गला काट संसार में आप अपनी शारीरिक सुन्दरता, आपके गाल की हड्डी का आकार या आपके सीने के आकार के आधार पर ख्याति हासिल कर सकते हैं. कितनी जवान स्त्रियों को आप जानते हैं जो हर रात सोने की कोशिश में रोती रहती हैं क्योंकि वे अपने लक्ष्य तक नहीं पहुँच सकी हैं. अभी हम 'अनोरेक्सिया' अरुचि की बढ़ती हुई समस्या को देख रहे हैं जिसमें मुख्यतया महिलाएं अपने आपको असंभव छोटे आकार में लाने के लिए भूखी रहती हैं.

पैसा कमाने, पद पाने या एक छोटे से स्थान में मशहूर होने के क्षेत्र में क्या कहना. मैंने सफेद पोश कार्पोरेट संसार में कुछ वर्ष तक काम किया है और इनके काम करने के तरीके को देखना काफी रुचिकर है. आप किसी आदमी की पदवी का अनुमान उसके कार्यालय के फर्नीचर का प्रकार और गुणवत्ता देखकर लगा सकते हैं. सबसे बड़े अधिकारी का एक अलग कमरा होता है जिसकी खिड़की से नीचे की गली साफ दिखाई देती है. उसकी कुर्सी में हाथ टेकने के हत्थे और उसकी ऊँचाई दूसरों की कुर्सियों से अधिक होती है. उसकी मेज़ बड़ी और शानदार होती है जिसके ऊपर सबसे नया कम्प्यूटर रखा होता है. दूसरे व्यक्ति के पास भी उसका अपना कार्यालय होता है लेकिन उसकी खिड़की से वह सबकुछ नहीं दिखता है जो उसके बॉस के कमरे की खिड़की से दिखता है. उसकी कुर्सी और मेज़ उतनी शानदार नहीं होती है और उसका कम्प्यूटर उतना अधिक तेज़ नहीं चलता है. उसके नीचे वाले अधिकारी का ऑफिस बँटा हुआ होता है, उसकी कुर्सी में हाथ टिकाने वाले हत्थे नहीं होते, उसके पास कॉर्डलेस फोन नहीं होता और उसके कमरे में कोई खिड़की भी नहीं होती है. इसे देखकर हँसी आती है, लेकिन कार्पोरेट संसार में यह एक गंभीर व्यवसाय है. आपके साथियों से तुलना करने के लिए ऑफिस का फर्नीचर एक महत्वपूर्ण

प्रभाव छोड़ता है.

ड्यूरासेल के संसार में तुलनात्मक बातों की लिस्ट बहुत लम्बी है लेकिन वे निम्नलिखित किसी न किसी श्रेणी में ही आती हैं.

1. शिक्षा का स्तर

2. शारीरिक क्षमता

3. पद/ आमदनी का स्तर

4. शारीरिक सुन्दरता

5. संसारिक धन संपत्ति

7. जाति/ धर्म

ये वे देवता हैं संसार जिनकी पूजा इंसान इस उम्मीद से करता है कि वे उससे प्रसन्न होकर उसेआशीषित करेंगे. वे कठिन परिश्रम करवाने वाले स्वामी हैं और यदि आप उनका अनुग्रह चाहते हैं तो वे आपसे संपूर्ण समर्पण की माँग करते हैं. प्राय: वे आपसे आपके परिवार और मित्रों के त्याग की माँग करते हैं और यदि आप खुशकिस्मत रहे तो शून्य में विलीन होने से पहले आपको सफलता का स्वाद चख़ने को मिल सकता है. ड्यूरासेल की शक्ति के द्वारा हम सब इन देवताओं के ग़ुलाम बन जाते हैं और स्वर्ग और पृथ्वी को बनाने वाला परमेश्वर हमें इन्हीं देवताओं से बचाना चाहता है.

13. स्वर्ग के लिए सीढ़ियाँ

दिन छोटे और सर्द होते जा रहे थे; ठण्ड शुरू होने ही वाली थी. छोटी सी खुशहाल वादी में शीघ्र ही शुरू होने वाली कंपकपाती सर्दी से निपटने के लिए गर्मी प्रदान करने की तैयारी के लिए यह लकड़ी काटकर ढेर लगाने का समय था. घर का मुखिया लकड़ी काटने में व्यस्त था कि उसने एक जोड़ी पैरों को अपनी ओर आते हुए देखा. उसने देखा तो पाया कि एक छोटा लड़का उसकी प्रत्येक गतिविधि को बड़े ध्यान से देख रहा था.''मेरे पिताजी इससे भी अधिक तेज़ी से लकड़ी चीर सकते हैं.'' ''क्या ऐसा है?'' लड़के की बहादुरी पर ताज्जुब करते हुए उसने उत्तर दिया. ''वे वास्तव में कर सकते हैं!''''मेरे पिता जी कुछ भी कर सकते हें. वे सबसे अच्छे हैं.''''अच्छा, ऐसे पिता जी होना तुम्हारे लिए एक सौभाग्य की बात है.''

मेरा बचपन ऐसी सादगी में बीता. ये ऐसे दिन थे जब मम्मी और डैडी कोई ग़लती नहीं कर सकते थे और वे दोनों ही कल्पनाओं से परे कमाल के थे. किन्हीं मायनों में उस दशा में बने रहना बहुत अच्छा होता परन्तु ऐसा होना मुमकिन नहीं था. थोड़े समय बाद स्कूल में निरन्तर बरक़रार तुलना के घेरे में, जिसमें मैं अपने साथी विद्यार्थियों के बीच में जिनके साथ मैं शिक्षा प्राप्त करने का अनुभव बाँट रहा था, उनके बीच में मैंने अपने आपको अपनी पहचान तलाश करते हुए पाया. प्राथमिक शिक्षा के दिनों में तुलना का स्तर बहुत अधिक कठोर नहीं था और इसीलिए मैं अपनी प्रारम्भिक शिक्षा के अनुभव को बड़ी खुशी से याद करता हूँ. बहुत सी शिल्पकलाएँ और खेल कार्यक्रम होते थे, जिनमें काफी आनन्द आता था. परन्तु भविष्य में ऐसा समय भी आया जब मुझे ड्यूरासेल राज्य के कड़वाहट भरे अनुभव से होकर गुज़रना पड़ा.

जब मैं सात वर्ष का था मेरा परिवार एक नये स्थान पर आ गया और मैं शीघ्र ही नये समूह के बच्चों के बीच में अपनी पहचान बनाने में लग गया. मैं जल्दी दोस्त बना लेता था, लेकिन मैंने कुछ नटखट शरारती बच्चों का सामना भी किया. बचपन में मैं शरीर से बलवान हुआ करता था और कुछ दुबले पतले बच्चों ने सोचा कि वे मुझे उपहास का केन्द्र बना सकते थे,क्योंकि मैं शरीर रचना में उनसे कुछ अलग था. ''फैटसो,''''फैट अलबर्ट'' और ''स्लोब'' ये कुछ नाम मुझे याद हैं जो मुझे दिये गये थे. हममें से बहुतों को बचपन में होने वाला यह एक भयानक अनुभव था. यह लगभग हर दिन होता था. आत्माओं का शत्रु मेरी अहमियत को ख़त्म करने के लिए इन लड़कों का प्रयोग कर रहा था. एक दिल सबुह को स्कूल जाते समय मैंने फैसला किया कि अब बहुत हो चुका.''मम्मी, मैं कार से बाहर नहीं निकलूँगा, मैं स्कूल

नहीं जाऊँगा.'''' तुम वास्तव में मेरे बेटे हो.'' ''नहीं, मैं नहीं हूँ!'' जब हम कार में जा रहे थे, मैंने देखा कि डरावना जोड़ी मुझे ऐसे देख रही थी, जैसे गिद्ध अपने शिकार पर हमला करने की दृष्टि से देखते हैं. मम्मी ने कार का दरवाज़ा खोला और मुझे बाहर निकालने की कोशिश की. अगले कुछ मिनट काफी भावुक थे. मैंने हाथ-पैर फेंके, रोया-चिल्लया और अपनी सीट से चिपके रहने की कोशिश की. एक हठी और अनुशासनहीन लड़के के समान, लेकिन एक व्यक्ति के रूप में जब मेरी अहमियत की भावना आहत हो रही थी, अपने आपको बचाने के लिए मैं कुछ निडर होकर क़दम उठा रहा था. मुझे याद नहीं कि उसके बाद क्या हुआ लेकिन एक बात याद है कि उन लड़कों ने मुझे परेशान करना बंद कर दिया. जो कुछ आगे होने वाला था यह उसका वास्तविक स्वाद था.

बच्चों में नज़र आने वाली क्रूरता शैतान के तुलनात्मक राज्य के क्रियाशील अनाड़ी और बेलगाम सिद्धान्तों के ही परिणाम है. बच्चे जिस प्रकार की स्वार्थपरता और कृतज्ञहीनता की भावनाओं को बचपन में दिखाते हैं उसे देखकर हम प्राय: अचम्भा करते रह जाते हैं. क्या हम ऐसे गुणों से बाहर निकल पाते हैं? नहीं! जैसा कि हमने सीखा है कि दाऊद के पुत्र की मदद के बिना कोई भी इस राज्य को छोड़ नहीं पाता है. हम जैसे जैसे बूढ़े होते जाते हैं, हम अधिक चालाक और सभ्य होते जाते हैं.

जब तक मैं हाईस्कूल में पहुँचा, में भली प्रकार से अभस्त हो चुका था. मैं शिक्षा के देवता, खेल के देवता, शारीरिक सुन्दरता के देवता की पूजा करना सीख रहा था. मैं धन के देवता की पूजा करना चाहता था लेकिन मेरे पास अभी नौकरी नहीं थी! मेरे चारों ओर पाई जाने वाली हर चीज़ यही कह रही थी कि मुझे अव्वल आने के लिए प्रयास करना था, उपलब्धि पाने के लिए प्रयास करना था. मैंने सीखा कि केवल जीतने वालों को ही स्वीकार किया जाता है और हारने वालों की कोई अहमियत नहीं होती है. कई बार स्कूल में बेहतर करने के लिए मुझे प्रेरणा कक्षा में पहला स्थान पाने की संभावना को ध्यान में रखकर मिली थी न कि उस पाठ में मैं जो कुछ सीख रहा था, उसका आनन्द लेने के उद्देश्य से. मैं टेलीवीज़न पर ऐसी फिल्में देखा करता था जो इस विश्वास का समर्थन करती हों. मुख्य पुरुष कलाकारों को इस रूप में दिखाया जाता था कि उन्होंने कुछ ऐसी उपलब्धि हासिल की थी जिसकी वज़ह से जवान लड़कियों के दिल उनके लिए पिघल गये थे. इसने मुझे यह सिखाया कि रिश्ता एक ऐसी वस्तु थी जिसे आपको हासिल करना है, और एक जवान लड़की एक मित्र के बजाए एक वस्तु थी जिसे आपको हासिल करना था. ऐसा नहीं कि आप ऐसा कहते बल्कि यह सब आपके अवचेतन दिमाग़ में चल रहा होता है.

यह सपने देखने का समय था. मैं प्राय: अपने बिस्तर पर लेट कर सपने देखता रहता था कि एक क्रिकेट मैच में मैं ऑस्ट्रेलिया के लिए जीतने वाले रन बना रहा था या फुटबॉल में अन्तिम गोल मार रहा था या किसी लड़की को परेशानी में से निकालने के लिए अपना कोई अंग खो रहा था. इन सपनों ने मेरी अहमियत के ताने बाने को बुना.

जितना अधिक मैं सोचता था उतना ही अधिक इन लक्ष्यों को हासिल करने के बारे में मैं ठानता जाता था. कठिन बात यह थी कि इन लक्ष्यों को हवा में हासिल नहीं किया जा सकता था. मुझे दूसरे लोगों को हराना आवश्यक था. मैं अपने मित्र चाहता था लेकिन मैं अपने सपनों को अपने मित्रों से पहले चाहता था. जब तक मेरे सपनों पर कोई आँच नहीं आ रही थी मैं एक सभ्य इंसान नज़र आता था, लेकिन जब मुझे लगता कि मेरे सपनों को चुनौती दी जा रही थी, लड़ाई शुरू हो जाती थी.

मैंने अपने लक्ष्य हासिल करने के लिए कठिन मेहनत की. मैंने अपने खेलों में और अपनी पढ़ाई में दूसरों से बेहतर प्रदर्शन किया, तीन में से दो हासिल करना कोई बुरी बात नहीं है. फिर मैं एक दूसरे चरण में प्रवेश करने लगा. एक बार जब मैं चोटी पर पहुँच गया तो मुझे कोशिश करते रहना थी कि चोटी पर ही बना रहूँ. अपनी पोजीशन को बनाए रखने के लिए मुझे हमेशा चौकन्ना रहना पड़ता था. उसके बाद शोहरत की भी अपेक्षाएँ थीं, कि क्या होगा यदि मैं अच्छा नहीं कर सका? यह तो बहुत ही भयानक बात होगी, इसलिए मैं और भी अधिक मन में ठान कर आगे बढ़ता रहा.

कुछ समय तक यह संघर्ष चलता रहा जब तक मैं यह नहीं समझने लगा कि मेरे हरएक लक्ष्य को हासिल करना लगभग असंभव होगा. इससे गुस्सा फूटने लगा! मैं सोचता हूँ कि मेरे साथ धोख़ा हुआ होगा. मैंने अपने स्वामियों की भरसक सेवा की थी, और अब वे मेरा मज़ाक उड़ा रहे थे. मेरा प्रशिक्षण ऐसे सिस्टम में हुआ था जो मुझे मेरी अहमियत का ऐसा एहसास कभी भी नहीं दे सकता था जो हमेशा बना रहे और इसलिए मैं नाराज़ था.

बहुत से लोग जवान बच्चों द्वारा आत्महत्या करने या शराब अथवा ड्रग्स की ओर आकर्षित होने के पीछे छिपी अस्थिरता और विनाशकता को समझने की कोशिश करते हैं. मैं विश्वास करता हूँ ऐसा इसलिए है क्योंकि वे एहसास करते हैं कि जो तरीके उन्हें सिखाये गये हैं उनके द्वारा वे कभी भी अपने लक्ष्यों को हासिल नहीं कर पायेंगे. दूसरों की नज़रों में वे कभी भी महान नहीं बन पायेंगे, और इसीलिए वे आत्म-विनाश का मार्ग चुन लेते हैं.

मुझे याद है कि एक दिन मैं बास्केट बॉल का खेल खेल रहा था. खेल शुरू हो गया था और दबाव बना हुआ था. वह लड़का जिस पर मेरा ध्यान था उसने अचनाक छल्ले के लिए छलाँग लगाई, और उसने जैसे ही गेंद को उछाला, मैं बीच में आया और गेंद को उसके हाथ से निकाल दिया. मुझे विश्वास नहीं हुआ जब मैंने रेफ्री की सीटी की ''फाउल'' शब्द की आवाज़ सुनी! मैं जानता था कि मैंने उसे छुआ नहीं था, और अचानक मेरे अन्दर से गुस्से का सैलाब फूट पड़ा- मेरा गुस्सा इस बेक़ार सिस्टम के ऊपर था जिसने मुझे संसार देने का वायदा किया लेकिन दिया कुछ नहीं. मैं दहाड़ता हुआ रेफ्री के ऊपर चढ़ गया, उसके चेहरे से भी दो इंच ऊपर उठा और आवाज़ को निर्लज्जता के स्तर तक उठा दिया. कोई वस्तु मेरे अंदर काट रही थी और मैं शान्त होने का नाम नहीं ले रहा था. मुझे तुरन्त ही धक्के मार के 'कोर्ट' से बाहर

निकाल दिया गया और पूरी प्रतियोगिता में खेलने पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया. जब मैं बाहर जा रहा था, मेरा विश्वास है कि परमेश्वर ने मुझसे बात की. मैं ने अपने आप से पूछा, ''तुम्हारे साथ दिक्कत क्या है? तुम वास्तव में वहाँ पर अपना आपा खो बैठे थे; तुम अपने ऊपर से नियंत्रण खोते जा रहे हो!'' जीवन में पहली बार ऐसा हुआ कि मैंने वास्तविक तौर से अपने आपको देखा और जिस दिशा में मैं जा रहा था उसके बारे में सवाल करने लगा. परमेश्वर देख सकता था कि मैं कुछ बेहतर की तलाश करने लगा था क्योंकि मैंने महसूस किया कि जीवन में इससे भी बेहतर रास्ता होना चाहिए.

मेरी आत्मा का बैरी भी इस बात को जानता था और वह मुझे अपने आपको साबित करने की राह पर और अधिक गहराई की ओर थकेलने की कोशिश करने लगा, जैसे कि धूम्रपान करने वाला एक इंसान जो जानता है कि धूम्रपान छोड़ने का समय आने वाला है इसलिए वह पहले भी दो गुनी अधिक सिगरेट पीने लगता है. जब मेरे सपने बिखरने लगे तो मैं लोगों से दूर दूर रहने लगा, और मैं बहुत 'मूडी' बन गया. एक दिन मेरी माँ मेरे कमरे में आईं और कमरे की दशा देखकर शिकायत करने लगीं. हम कह सकते हैं कि मेरा कमरा अधिकाँश लड़कों के कमरों के समान साफ सुधरा नहीं था. अचानक मैं क्रोधित हो गया कि वे मेरे कमरे में आकर मुझ पर हुक्म चला रही थीं. मैंने चुने हुए शब्दों की एक लम्बी झड़ी उनके ऊपर लगा दी और उनसे कहा कि वे मुझे अकेला छोड़कर मेरे कमरे से बाहर निकल जाएँ.

यह देखना काफी रुचिकर है कि एक इंसान को सुधारने के लिए परमेश्वर अलग अलग तरीके प्रयोग करता है. मेरे अनेक दोस्त अपनी माँ के लिए ''पुराना थैला'' या ऐसे ही मज़ाकिया शब्दों का प्रयोग करते थे. मेरे पिता जी किसी तरह से मुझे यह सिखाने में सफल रहे कि माता-पिता की इज़्जत करनी चाहिए और मैंने कसम खाई थी कि जैसे शब्द मेरे दोस्त अपनी माँ के लिए प्रयोग करते थे वैसे शब्द मैं अपनी माँ के लिए कभी भी नहीं बोलूँगा. जब मैंने अपनी माँ के लिए वे शब्द बोले तो मेरे आत्मसम्मान की वह आख़िरी चादर थी जो मुझ पर से उतर गयी. मुझे झटका लगा था कि मैं ऐसी बात अपनी माँ से बोल सकता था, और मेरी निराशा बढ़ती ही जा रही थी. मैं लापरवाह होने की ओर बढ़ रहा था और यह तो एक ख़तरनाक बात हो सकती थी. मैं देख रहा था कि मैं जीवन के चौराहे पर खड़ा था. जीवन का चौड़ा रास्ता शराब, औरतें और संगीत के जबड़े को फैलाए मुझे देखकर मुस्करा रहा था. दूसरी तरफ संकरा मार्ग था जिसमें बाइबल मेरे सामने थी. क्या मैं उस धर्म का पालन करूँगा जो मेरे माँ-बाप ने सिखाया था या फिर मैं धधकते हुए तारे के समान चौड़े मार्ग पर चलता रहूँगा. एक मसीही होने का ढोंग करते रहने में मुझे अब कोई लुभाने वाली बात दिखाई नहीं दे रही थी. मेरे ऊपर यह स्पष्ट हो चुका था कि मैं एक मसीही नहीं था और न कभी मैं एक वास्तविक मसीही रहा था. यह तो मसीह था या फिर शैतान. परमेश्वर का धन्यवाद हो कि मैंने बाइबल के सच्चे मसीह को खोजने और जानने का चुनाव किया.

मैंने फैसला किया कि मैं उस किताब को पढ़ूँगा जो बहुत वर्षों से हमारे घर में पड़ी थी. इस किताब का नाम है *मसीह की ओर क़दम* (**Steps to Christ**). अब इस किताब का शीर्षक मेरी ज़रूरत के

हिसाब से सही था. मैं भूख और परमेश्वर को खोजने की चाहत में उसे पढ़ने लगा. मुझे स्वर्ग के लिए सीढ़ियों की तलाश थी क्योंकि मैं अब शैतान के राज्य को बर्दाश्त नहीं कर पा रहा था.

क़िताब के शुरू में ही लेखिका बताती है कि यीशु मसीह उस झूठ को ग़लत साबित करने के लिए आया था जो इंसान परमेश्वर के बारे में स्वीकार कर ली थी, और उसने किस प्रकार यह साबित किया कि परमेश्वर हमसे वास्तव में प्रेम करता था. गर्मी की बरसात में एक सूखी भूमि के समान मैं इस क़िताब के शब्दों को पीता चला गया. लेखिका ने मुझे आमंत्रित किया कि मैं यीशु को गतसमनी बाग में देखूँ और क्रूस तक उसके पीछे चलूँ.

जब मैंने इन दृश्यों पर ग़ौर किया तो अचानक मुझे लगा कि मैं वास्तव में यीशु के सामने खड़े होकर उसे देख रहा हूँ. क्रूस पर लटका हुआ व्यक्ति बिल्कुल सच्चा लगा और मुझे यह समझ में आया कि वह क्रूस पर इसलिए लटका हुआ था क्योंकि वह मुझे प्रेम करता था और वह मेरी अधीर दशा को समझता था कि मैं शैतान के राज्य से छुटकारा पाना चाहता था. मेरे दिल में विचार आया कि मैं अपने सबसे अच्छे दोस्त के समान उस पर भरोसा कर सकता था और स्वर्गीय राज्य तक पहुँचने में वह मेरी अगुवाई करेगा. जब मैं उसे वहाँ पर देख रहा था, यह जान कर मेरा दिल कृतज्ञता से भर गया कि वह मुझे बचाने के लिए तैयार था, और मैंने महसूस किया कि ग्लानि, चिंता, निराशा और भय का बोझ जो मैं वर्षों से ढो रहा था, वह मेरी पीठ पर से लुड़क गया. मेरे दिल में एक ऐसी शान्ति प्रवेश कर गयी जो इससे पहले मैंने कभी भी महसूस नहीं की थी और फिर मैं घन्टों तक ख़ुशी के आँसू बहाता रहा. दाऊद के पुत्र ने मेरे जीवन के अंधकार को चीर कर मेरी जीवन में दिन का प्रकाश कर दिया था.

14. वही देवता, अलग अलग नाम

कमरे में काम काज, हंसी मज़ाक, संगीत और बच्चों की उत्तेजना के कारण बड़ी चहल पहल थी. कमरे के सामने वाले हिस्से में दो बड़े स्पीकर रखे थे जो तेज़ गिटार के साथ लय ताल मिला रहे थे. दोस्तों के एक समूह के साथ (Celebrate)उत्सव मनाने के लिए मैंने एक पार्टी रखी थी- या कहिए कि रखने की कोशिश की थी. मैं जाकर कमरे के एक कोने में बैठ गया जहाँ पर जोश से भरा हुआ एक लड़का एक नई फिल्म के एक दृश्य का वर्णन कर रहा था. मैंने बैठकर मौहाल के साथ ताल-मेल बैठाने का प्रयास किया, लेकिन कुछ ऐसा था जिसे मेरा दिल स्वीकार नहीं कर रहा था. मैं उठ कर आँगन में आ गया जहाँ पर कुछ मनचले जवान बड़ी खुशी के साथ बता रहे थे कि उन्होंने अपने सपने की लड़कियाँ किस तरह से पटाई थीं. नहीं, मैं इस माहौल में भी अपने आपको 'ऐडजस्ट' नहीं कर पाया. लड़के, यह तुम्हारे साथ क्या हो रहा है? संगीत मुझे अपनी लय में ढालने के लिए शुरू हो चुका था और जब मैंने कमरे में नज़र दौड़ाई तो जो वीडियो चलते हुए देखा वह बहुत ही घिनौना था. यह सब मुझे एक मालगाड़ी के समान लगा, इन सबसे मैं नफरत करता था!

क्या हो सकता है, इस सोच में मेरे मन की गति बढ़ गयी थी. अब तक यही सब तो मेरे लिए आनन्द की परिभाषा हुआ करती थी, लेकिन अब मुझसे यह सब बर्दास्त नहीं हो रहा था. किसी चीज़ ने मेरे दिल पर कब्ज़ा कर लिया था और उसने मेरे लिये यथास्थिति बनाये रखना असंभव कर दिया था. शायद स्वर्ग से किसी ने मेरे दिल में यह डरावना विचार पैदा किया कि मेरे जीवन में आनन्द के दिन बीत गये हैं और अब मैं इन सब चीज़ों में बिल्कुल आनन्द प्राप्त नहीं कर सकता था. मैं सामने वाले दरवाज़े से होकर बाहर के लिए भागा और अपनी मुठ्ठी बाँध कर हवा में उठाते हुए चिल्लाया," तुमने मेरा जीवन बर्बाद कर दिया है."

यीशु के साथ मेरे 'दमिश्क की राह' के अनुभव के कुछ दिन बाद यह हुआ था. मेरे जीवन की राह बदल गई थी. इतनी शान्ति मैंने अपने जीवन में कभी महसूस नहीं की थी, और बाइबल मेरे लिए जीवन्त होने लगी थी. मैं इसकी शिक्षाओं को पीता जा रहा था और अपने जीवन में ऐसी आज़ादी का अनुभव कर रहा था जिससे मैं अब तक अनजान था. जब यीशु मेरे जीवन में आया, यह एक विस्फोट के समान था. अचानक, मुझे एहसास हुआ कि मेरी भाषा कुछ हद तक अनुचित थी, मेरे कुछ चुटकुले काफी भद्दे और मेरे जीवन की कुछ बातें जिस दिशा में मैं चलने लगा था उससे मेल नहीं खा रहे थे. मैं एक नये राज्य की

यात्रा पर निकल चुका था. यह बिल्कुल एक नये देश को जाने और वहाँ की भाषा और संस्कार शुरू से सीखने के समान था. मैं इसलिए सीखना चाहता था क्योंकि मैं उस राज्य के प्रभु से प्रेम करता था, मेरी शिक्षा तो एक अलग प्रकार के स्कूल में हुई थी, और निश्चय ही नये वातावरण में 'ऐडजस्ट' होने में मुझे कुछ समय लग सकता था.

उस रात की पार्टी के समय तक मुझे एहसास ही नहीं हुआ कि मेरे जीवन में कितना मौलिक बदलाव आ रहा था. चूँकि यीशु ने प्रेम से मेरे दिल पर कब्ज़ा कर लिया था इसलिए जब उसने बुलाया तो मैं इंकार न कर सका. इसलिए उस पार्टी वाली रात जब मैं वह कर रहा था जिसे मैं ठीक समझता था, मुझे लगा कि वह मुझे इस प्रकार के जीवन से दूर बुला रहा था. चँकि मैं कुछ और नहीं जानता था, मैं इस बात से डर गया कि हो सकता है जो बातें इन बातों का स्थान लें वे शायद इतनी आनन्दायक न हों. भले ही आप यह जानते हों कि यह सही है फिर भी अनजान से डर जाना काफी आसान है. परमेश्वर का धन्यवाद हो कि मैंने यीशु पर भरोसा करने का चुनाव किया कि वह मेरी देखभल करेगा, और अपनी भावनाओं के बजाए उस पर भरोसा करना ज़्यादा बेहतर था.

जब मैंने यीशु को अपना मुक्तिदाता स्वीकार किया, मैं कई सप्ताह तक यूँ ही सोचता रहा. मैंने यीशु के साथ एक विशेष निकटता महसूस की जो आज तक मेरे साथ बनी हुई है. यीशु ने मेरे लिए स्वर्ग के दरवाज़े जो खोल दिये थे, लेकिन अब उसे मेरी मदद करनी थी कि मेरे जीवन से ड्यूरासेल के बीच समाप्त हो सकें. उसे मेरी मदद करनी ही होगी जिससे मेरे कार्य और मेरी उपलब्धियों पर आधारित मेरी अहमियत की 'फिलॉस्फी' से मुझे छुटकारा मिल सके. यह वह यात्रा है जिसे आदम की प्रत्येक संतान को करना ही पड़ता है. इस यात्रा को पूरा करने का एक मात्र तरीका यह है कि क्रूस से आते हुए प्रकाश पर अपनी निगाहें गढ़ाये रखना है और इस नये राज्य के सिद्धान्तों का बड़ी बहादुरी के साथ पालन करना है.

मैंने अपने दोस्तों के साथ एक प्रार्थना सभा में शामिल होना शुरू कर दिया. पहली रात जब हमने एक साथ घुटने टेके, मैंने महसूस किया कि परमेश्वर का प्रिय पवित्रात्मा हमारे चारों ओर उपस्थित था लेकिन एक दूसरे प्रकार का आत्मा भी था जो मुझे परेशान कर रहा था. जब हमने घेरा बनाकर प्रार्थना करना आरम्भ किया, मेरे दिल में एक विचार आया. *मैं इन लोगों के समान प्रार्थना नहीं कर सकता, वे तो बहुत अच्छी तरह से बोल सकते हैं.* मेरा दिमाग़ इसी विचार में फंस कर रह गया और जैसे जैसे प्रार्थना में मेरी बारी निकट आने लगी मेरा दिल ज़ोर ज़ोर से धड़कने लगा. जल्दी ही मैं चर्चा में हूँगा और हरएक मुझे सुन रहा होगा. लेकिन एक मिनट रुको तो सही, यह प्रार्थना सभा यीशु के बारे में थी, मेरे बारे में नहीं!

ड्यूरासेल का श्राप यही है. हालाँकि मैंने अपना दिल यीशु को दे दिया था और उसके पीछे चलने लगा था तौभी मेरे पुराने जीवन के सिद्धान्त , परमेश्वर के साथ प्रार्थना में मेरे रिश्ते को महत्व न देकर प्रार्थना में मेरी भूमिका को मुद्दा बनाने के लिए घसीट रहे थे.

जब मैंने बाइबल को पढ़ना शुरू किया, प्राय: मैं अपने आपको अयोग्य महसूस करता था क्योंकि हालाँकि मेरा पालान पोषण मसीही वातावरण में हुआ था, मैंने महसूस किया कि बाइबल की भाषा में मैंने अभी तक 'किंगडरमार्टन' भी पास नहीं किया था. मुझे यह सिखाया गया था कि जो कुछ मुझे सिखाया जाता है उसे सुनूँ, लेकिन मेरे दिमाग़ में कुछ अजीबो-ग़रीब चल रहा और कह रहा था,"ये लोग इतनी आसानी से बाइबल के पदों को कैसे निकाल लेते हैं, मैं तो ऐसा कभी नहीं कर पाऊँगा." मैं पन्ने पलटते हुए वह क़िताब खोजने की कोशिश कर रहा था, मैंने प्रार्थना की कि मैं सबसे पीछे न रह जाऊँ कि सबको मेरे लिए ठहरना पड़े. कितना लज्जाजनक था! अपनी तुलना दूसरों के साथ करने का जो प्रशिक्षण मैंने वर्षों से पाया था, मेरी मसीही यात्रा में भी उभर कर सतह पर आ रहा था. पवित्रात्मा के लिए मुझे मेरी जीवन पद्धति, और भाषा के बारे में क़ायल करना काफी आसान था, मेरे लिए यह स्वीकार करना काफी कठिन था क्योंकि ड्यूरासेल ने मेरे ऊपर काफी गहरे तक पकड़ बना ली थी.

जब मैं अपनी मसीही यात्रा में आगे बढ़ता गया तो मेरे अन्दर बाइबल के प्रति प्रेम बढ़ने लगा. मेरे जीवन के जिस हीरो ने मेरे लिए अपने प्राण दिये थे, उसके बारे में सीखने का यह सबसे अच्छा साधन था. मैं तो बस यीशु के बारे में अध्ययन करना पसन्द करता था और यह एक बहुत बड़ी आशीष थी, लेकिन मेरा पुराना जीवन मुझे घूरने के लिए तैयार था. मैंने ध्यान दिया कि मेरे चारों ओर ऐसे अनेक लोग थे जिनका बाइबल की बातों के विषय में ज्ञान मुझसे कम था. बाइबल के ज्ञान में बढने से मेरा आत्मविश्वास बढ़ता गया और जल्दी ही मैं छोटे-छोटे समूहों को और फिर बाद में बड़े समूहों को बाइबल अध्ययन देने लगा. यह भी मेरे लिए तथा मेरे साथियों के लिए एक बड़ी आशीष थी, लेकिन मैं धीरे -धीरे पुन: उसी पुरानी राह पर-रिश्ते के बजाए कार्यों के द्वारा अहमियत पाने के प्लेटफार्म की ओर बढ़ने लगा था. यह धीमे और बिना अहसास कराये आती है, परन्तु आती ज़रूर है. पीछे मुढ़कर देखूँ तो हममें से बहुतों के जीवन में वही देवता हैं लेकिन उनके नाम अलग-अलग हैं.

संसार में	चर्च में
शिक्षा	बाइबल का ज्ञान
खेल-कूद योग्यता	सभाओं में प्रचार करने की योग्यता
नौकरी का स्तर	चर्च में पद
धन संपत्ति	आत्मिक वरदान
शारीरिक सुन्दरता	चर्च फैशन की परेड
देश की नागरिकता	रूढ़िवादी/ उदार धर्म शिक्षा

यदि आप नीचे दी गई तालिका पर एक नज़र डालें तो, बाइबल पर विश्वास करना लेकिन संसार के अनुसार जीवन बिताना कितना आसान है. मेरा आशय जंगल में जाकर रहने से नहीं है, मेरा आशय इस बात से है कि आप अपने जीवन में अहमियत उन बातों से पाना चाहते हैं जो आप करते हैं.

हम में से अनेक लोगों के लिए यीशु के साथ हमारी 'चलने' को ड्यूरासेल की शक्ति ने 'अपहरण' कर लिया है. आज जब मैं चर्च में देखता हूँ तो मैं देख सकता हूँ कि संसार के जिन देवताओं से बचकर हम चर्च में आये थे, उन्होंने हमें चर्च में पकड़ लिया है. उन्होंने अपने आपको ज्योति के वस्त्रों से ढका हुआ है और हमने उन्हें भले मित्रों के रूप में गले लगा लिया है. जिसका परिणाम है गुस्सा, कड़ुवाहट और कलीसिया में लड़ाई झगड़ों के रूप में दिखाई देती है.

चर्च में पवित्र बने रहना बहुत आसान है, तो लेकिन चर्च में दूसरी ओर बैठे हुए उस आदमी के बारे में क्या कहेंगे जो इसलिए आपसे बात नहीं करता क्योंकि आपने उसकी पीठ पीछे उसके बारे में कुछ कहा था और वह बात उस तक पहुँच गई. पियानो बजाने वाली उस महिला के लिए क्या कहेंगे जो दूसरे चर्च में इसलिए चली गई थी क्योंकि किसी ने उससे कह दिया था कि वह बहुत अच्छा नहीं बजाती है? 'धर्म की पुलिस' के बारे में क्या कहेंगे जो चर्च में इधर से उधर घूमते हुए उन लोगों पर नज़र रखती है जिनके धार्मिक विचार उनके साथ मेल नहीं खाते ताकि वे उन्हें चर्च से निकाल कर बाहर कर सकें. उन ''स्वतंत्र मनुष्यों'' के बारे में सोचिए जो आराधन कमेटी का 'अपहरण' करके सबके ऊपर उनके ऐसे नये आराधना स्टाइल को थोपना चाहती हैं जो उन लोगों के लिए बहुत ही बुरा है जो उन्हें पसन्द नहीं करते हैं? लिस्ट बहुत लम्बी हो सकती है और हमारी आत्माओं का महान शत्रु यह जानता है कि जब तक वह हमें इस धुन पर नचा सकता है, तब तक पूरी तरह से हम उसी के राज्य के नागरिक हैं.

चर्च में एकता की कमी और मसीही प्रेम का अभाव इस बात का सबसे बड़ा प्रमाण कि हम अभी तक शैतान के राज्य के सिद्धान्तों में फंसे हुए हैं. यदि हम उसी तरह से अपने रिश्तों का सम्मान करते जिस प्रकार से परमेश्वर अपने रिश्तों के साथ करता है तो चर्च में बहुत अधिक प्रेम और एक दूसरे की चिन्ता करने के क्षेत्र में काफी कुछ दिखाई देता.

यह देखना रुचिकर है कि संसार के देवताओं का चर्च में चालाकी भरा स्थानांतरण हमारे व्यक्तिगत अनुभव में भी कलीसिया के अधिकारी वर्ग में भी घुस गया है. चौथी शताब्दी में जब सम्राट कॉंस्टेटाइन ने मसीहत को ''गले लगाया'' था तब कलीसिया में अनेक बातों में महत्वपूर्ण बदलाव आये थे. एक बिन्दु जो विशेषरूप से रुचिकर है वह यह है कि अन्यजातियों के अनेक देवताओं की मूर्तियाँ जो पैंथियॉन में थीं उन्हें मसीही नाम जैसे मूसा, दाऊद और पतरस देकर उन्हें मसीही कलीसिया में स्थानांतरित कर दिया गया था. वही देवता परन्तु विभिन्न नाम! इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप इस किस रूप में पेश करते हैं, यह अन्यजातियों की प्रथा है, और आप आज क्या कह सकते हैं? यह तो एक बात रही कि संस्थागत

कलीसिया पर यह आरोप लगाया जाता है कि वह प्रेरितों द्वारा स्थापित सत्य से दूर हो गई है. यह दूसरी बात है कि हम उन्हीं सिद्धान्तों को अपने जीवन में काम करते हुए देखते हैं. आइये इससे पहले कि हम अपने भाई की आँख से तिनका निकालने की बात करें, पहले हम अपनी आँख से लठ्ठा निकाल लें.

मसीह के सबसे उत्साही अनुयाईयों–उसके चेलों की जीवन यात्रा का अध्ययन करना रुचिकर है. 'पॉवर' और'पोजीशन' का मुद्दा अक्सर अपना सिर उठाता रहता था. आइये वचन से कुछ पदों को पढ़ें:

उस घड़ी चेले आकर यीशु से पूछने लगे, ''स्वर्ग के राज्य में बड़ा कौन है?'' मत्ती 18:1

इसके पीछे केवल और केवल एक ही कारण –स्वार्थ है जिसकी वजह से चेले यह प्रश्न पूछ रहे थे. चेले विश्वास करते थे कि यीशु मसीह, मसीहा था. यीशु में अपने विश्वास के कारण वे बहुत उत्साहित थे, और उनमें से कुछ तो उसके लिए मरने के लिए भी तैयार थे, लेकिन ठीक वैसे ही जैसे कि जब मैं प्रार्थना करने की तैयारी कर रहा था तो मेरा मन भटक कर मसीह के साथ मेरे रिश्ते से हट कर प्रार्थना में मेरे प्रदर्शन पर चला गया था, चेलों का ध्यान भी मसीह के नये राज्य में उसके साथ रिश्ते से हटकर उसके राज्य में उन्हें मिलने वाले पद पर चला गया था.

तब जब्दी के पुत्र याकूब और यूहन्ना ने उसके पास आकर कहा,''हे गुरु, हम चाहते हैं कि जो कुछ हम तुझ से माँगें, वह तू हमारे लिए करे.'' उसने उनसे कहा, ''तुम क्या चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिए करूँ?'' उन्होंने उस से कहा, ''हमें यह दे कि तेरी महिमा में हम में से एक तेरे दाहिने और दूसरा तेरे बाएँ बैठे.'' मरकुस 10:35–37.

याकूब और यूहन्ना जिसके विषय में सीख रहे थे उनमें पद और 'पोजीशन' के ईश्वर ने नये राज्य के सिद्धान्तों को इस तरह से प्रभावित किया कि वे यीशु से यह माँग करने लगे कि स्वर्ग के राज्य में उन्हें यीशु मसीह के दायें और बायें हाथ बैठने का सौभाग्य दिया जाए. यह कितना भला है कि यीशु मसीह इस बात से अपने चेलों से कभी दु:खी नहीं हुआ कि उन्हें पुराने राज्य के सिद्धान्तों से छुटकारा पाने में बार बार असफल हो रहे थे. वह समझता था कि शैतान के राज्य के सिद्धान्त हमारे जीवन में कितनी गहराई तक बैठ गये हैं इसे समझने में हमें काफी समय लगता है. समस्या यह है कि जब हम पुराने सिद्धान्तों को अपने ऊपर हावी होने देते हैं तो ये बातें होती हैं:

यह सुनकर दसों याकूब और यूहन्ना पर रिसियाने लगे–मरकुस 10:41

जब हम पुराने राज्य के सिद्धान्तों को अपने ऊपर शासन करने देते हैं, तो हमेशा इसका परिणाम कलह ही होता है. याकूब और यूहन्ना ने जो कुछ किया उससे शेष चेले नाराज़ हो गये. क्यों? क्योंकि वे एक संदेश

भेजना चाह रहे थे,''हम तुम से भी बेहतर हैं.'' शायद उनकी बातों का आशय यह न रहा हो किन्तु इसका परिणाम सदैव लगभग एक सा ही होता है. यीशु ने इस अवसर से लाभ उठाते हुए उन्हें यह समझाने की कोशिश की कि परमेश्वर का राज्य, जिस राज्य में वे बड़ रहे थे उससे कितना अलग था. उन्हें अलग तरह से सोचने की आदत डालनी होगी.

तो यीशु ने उनको पास बुलाकर उनसे कहा, ''तुम जानते हो कि जो अन्य जातियों के हाकिम समझे जाते हैं, वे उन पर प्रभुता करते हैं; और उनमें जो बड़े समझे जाते हैं, उन पर अधिकार जताते हैं. पर तुम में ऐसा नहीं है, वरन् जो कोई तुम में बड़ा होना चाहे वह तुम्हारा सेवक बने; और जो कोई तुम में प्रधान होना चाहे, वह सब का दास बने. क्योंकि मनुष्य का पुत्र इसलिए नहीं आया कि उसकी सेवा टहल की जाए, पर इसलिए आया कि आप सेवा टहल करे, और बहुतों के छुड़ौती के लिए अपना प्राण दे.''

ये शब्द हमारे कानों में हमेशा गूँजते रहने चाहिए! यदि आप परमेश्वर के राज्य में बड़े होना चाहते हैं तो दूसरों पर नियंत्रण करने और उनके साथ चालाकी करने के बजाए हमें उनकी सेवा करने का आनन्द लेना चाहिए. यीशु कहते हैं कि अन्यजाति लोग दूसरों के ऊपर शासन करते और अपने अधिकार का आनन्द लेते और यह दिखाते रहते हैं कि ''बॉस'' कौन है. अजीब बात है कि कलीसिया में भी अनेक सदस्यगण दूसरों के ऊपर अपनी इच्छा थोपने की कोशिश करते हुए इसी प्रकार की भावना का प्रदर्शन करते हैं. मसीह को क्रूस उठाये हुए 2000 वर्ष हो चुके हैं फिर भी हम में से अधिकाँश लोगों ने अभी 'किंग्डरगार्टन' भी पास नहीं कर पाये हैं.

ऐसा क्यों है कि मनुष्यों का शत्रु बड़ी आसानी से हमें खींचकर सोचने की पुरानी राह पर लेकर जाता है? जैसा कि हमने पहले कहा था, यह हमारे दिल की गहराई में असुरक्षा की भावना ही है जिसके कारण अपने आपको साबित करने की ख़ातिर ही शैतान के जाल में फंस जाते हैं. जब तक हम यह याद न रखें कि हमारी अहमियत हमें कहाँ से मिलती है, हमारे लिए अपनी अहमियत को साबित करने के लिए पत्थरों को रोटी बदलने की परीक्षा में फंसने से नहीं बचा पाएंगे.

इस ड्यूरासेल सिद्धान्त में भयभीत करने वाली एक बात पाई जाती है जो हमें बड़ी दृढ़ता से बाँधे रहती है. इस संसार में पाये जाने वाले अब तक के सब गुरुओं में यीशु सबसे अच्छा गुरु था. उसने लगभग तीन वर्ष का समय अपने चेलों के साथ बिताते हुए, जितना हो सकता था अपने चेलों को स्वर्गीय सिद्धान्तों को सिखाने की कोशिश की और यहाँ तक कि क्रूस पर चढ़ने से एक रात पहले तक उसके चेले अपने जीवन के पुराने सिद्धान्तों द्वारा संचालित दिखाई दे रहे थे.

इसी रीति से उसने भोजन के बाद कटोरा भी यह कहते हुए दिया, ''यह कटोरा मेरे उस लहू में जो तुम्हारे लिए बहाया जाता है नई वाचा है. पर देखो, मेरे पकड़वानेवाले का हाथ मेरे साथ मेज़ पर है.

क्योंकि मनुष्य का पुत्र तो जैसा उसके लिये ठहराया गया जाता ही है, पर हाय उस मनुष्य पर जिसके द्वारा वह पकड़वाया जाता है!'' तब वे आपस में पूछताछ करने लगे कि हम में से कौन है, जो यह काम करेगा. उनमें यह वाद विवाद भी हुआ कि उन में से कौन बड़ा समझा जाता है. लूका 22:20-24.

विश्व के अब तक के सबसे बड़े प्रेम के प्रदर्शन की संध्या पर भी, वे लोग जो यीशु के सबसे क़रीब थे, जो उसके राज्य के बारे में दूसरे किसी भी इंसान से ज़्याद जानते थे, वे इस बात पर बहस कर रहे थे कि उनमें में सबसे बड़ा कौन था. उस घड़ी जिस दु:ख का यीशु मसीह ने अनुभव किया वह बहुत ही पीड़ादायक रही होगी! क्या हम जो अपने आपको यीशु का अनुयाई होने का दावा करते हैं, उसके चेलों के समान वही ग़लतियाँ दोहराते हुए यह आपस में धक्का-मुक्की करेंगे कि हम में से बड़ा कौन है?

संसार में ड्यूरासेल के सिद्धान्त के नियंत्रण में होने से केवल एक बुरी बात है; वह है कलीसिया में इन सिद्धान्तों के नियंत्रण में होना. परमेश्वर हमारी मदद करे कि हम इन स्वार्थपूर्ण सिद्धान्तों से आज़ादी हासिल करके परमेश्वर के राज्य का आनन्द हासिल कर सकें!

15. तुम कैसे पढ़ते हो?

आज का दिन विशेष दिन होने वाला है. जो सुखमय संभावनाएँ आपको दिखाइ दे रही हैं उनके कारण आप उत्तेजना और उम्मीदों से लबरेज़ हैं. निर्माण के क्षेत्र में एक विशाल कंपनी के मुखिया ने उस डिज़ाइन में विशेष रुचि दिखाई है जिसे आपने तैयार किया है और वह निर्माण क्षेत्र में इसे प्रयोग करने और पूरी दुनिया में इसे एक्सपोर्ट करने के बारे में गंभीरता से विचार करने पर सहमत हो गया है. एक छोटे से स्थानीय रेस्टोरेन्ट में उसके साथ लन्च करने का फैसला करते हैं. इससे पहले कभी नहीं मिले हैं इसलिए आप बड़ी बेचैनी से आप उस इंसान को तलाश करने की कोशिश करते हैं जो आपके सपनों को हक़ीकत में बदलने वाला है. आख़िरकार वह आ ही जाता है और आप उससे बड़ी गर्मजोशी के साथ हाथ मिलाते हैं और आप दोनों होटल में आकर अपना स्थान ग्रहण करते हैं. परिचित होने के लिए भोजन की मेज़ पर आपका साथी आपके परिवार, आप कहाँ रहते हैं और स्कूल में आपके बच्चों की पढ़ाई के बारे में कुछ सामान्य से सवाल पूछता है. आपके पीछे बैठे हुए केवल एक व्यक्ति को छोड़कर जिसने अपने शोरबे को सुड़कने का एक बिल्कुल नया अंदाज़ सीखा है, उसे छोड़ कर सब कुछ ठीक ठाक ही चल रहा है. शुरू में आप उसे नज़रअंदाज़ कर देते हैं लेकिन कुछ देर बाद सुड़कने की यह आवाज़ चिढ़ाने लगती है.''कुछ लोगों को कुछ मैनर्स सीखने की ज़रूरत है'' आप अपने मन में सोचने लगते हैं, लेकिन इस बात पर से आप अपना ध्यान हटा लेते हैं कि आपका ध्यान मुख्य विषय से हट न जाए. आपके संभावी बिज़नेस पार्टनर से आपकी बात-चीत बहुत बढ़िया चल रही है और आप अपनी डिज़ाइन से होने वाले अतिरिक्त फ़ायदों के विषय में बातचीत के मध्य तक आ गये हैं कि आपके पीछे बैठा हुआ इंसान एक भयानक डकार लेता है जिससे आपकी मेज़ पर रखे हुए चाकू छुरी लगभग हिल जाते हैं. सभी की आँखें इस अजीबो-ग़रीब आदमी को देखने लगती हैं, जिसके अन्दर तहज़ीब नाम की कोई चीज़ नज़र नहीं आती है. भय और घृणा से भरी हुई मक्कारी भरी हँसी से कमरा भर जाता है. अंत में होटल का मालिक बाहर आता है और उस आदमी से कहता है कि उसके जैसे लोगों को उसके होटल में आने की ज़रूरत नहीं है और उसे बाहर कर देता है.

जो बात वास्तव में अनोखी है वह यह है कि अगर यही आदमी किसी ऐसे होटल में बैठा होता जो चीनी संस्कृति पर आधारित होता तो किसी को कोई आपत्ति नहीं होती. वास्तव में होटल के कर्मचारी निराश होते यदि आप इस तरह के हाव-भाव न दिखाते. चीनी संस्कृति में यदि आप किसी ऐसे इंसान से हाथ मिलाते जिससे आप पहले कभी नहीं मिले हैं या जिसके साथ भोजन करते समय आपने परिवार के बारे में

बातचीत नहीं की है तो आप असभ्य कहे जाएँगे.[41]

यह कितना अनोखा है आप जिस समाज, संस्कृति और देश से आते हैं उनके आधार पर वे ही बातें दूसरे देश और वातावरण में कितनी अलग तरह से देखी जाती हैं. जब हम परमेश्वर के राज्य बनाम शैतान के राज्य की संस्कृति की बात करते हैं तो इन तथ्यों में कोई भेद नज़र नहीं आता है.

मसीही विश्वास का केवल एक ही आधार–यीशु मसीह है, और फिर भी जब हम यीशु का नाम लेने वाले समूहों की अधिकता देखते हैं तो हमें एक ही आधार स्थापित मसीहत में इतनी अधिक विभिन्नता देखकर अचंभित हो जाते हैं. परमेश्वर के राज्य की यात्रा में संस्कृति और सांसारिक नज़रिये में बदलाव शामिल है. पिछले अध्याय में हमने उन बातों का वर्णन किया था जो स्वर्ग की विधियाँ सीखने की राह में हमारे लिए बाधा बनती हैं.

मसीही जीवन की राह में सबसे बड़ी परेशानी इस बात में आती है कि हम परमेश्वर के वचन बाइबल को किस रूप में लेते हैं. हम जिस संसार में से आते हैं वहाँ उपलब्धि और पोजीशन के आधार पर हमारी शिक्षा हुई है, परन्तु जैसे ही हम परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करते हैं यह अत्यन्त आवश्वक है कि हम अपने सोच और विचारों को परमेश्वर के आत्मा के अधीन समर्पित करें. दुर्भाग्य से प्राय: ऐसा होता नहीं है और मसीही विश्वास और इतिहास में बहुत से विरोधाभास, विधर्म और विवाद सीधे ही बाइबल को परमेश्वर के साथ उचित और घनिष्ठ संबन्धों को लक्ष्य बनाने के बजाए ड्यूरासेल के संदर्भ में पढ़ने से पैदा होते हैं.

यीशु मसीह इस विषय में लूका 10 अध्याय में एक व्यवस्थापक से बात करते हैं. ''अनन्त जीवन का वारिस होने के लिए मैं क्या करूँ?'' यीशु ने उत्तर दिया, ''व्यवस्था में क्या लिखा है?'' विषय की गहराई में जाते हुए उसने दुबारा पूछा, ''तू कैसे पढ़ता है?''[42] यीशु ने यह नहीं पूछा कि तू ***क्या*** पढ़ता है; वे पूछते हैं कि तू ***कैसे*** पढ़ता है, या तू जो कुछ पढ़ता है उसकी व्याख्या कैसे कैसे करता है? जो कोई इस पृथ्वी के ड्यूरासेल से स्वर्गीय रिश्तों में प्रवेश करना चाहता है उसके लिए यह मुख्य प्रश्न है–तुम कैसे पढ़ते हो?

व्यवस्थापक ने यीशु से जो सवाल पूछा था, मसीही जीवन की यात्रा के लिए यह एक सबसे महत्वपूर्ण सवाल है. जिसे पद पर आप हैं और जिन लोगों के साथ आप उठते बैठते हैं, इस संसार में वे आपकी अहमियत की पहचान हो सकते हैं. इसके विपरीत स्वर्ग के राज्य में प्रत्येक व्यक्ति परमेश्वर की संतान है इसलिए आदर और सम्मान का हक़दार है. जब हम बातचीत में आगे बढ़ते हैं हम पाते हैं कि व्यवस्थापक पवित्रशास्त्र की व्याख्या परमेश्वर के राज्य के सिद्धान्तों पर करने के बजाए शैतान के राज्य के सिद्धान्तों के आधार पर करता है.

''तू प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी शक्ति और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख और अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख;''[43] कहते हुए उसने यीशु को सही उत्तर दिया था. यीशु कहते हैं कि ''यही कर तो तू जीवित रहेगा'' परन्तु व्यवस्थापक इस बात में शामिल शर्तों के पूरे अर्थ को महसूस करते हुए इसके अर्थ को तोड़ते मरोड़ते हुए पूछने लगा,''मेरा पड़ोसी कौन है?'' पवित्रशास्त्र का अर्थ एकदम साधारण है लेकिन ड्यूरासेल के प्रभाव के कारण मानव हृदय ऐसे दिखावा करता है मानो इसका अर्थ कठिन है क्योंकि यह पूरी तरह से पुराने को पूरी तरह से त्यागने और नये को पूरी तरह से स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं है. इतने अधिक अधपके और मुरझाये हुए मसीहों होने का यही कारण है, वे मसीह के राज्य में विश्वास करते हैं लेकिन जीते शैतान के राज्य में हैं जिसका परिणाम भ्रम और चिढ़चिढ़ेपन के रूप में दिखाई देता है.

उद्धार के विषय में संपूर्ण मसीही विश्वास भ्रमित है क्योंकि बाइबल सफाई से बताती है कि जो मसीही जन अनुग्रह से शक्ति पायेगा वह दस आज्ञाओं का पालन करते हुए जीवन बिताएगा. फिर भी हम में से बहुत से लोग दस आज्ञाओं को भी ड्यूरासेल वाले सिद्धान्त की दृष्टि से देखते हैं-दस आज्ञाओं को परमेश्वर और उसकी संतानों के बीच में बनने वाले रिश्ते की नज़र से देखने के बजाए उनका पालन करने की इसलिए कोशिश करते हैं कि उद्धार मिल जाए.

इसके विपरीत हम ऐसे लोगों को देख सकते हैं जो विश्वास से परमेश्वर के साथ रिश्ते में प्रवेश करने के बजाए यह सोचते हैं कि व्यवस्था की माँग को पूरा करना असंभव है, वे कहते हैं कि दस आज्ञाओं को पालन करना असंभव है, इसीलिए वे कभी भी उस आज़ादी का आनन्द नहीं ले पाते हैं जो मसीह उन्हें देना चाहता है. चाहे आप पालन करने का प्रयास करें या पालन करने का प्रयास न करें, मुद्दा तो रिश्ते का नहीं बल्कि कर्म करने का ही है. इनमें से कोई भी समूह स्वर्ग के राज्य में तब तक प्रवेश नहीं कर सकता जब तक वह दस आज्ञाओं को विश्वास सहित मसीह के साथ रिश्ते के रूप में स्वीकार नहीं करते जो उनके लिए मर गया.

उन मसीहों के समूह के लिए जो पालन न करने वालों के पक्षधर हैं और यह कहते हैं कि मसीही जीवन में जयवन्त होना असंभव है, वे शीघ्र ही वे सोचने लगते हैं कि वह देवता जिसकी वे सेवा करते हैं वह भी ऐसा करने में सक्षम नहीं है. इस रुझान को पहचान पाने की सांसारिक इच्छा के साथ जोड़ दीजिये और ऐसे मसीही विद्वान, शिक्षक और विश्वासियों को पाकर आपको आश्चर्य नहीं होगा जो केवल छः दिन में संसार को बनाने की परमेश्वर की क्षमता में विश्वास नहीं करते हैं. जैसे कि व्यवस्थापक उत्तर देता है कि उसे अपने पड़ोसी से प्रेम करना चाहिए लेकिन फिर सवाल करता है,''मेरा पड़ोसी कौन है?'' इतने अधिक विद्वान आज आत्मसंतुष्टि के साथ कहते हैं,'' हाँ हम छः दिन की सृष्टि रचना में विश्वास करते है-किन्तु वे दिन किस प्रकार के हैं?''दुष्टता हमेशा वचन को तोड़ने मरोड़ने-मसीह में विश्वास करने परन्तु संसार के हिसाब से जीने की राहें तलाश कर ही लेती है. दुष्टत्माएँ भी मसीह में विश्वास करती हैं

और जीती इस संसार के अनुसार हैं.

एक बार जब एक इंसान उस परमेश्वर में विश्वास खो देता है जो एक नये दिल का निर्माण कर सकता है और वह वचन की सरल बातों के विषय में भी चालाकी भरे सवाल करने लगते हैं, फिर बाइबल के अनुसार स्त्री और पुरुष के दायित्व को इंकार करने के साथ ही समलैंगिकता को मसीहत के रूप में स्वीकार करना आसान हो जाता है. स्वर्ग के राज्य के लिए यह विचार बिल्कुल अस्वीकार्य है. अहमियत हमेशा रिश्तों से मिलती पद से नहीं.

हम बाइबल की एक के बाद एक ऐसी शिक्षाओं का हवाला देते चले जाएँगे जिसे शक्ति , पद और प्रदर्शन के सिद्धान्त के अनुसार ढालने के लिए तोड़ा मरोड़ा गया है लेकिन मैं सोचता हूँ इस विषय को पर्याप्त रूप से स्पष्ट कर दिया गया है कि यदि हम मसीह के अनुयाई होने का दावा करते हैं तो हम वचन की व्याख्या शैतान के राज्य के सिद्धान्तों के बजाए स्वर्ग के सिद्धान्तों के अनुसार करने की कोशिश करेंगे.

16. अब सेवक नहीं

यह विशेष समयों में से एक था. मैं और मेरा छः साल का बेटा एक साथ कार में सफर कर रहे थे. हम गंभीर बातचीत–मेरे बहुमूल्य बेटे को अनुभव के अनुसार अर्थपूर्ण और गंभीर बातचीत में खोये हुए थे. मैं देख सकता था कि उसके दिमाग़ में क्या चल रहा था. मुझे लगा कि वह कोई महत्वपूर्ण बात कहने वाला था और तब वह यह कहने लगा.'' डैडी आप जानते हैं, मैं सोचता हूँ कि समस्याएँ काफी कम हो जाएँगीं अगर कुछ समय के लिए आप 'बॉस' बनें और कुछ समय के लिए मुझे 'बॉस' बनने दें.'' ''बेटा, निश्चय ही यह एक रुचिकर सलाह है,'' मैंने अपना गला साफ करते हुए कहा. कुछ पल के लिए चुप्पी रही क्योंकि मैं एक ऐसे अच्छे कारण की खोज में था जिसके द्वारा मैं उसे बता सकूँ कि मेरे बेटे की सलाह में क्या ख़राबी थी और यदि मैं ऐसा उत्तर नहीं पा सका, तो हम दोनों ही समस्या में फंस सकते थे. ''ठीक है, बाइबल वास्तव में ऐसा नहीं सिखाती है बेटा.''

''लेकिन आप हमेशा मुझे यह क्यों बताते रहते हैं कि क्या करना चाहिए?''
''ठीक है बेटा, यीशु ने मुझसे कहा है कि मैं तुम्हें यह सिखाऊँ कि तुम उसके लिए एक ताक़तवर बालक कैसे बन सकते हो, और चूँकि वह मेरा 'बॉस' है, मैं सोचता हूँ कि मुझे वही करना चाहिए जो उसने मुझे आज्ञा दी है.''

माता–पिता बनना एक वास्तविक मोड़ है. ''बेटा, खाते समय कृपया बैठ जाओ.'"'अरे, यह तो ग़लत बात हुई.''

''स्वीटी, कृपया अपने खिलौने उठाओ और उन्हें अलग रख दो.'' ''अरे मम्मी, मैं तो बाहर जाकर खेलना चाहती हूँ.''

''बेटा, अब बिस्तर पर जाकर सोने का समय है.'' रोना, रिरियाना और हुआ, हुआ करना, ''लेकिन तुम अभी बिस्तर पर नहीं जा रहे हो. मुझे ऐसा क्यों करना होता है?''

ये सब नियम और कानून! आप सोच सकते हो कि माता–पिता हमेशा एक राक्षस के समान व्यवहार क्यों करते हैं? बच्चे यह बात क्यों नहीं समझ सकते हैं कि आप चाहते हैं कि वे मेज़ पर बैठ कर धीरे धीरे खायें

ताकि उनका पाचन ख़राब न हो? या यह कि आप चाहते हैं कि वे साफ और दुरुस्त रहना सीखें जिससे जब वे बड़े हों तो वे अधिक व्यवस्थित और प्रभावशाली बन सकें? और बच्चे इस बात के लिए धन्यवादी क्यों नहीं होते कि आप उन्हें अधिक देर तक सोने की इज़ाजत न देकर उन्हें बीमार होने से बचाना चाहते हैं? क्यों-क्योंकि वे उन ख़तरों के बारे में कुछ नहीं जानते हैं जो उनके जीवन में आ सकते हैं.

प्रेरित पौलुस इस विषय को पकड़कर मसीही जीवन की यात्रा का चित्रण इस प्रकार से करता है.

मैं यह कहता हूँ कि वारिस जब तक बालक है, यद्यपि सब वस्तुओं का स्वामी है, तौभी उसमें और दास में कोई भेद नहीं . गलातियों 4:1

पौलुस एक बच्चे और उसके माता-पिता के बीच के रिश्ते को इस रूप में देखता है जिसमें एक दास और स्वामी के रिश्ते में कोई भेद नहीं है. एक पिता को अपने बेटे को परमेश्वर के राज्य के सिद्धान्तों की शिक्षा देनी चाहिए, लेकिन उसका बेटा जिसमें ड्यूरासेल का स्वभाव है इसलिये वह इस प्रशिक्षण के महत्व को नहीं समझ पाता है. उसका पिता ऐसे बहुत से पाठ सिखाता है जो उसके स्वभाव के विपरीति होने के कारण और प्राय: इतने कठिन लगते हैं जैसे कि उसके साथ एक नौकर जैसा व्यवहार किया जा रहा है. लड़का आसानी से सोच सकता है,''मेरा पिता मुझे वे काम क्यों करने देता है जो मुझे पसंन्द हैं? मैं एक ग़ुलाम के समान महसूस करता हूँ.'बेटा यह करो, बेटा यह मत करो' यह तो ग़लत बात है.''

यह स्थिति पूरी तरह हमारे साथ परमेश्वर के उस व्यवहार को दिखाती है जिसमें वह हमें उसके राज्य के लिए तैयार करने की कोशिश कर रहा है. बहुत से लोग परमेश्वर की आज्ञाओं को बहुत कठिन और सख्त पाते हैं और अक्सर सवाल करने लगते हैं ''परमेश्वर ने मेरे साथ ऐसा क्यों होने दिया या मसीही जीवन इतने अधिक प्रतिबंध क्यों हैं?'' ऐसे भी अनेक लोग हैं जो कलीसिया में शामिल होने के बाद भी मसीही जीवन के कार्य करते हुए बच्चे और ग़ुलाम ही बने रहने से ही संतुष्ट होते हैं और यह आशा करते हैं कि उन्हें उनके प्रयासों के लिए प्रतिफल मिलेगा, ऐसे लोग उड़ाऊ पुत्र की कहानी में वर्णित बड़े बेटे के की भावनाओं में फंसने के संकट में हैं.

पौलुस हमें समझाता है कि परमेश्वर के हमारे साथ व्यवहार के विषय में किस प्रकार से जीवन की बहुत से परेशानियों और प्रश्नों से आज़ादी पा सकते हैं. जब हम इस बात को भली प्रकार से समझ लेते हैं कि वह हमसे बहुत प्रेम करता है और हमें अपने राज्य के लिए तैयार कर रहा है, फिर परमेश्वर के साथ हमारे रिश्ते का महत्व बढ़ जाएगा. नियम और कानून फिर हमें आनन्द मनाने से रोकने के लिए प्रतिबंध और घेरे लगने के बजाए वे हमारे लिए आज़ादी के ऐसे दरवाज़े बन जाएंगे जो हमारे लिए परमेश्वर के कोमल प्रेम और उसकी उस चाहत को प्रकट करेंगे जिसके द्वारा वह हमें अपनी संतान बनाकर अपने राज्य का वारिस बनाना चाहता है. पौलुस इसे इस रूप में समझाता है:

वैसे ही हम भी, जब बालक थे, तो संसार की आदि शिक्षा के वश में होकर दास बने हुए थे. परन्तु जब समय पूरा हुआ तो परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा जो स्त्री से जन्मा, और व्यवस्था के अधीन उत्पन्न हुआ, ताकि व्यवस्था के अधीनों को मोल लेकर छुड़ा ले, और हम को लेपालक होने का पद मिले. और तुम जो पुत्र हो, इसलिए परमेश्वर ने अपने पुत्र के आत्मा को जो ' हे अब्बा, हे पिता कहकर पुकारता है, हमारे हृदयों में भेजा है. इसलिए तू अब दास नहीं , परन्तु पुत्र है; और जब पुत्र है, तो परमेश्वर के द्वारा वारिस भी हुआ. गलातियों 4:3-7

परमेश्वर के वचन में पाये जाने वाले ये कुछ एक सबसे सुन्दर शब्द हैं. जैसे-जैसे हम हमारे उद्धार, और हमें परमेश्वर की संतान होने का हक़ दिलवाने के लिए हम यीशु के बलिदान को समझते हैं, हम शैतान के राज्य की ग़ुलामी से आज़ाद हो जाते हैं. हम ड्यूरासेल की क्रूरता से आज़ाद होकर और परमेश्वर के पुत्र और पुत्रियों के रूप में हम मज़बूती और शान से यह जानते हुए खड़े हो जाते हैं कि यीशु के कारण हम हमेशा उसके बेटे और बेटियाँ बने रहेंगे. क्या परमेश्वर के आत्मा ने आपके दिल से "अब्बा, पिता"की पुकार निकाली है? क्या आप उसके प्रेम में अपने आप को सुरक्षित महसूस करते हैं कि आप दौड़कर उसकी बाहों में यह जान कर समा जाएँ कि न केवल आपका स्वागत ही होगा बल्कि वह आपको बहुत चाहता भी है? क्या आप अपने पिता के उस लाड़ प्यार की ओर लौटे हैं जो जब वह निकट होता है तो मुस्कराता है? जब तक आप यह आज़ादी अनुभव नहीं करते, आप हमेशा तक एक ऐसे नौकर बने रहेंगे जो इस बात की दुबिधा में जीता है कि कल आपको वेतन देकर सेवा मुक्त किया जा सकता है.

परमेश्वर की संतान होने के नाते , हमारा वारिसाना हक़ सुरक्षित है. हम साहस के साथ उसके पास आकर उसके सामने अपने निवेदन रख सकते हैं; हम विश्वास के साथ उस पर भरोसा कर सकते हैं कि वह जानता है कि हमारे लिए सबसे अच्छा क्या है. हमारे जीवन में हमारे साथ जो कुछ भी होता है उसका उद्देश्य हमारे लिए परमेश्वर के राज्य के मूल्यों की गहरी समझ प्रदान करना और ड्यूरासेल की ग़ुलामी से आज़ाद होने में मदद करना है.

आपको याद होगा कि अध्याय 6 में हमने यह सीखा था कि इंसान को पुन: प्रेम मय आलिंगन में लाने के लिए परमेश्वर को कितने बड़े कार्य को अंजाम देना पड़ा था. यहाँ पर उनमें से कुछ बिन्दु एक बार फिर दिये गये हैं:

1. इंसान अपनी कष्टमय दुर्दशा को इसके वास्तविक रूप में पूरी तरह समझाने के लिए साधन दिया गया और इसके साथ उनकी स्वतंत्र इच्छा का उल्लंघन किये बिना उसे सही राह दिखाने की कोशिश की गई.
2. उन्हें दिखाया गया कि वे अब तक परमेश्वर के चरित्र और राज्य के बारे में ग़लत विचार पाले हुए हैं और उन्हें किसी तरह यह समझाने का प्रयास किया गया कि परमेश्वर उनसे

वास्तव में प्रेम करता है.

3. उनकी ग्लानि और असुरक्षा की भावना को दूर करने, उनकी सच्ची पहचान और परमेश्वर की संतान के रूप में उनकी अहमियत समझाने की कोशिश की गई.

4. उनके जीवन के उद्देश्य का भाव, उनके जीवित रहने का कारण और उनकी पहचान को पुन: पाने के लिए राह दिखाई.

5. ऊपर बताई गई बातों में समय लगता है. आदम और हव्वा ने अपना जीवन खो दिया था, इसलिए उन्हें जीवन रक्षक प्रणाली की ज़रूरत थी ताकि वे आगे जीवन के लिए सही चुनाव कर सकें.

6. ये सब करते समय परमेश्वर को न्याय की भावना को बनाए रखना था. वह उनके विद्रोह की अनदेखी करके यह नहीं कह सकता कि ठीक है. जबकि परमेश्वर ने दया करके उनके पाप के अनुसार पूरा दण्ड उन पर नहीं आने दिया, आदम और हव्वा को अभी भी आज्ञाउल्लंघन के परिणाम को भुगतने दिया कि वे यह भली प्रकार समझ सकें कि उनका पाप कितना भयानक था.

यीशु की सेवकाई में उसके कार्य, मौत और जी उठने ने इन सभी छ: चुनौतियों का समाधान उपलब्ध करवाया गया. मसीह के क्रूस की शक्ति को कौन समझ सकता है? यह तो केवल हमारे ग़लत कार्यों को हमसे दूर करने से भी बहुत अधिक बढ़कर है.

क्या ड्यूरासेल की शक्ति से छुटकारा पाने के लिए हम अभी घुटने टेककर क्रूस की ओर देखेंगे? क्या आप स्वर्ग से परमेश्वर की उस आवाज़ को सुन सकते हैं जो कहती है कि आप उसके प्रिय बच्चे हैं और वह आपको प्रेम करते हैं? क्या आप अपनी सब ग्लानि, चिढ़चिढ़ेपन, घमण्ड और कड़ुवाहट को उसके सामने उंडेलेंगे? उसके आनन्द की भरपूरी को अपनी आत्मा में बहने देंगे? यदि आपने अब तक ऐसा नहीं किया है तो अभी कर सकते हैं. ड्यूरासेल की शक्ति से आज़ाद होने का रहस्य यह है कि अब आप दास नहीं रहे, परन्तु परमेश्वर के एक पुत्र/पुत्री बन गये हैं.

17. बेबीलोन का पतन

यह बिजली की तरह टकराया. जर्मनी पैंज़र फौज़ ने हॉलैण्ड और फ्राँस के मैदानों में दौड़ लगाई और केवल एक ही रात में यह देश नाज़ी शासन के लोहे की मुठ्ठी में क़ैद हो गये. कब्ज़ा किये हुए देश में रहना एक तिरस्कारपूर्ण अनुभव होता है. ऐसे ही समय में मेरे पिता हॉलैण्ड के आसेन में रहते थे.

लोगों को बलपूर्वक जर्मनी की ओर से युद्ध करने पर विवश किया गया. उनके बारे में गुप्त पुलिस को सूचना देने वाले हमेशा तैयार रहते थे, और किसी भी घड़ी उनके दरवाज़े पर दस्तक होती और उनके प्रिय जनों को घर से घसीट कर ऐसी जगह पर ले जाया जाता था जहाँ से वे कभी वापस नहीं सकते थे. नाज़ी राज ने ड्यूरासेल के चिन्हों, इस प्रकार नियंत्रण करने की भावना जो विरोधियों को वर्दास्त न कर सके, भय का शासन और अपनी क्रूर संतुष्टि के लिए अपनी शक्ति का प्रदर्शन करने के द्वारा शासन किया.

अपने संसाधनों से वंचित जर्जर, सताहट भरी जंजीरों में बंधे होने के कारण थके होने के कारण, हॉलैण्ड 1944 के जाड़े के लिए तैयार नहीं था. इस डर से वे अपना घर नहीं छोड़ सकते थे क्योंकि जब वे वापस आते थे तो शायद उनका घर आग जलाने के लिए लकड़ियाँ निकाल लिए जाने के कारण उन्हें उस स्थान पर नहीं मिलता. शहरों में हज़ारों लोग भूख और ठण्ड के कारण मर गये. ये पीड़ाएँ कब तक बनी रहेंगी?

उन्होंने इसे "क्रेज़ी ट्यूज़डे" नाम दिया, वह दिन जब सहायक सेनाएँ आ गईं. जर्मनी की सेनाएँ पुलों को जलाती हुई और हथियारों को नष्ट करते और जितना हो सकता था बर्बादी करते हुए पीछे हटते चले गये. मेरे पिता को याद है कि जब सहायक सेनाएँ भोजन के पैकेट बाँट रही थीं, तो लोग सड़कों पर नाच रहे थे. यकीन करना मुश्किल लग रहा था कि सताव समाप्त हो गया और अन्ततः आज़ादी मिल गयी थी!

कैन की आत्मा अभी भी जीवित है, और प्रकाशितवाक्य की पुस्तक प्रकट करती है कि यीशु के वापस आने से ठीक पहले नियंत्रण करने वाली असुरक्षित, ईर्ष्यालु और अयोग्य आत्मा समाप्त होने से पहले आख़िर में एक बार और ज़ोर शोर से काम करेगी. यूहन्ना इसका वर्णन समुन्द्र में निकलने वाले एक सात सिर और दस सींग वाले पशु के रूप में करता है.

तब मैंने एक पशु को समुन्द्र में से निकलते हुए देखा, जिसके दस सींग और सात सिर थे, ,उसके सींगों पर दस राजमुकुट, और सिरों पर परमेश्वर की निन्दा के नाम लिखे हुए थे.

प्रकाशितवाक्य 13:1.

इस पशु को सारी जातियों और संसार के लोगों के ऊपर बड़ी सामर्थ्य और अधिकार दिया गया है, और पूरा संसार इसकी आराधना करता है और उसकी शक्ति के सामने दण्डवत करता है.[45] यही पशु शक्ति उस परमेश्वर के साथ हमारे रिश्ते के विरोध में खड़ी होती है जिसने आकाश और पृथ्वी को बनाया है. यह शक्ति यह चाहती है कि इसकी आराधना की जाए.

यह पशु शक्ति इतनी आसानी से सारे संसार को अपने पीछे चलने के लिए राज़ी कर लेती इसका कारण यही है कि यह ड्यूरासेल की बैट्री से चलती है. यह वही भाषा बोलती है जो हम सब स्वभाविक रीति से बोलते हैं. यह शक्ति हमारे कामों और उपलब्धियों के द्वारा पहचान बनाने के लिए हमें प्रेरित करती है, और यह हमें अपनी ही मर्जी से ख़ून रहित बलिदान लाने के लिए और परमेश्वर से यह उम्मीद करने के लिए प्रेरित करती है कि परमेश्वर हम से हमारी ही शर्तों पर मिले और हमारी आराधना स्वीकार करे. संसार के अधिकाँश लोग पहले ही इस पशु शक्ति के अधीन हैं लेकिन वे इस बात का एहसास नहीं करते हैं. जब संसार आज़ादी के सिद्धान्त को त्याग कर भय और बल के अधीन संसार पर नियंत्रण करनी वाली शक्ति के पास लौट आता है, तो यह उसी बात को बाहरी तौर से प्रकट करेगा जो हममें से प्रत्येक के दिल में छिपी हुई है.

ऐसा नहीं है कि परमेश्वर चुपचाप बैठा है और कुछ कर नहीं रहा है. वह पूरे संसार में एक उग्र संदेश भेजकर लोगों को चेतावनी दे रहा है कि वे इस पशु शक्ति की अधीनता स्वीकार न करें. यह तीन संदेशों के रूप में आती है. पहला संदेश इंसान का ध्यान अपनी ओर खींचता और हमें याद दिलाता है कि हमें केवल उसी परमेश्वर की आराधना करना है जिसने स्वर्ग, पृथ्वी, समुन्द्र और जल के सोते बनाये हैं. यह यीशु के बलिदान की ओर इशारा करता है और हमें याद दिलाता है कि परमेश्वर द्वारा कैन का बलिदान कभी भी स्वीकार नहीं किया जाएगा. हम परमेश्वर का समर्थन कभी भी हासिल नहीं कर सकते हैं; हमारा उद्धार हमारे लिए मेम्ने के लहू के द्वारा ख़रीदा गया था.[46]

फिर परमेश्वर हमें एक बहुत ही महत्वपूर्ण सच्चाई याद दिलाता है. वह इस बात को इस भाषा में व्यक्त करता है:

फिर इसके बाद एक और दूसरा स्वर्गदूत यह कहता हुआ आया, '' गिर पड़ा, वह बड़ा बेबीलोन गिर पड़ा, जिसने अपने व्यभिचार की कोपमय मदिरा सारी जातियों को पिलाई है.'' ***प्रकाशितवाक्य 14:8***

परमेश्वर बेबीलोन शब्द का इस्तेमाल क्यों करता है? जब हम बाइबल में देखते हैं हम पाते हैं कि यह निर्मोद नाम का व्यक्ति था जिसने बाबुल नगर बसाया था. निर्मोद एक रुचिकर व्यक्ति था. बाइबल बताती है '' उसके राज्य के पहले केन्द्र बाबुल के शिनार देश में ऐरेक्क, अक्काड और कालनेह थे.''[47]मानवीय

इतिहास में निर्मोद ही वह पहला व्यक्ति है जिसने एक राज्य की स्थापना की थी. यह भी रुचिकर है कि निर्मोद ने एक विशेष स्थिति में अपनी माँ से शादी की थी–वास्तविकता में एक बिगड़ी हुई पारिवारिक स्थिति! ऐसा भी कहा जाता है कि निर्मोद ने अपनी माँ से शादी करने की ख़ातिर अपने पिता को मार डाला. वज़ह जो भी हो, निर्मोद के परिवार का निर्माण परमेश्वर के राज्य के सिद्धान्तों पर नहीं हुआ था, क्योंकि परमेश्वर के राज्य के सिद्धान्तों में पारिवारिक रिश्ते पवित्र होते हैं.

निर्मोद के पारिवारिक जीवन में सुरक्षा का इतना अधिक अभाव था कि वह पारिवारिक रिश्तों के बजाये उन बातों के द्वारा जाना जाने लगा जो वह करता था. उत्पत्ति 10 अध्याय में, बाइबल मानव जाति की वंशावली का वर्णन करती है. प्रत्येक इंसान की पहचान इस बात से होती है कि उसका पिता कौन था. उनकी पहचान उनके पारिवारिक रिश्तों के द्वारा होती है. परमेश्वर का राज्य इसी रीति से कार्य करता है. लेकिन निर्मोद को एक ताक़तवर शिकारी और वीर योद्धा के रूप में जाना गया है.

वह यहोवा की दृष्टि (विरोध)[48] *में पराक्रमी शिकार खेलने वाला ठहरा; इससे यह कहावत चली है: निर्मोद के समान शिकार करने वाला. उसके राज्य का आरम्भ शिनार देश में बाबुल, एरेख, अक्कड और काल्हने से हुआ. उस देश से वह निकलकर अश्शूर को गया और नीनवे, रहोबोतीर और कालह को, और नीनवे और कालह के बीच जो रेसेन है, उसे बसाया; बड़ा नगर यही है.*

उत्पत्ति 10:9–12.

असुरक्षा की भावना से प्रेरित होकर निर्मोद ने यह महसूस किया कि उसे अपने आपको साबित करना चाहिए. इसलिये वह नगरों का निर्माण करने लगा और फिर वह सेनाएँ तैयार करने लगा ताकि अपने पड़ोसी कबीले परिवारों को जीत सके. एक इतिहासकार इसे इस प्रकार से कहता है:

इससे पहले के शासकों का अधिकार पारिवारिक रिश्तों पर आधारित था, और कबीले का मुखिया होना पारिवारिक नियंत्रण पर निर्भर था. इसके विपरीत निर्मोद एक क्षेत्र विशेष का शासक था, और इसके निवासी बिना किसी व्यक्तिगत रिश्ते के उसके अधीन थे. यहाँ तक तो बड़े परिवारों के कबीले होते थे–परिवार–समाज; अब यहाँ एक राष्ट्र, एक राजनीतिक समुदाय–एक सरकार क़ायम हो गई.[49]

आज लगभग पूरा संसार निर्मोद के पद चिन्हों पर चल रहा है. आज की सरकारें कबीलाई और खानाबदोस न होकर राजनीतिक और क्षेत्रीय हैं.

निर्मोद ने अपने राज्य की सरकार का आधार क़ायम करने के लिए जो क़दम उठाये वे रुचिकर हैं. परमेश्वर ने इस सिस्टम का नाम निर्मोद द्वारा बसाये गये पहले शहर–बेबीलोन के नाम पर रखा है. इंसानी दिल में पाये जाने वाली बेबीलोन के चरित्र की बातों पर ध्यान दें:

1. यह उन बच्चों से शुरू होता है जो अपने माता-पिता से अलग हो गये हैं.
2. फिर असुरक्षा की भावना के कारण वे लगातार अनुमोदन की चाहत रखते हैं.
3. अनुमोदन की इसी चाहत के कारण अपने ख़ालीपन और मूल्यहीनता की भावना से छुटकारा पाने के लिए वे उग्र क़दम उठा लेते हैं.

बेबीलोन के व्यभिचार की मदिरा की लत का यही रहस्य है. हम में से कितने हैं जिन्होंने मूल्यहीनता की भावना का सामना नहीं किया है या दूसरों के सामने अपने आपको साबित करने का प्रयास नहीं किया है? हम में से कितने हैं जिन्होंने यह महसूस किया है कि परमेश्वर को ख़ुश करने के हमारे प्रयास बेक़ार हैं, और आगे कोशिश करने का कोई मतलब नहीं है? हममें से कितने हैं जिन्होंने अपने काम पर या स्कूल में या चर्च में शक्ति के लिए संघर्ष में फंसकर नाराज़गी या नीचा दिखाने वाले शब्दों को बोलकर अपना बचाव न किया हो या फिर अपने दायरे को बढ़ाने का प्रयास न किया हो? क्या पूरा संसार इस प्याले से नहीं पी रहा है? यदि हम इसी रीति से व्यवहार करते हैं तो क्या हम भी वास्तव में बेबीलोन के ग़ुलाम नहीं है?

इस प्रकार से बेबीलोन के पतन का क्या मतलब है? वाक्याँश ''बेबीलोन गिर पड़ा'' यिर्मयाह 51:8 से आता है और इसका संदर्भ यिर्मयाह 50, 51 में पाया जाता है. यिर्मयाह 50 में परमेश्वर अपने लोगों का वर्णन खोई हुई भेड़ के रूप में करता है जिन्हें भटकाया गया है और जो अपने विश्राम स्थल को भूल चुके हैं. परमेश्वर के लोगों को सही अर्थों में बेबीलोन ने ग़ुलाम बना लिया है और उनमें से बहुत से अपने असली घर, अपने विश्राम स्थल को भूल चुके हैं.

लेकिन परमेश्वर अपने लोगों को नहीं भूला है, वह निम्नलिखित अति सुन्दर प्रतिज्ञा करता है:

सेनाओं का यहोवा यूँ कहता है, इस्राएल और यहूदा दोनों बराबर पिसे हुए हैं; और जितनों ने उनको बँधुआ किया वे उन्हें पकड़े रहते हैं, और जाने नहीं देते. उनका छुड़ानेवाला सामर्थी है; सेनाओं का यहोवा यही उसका नाम है. वह उनका मुकद्दमा भली भाँति लड़ेगा कि पृथ्वी को चैन दे परन्तु बेबीलोन के निवासियों को व्याकुल करे. ***यिर्मयाह 50:33-34.***

फिर अध्याय 51 में हम पढ़ते हैं:

बेबीलोन में से भागो, अपना अपना प्राण बचाओ! उसके अधर्म में भागी होकर तुम भी न मिट जाओ; क्योंकि यह यहोवा के बदला लेने का समय है, वह उसको बदला देने पर है. बेबीलोन यहोवा के हाथ में कटोरा था, जिस से सारी पृथ्वी के लोग मतवाले होते थे; जाति जाति के लोगों ने उसके दाखमधु में से पिया, इस कारण वे भी बावले हो गये. बाबुल अचानक ले ली गई और नष्ट की गई है. उसके लिए हाय हाय करो! उसके घावों के लिए बलसान औषधि लाओ; संभव है वह चंगी हो सके. हम बेबीलोन का इलाज करते तो थे, परन्तु वह चंगी नहीं हुई. इसलिए आओ हम उसको तजकर अपने अपने देश को चले

जाएँ; क्योंकि उस पर किये हुए न्याय का निर्णय आकाश वरन् स्वर्ग तक भी पहुँच गया है. यहोवा ने हमारे अधर्म के काम प्रगट किये हैं, अत: आओ, हम सिय्योन में अपने परमेश्वर यहोवा के काम का वर्णन करें. तीरों को पैना करो! ढालें थामे रहो! क्योंकि यहोवा ने मादी राजाओं के मन को उभारा है, उसने बेबीलोनका नाश करने की कल्पना की है, क्योंकि यहोवा अर्थात् उसके मन्दिर का यही बदला है. बेबीलोन की शहरपनाह के विरुद्ध झण्डा खड़ा करो; बहुत पहरुए बैठाओ; घात लगाने वालों को बैठाओ; क्योंकि यहोवा ने बेबीलोन के रहनेवालों के विरुद्ध जो कुछ कहा था, वह अब करने पर है वरन् किया भी है.
यिर्मयाह 51:3-12.

इस अध्याय के संदर्भ में, परमेश्वर के लोगों को बाबुल के द्वारा बन्दी बनाया गया है. उन्हें भटकाया गया है, लेकिन परमेश्वर उन्हें इसलिए आज़ाद नहीं करवाने जा रहा है कि वे किसी योग्य हैं परन्तु इसलिए क्योंकि वे उसकी संतान हैं.

जब कि ये शब्द,''बेबीलोन गिर पड़ा है'' न्याय और दोषी ठहराये जाने का कथन है, इसके साथ ही साथ इस्राएल के छुटकारे के लिए एक प्रतिज्ञा भी है क्योंकि बेबीलोन ने इस्राएल को बन्दी बनाया है.

बेबीलोन के पतन की बात दूसरे स्वर्गदूत के संदेश में है जो आत्मिक इस्राएल को असुरक्षा, मूल्यहीनता और दूसरों पर नियंत्रण करने की भावना जो हमें पाप करने के लिए विवश करती है. जब हम पहचानते हैं कि परमेश्वर हमें स्वीकार करता है, और यीशु के बलिदान के द्वारा हम वास्तव में परमेश्वर की संतान हैं, हमारी सब असुरक्षा और मूल्यहीनता ग़ायब हो जाती है और हम आज़ादी के साथ परमेश्वर की संतान के रूप में स्थिर हो जाते हैं.

तीन स्वर्गदतों के संदेश को एलियाह का संदेश भी कहा जाता है और यह कोई दुर्घटना नहीं है कि इस संदेश का आख़िरी भाग मलाकी 4:6 में पाया जाता है जो कहता है कि परमेश्वर माता-पिता के मन को उनके पुत्रों की ओर, और पुत्रों के मन को उनके माता-पिता की ओर फेरेगा. दूसरे शब्दों में इस संदेश की ताक़त तब काम करेगी जब हम सच्चे रूप में विश्वास करेंगे कि हम परमेश्वर की संतान इसलिए नहीं हैं क्योंकि हमने कुछ किया है परन्तु इसलिए कि अकेले यीशु ने ही सबकुछ किया है.

बेबीलोन और ड्यूरासेल के सिद्धान्तों को छोड़िये. अब दास मत बने रहिये, परन्तु अब्बा पिता कहकर परमेश्वर पिता को यह जानते हुए पुकारिये कि आप परमेश्वर के प्रिय पुत्र/पुत्री हैं. मसीह के द्वारा हम स्वतंत्र हैं..

संदर्भः

1 डॉ ग्रो हार्लेन ब्रन्डट्लैण्ड, 2001 की वर्ल्ड हैल्थ रिपोर्ट, पृष्ठ 10

2 फिलिप डे, द माइण्ड गेम, (क्रेडेन्स पब्लिकेशन्स वर्ष 2002), प्रास्तावना

3 स्यूसाइड इन ऑस्ट्रेलिया-ए डाइंग शेम 2001. www.wesleymission.org.auU

4 फिलिप डे, परिचय http://www.campaignfortruth.com/Eclub/1007020/depressionandsuicide.htm

5 डेविड वैन बियमा,''लर्निंग टु लिव विद अ पास्ट दैट फेल्ड,'' पिअपल, मई 29,1989, पृष्ठ 79

6 जिम कॉन्वे, अडल्ट चिल्ड्रन ऑव लीगल ऑर इमोशनल डिवार्सी,(मोनार्क पब्लिकेशन्स् 1990) पृष्ठ 53.

7 उत्पत्ति 3:1 **8** – उत्पत्ति 3:2,3 **9** – उत्पत्ति 3:4 **10** – उत्पत्ति 3:5

11 उत्पत्ति 3:6

12 '' तुझी से तो सब कुछ मिलता है, और हमने तेरे हाथ से पाकर तुझे दिया है'' 1 इतिहास 29:14

13 यूहन्ना 15:5

14 ऐलन व्हाईट, एजुकेशन, पृष्ठ 29''जैसे मसीह के द्वारा प्रत्येक व्यक्ति को जीवन मिलता है, उसी प्रकार उसी के द्वारा प्रत्येक आत्मा को स्वर्गीय प्रकाश की कुछ किरणें प्राप्त होती हैं. केवल समझ ही नहीं किन्तु आत्मिक शक्ति, सही बात का ज्ञान, भलाई करने की चाहत, प्रत्येक हृदय में बास करती है.''

15 जैरल्ड टोरटोरा और निकोलस ऐन्गनोस्टाकोस, प्रिंसिपिल्स ऑफ एनाटॉम एण्ड फिजियोलॉज़ी(हार्पर एण्ड रॉ पब्लिशर्स न्यू यार्क, 1984) पृष्ठ 463.

16 ऐलन व्हाईट, फेथ एण्ड वर्क्स, (रिव्यू एण्ड हैरल्ड पब्लिशिंग, 1979) पृष्ठ 22,'' सृष्टि परमेश्वर की है, प्रभु मनुष्य के विषय में लापरवाही करके उसकी साँस को एक दम रोक सकता है. जो कुछ मनुष्य है और जो कुछ उसके पास है, वह सब परमेश्वर का है. संपूर्ण संसार परमेश्वर का ही है. मनुष्य के घर, उसकी व्यक्तिगत उपलब्धियाँ, जो कुछ भी बहुमूल्य या गुणवत्ता है, वह सब परमेश्वर के द्वारा ही दिया गया है. यह सब उसका उपहार है जो मनुष्य के हृदय को शिष्ट बनाने के लिए दिया गया है और फिर परमेश्वर को ही वापस किया जाना है''

17 बग्गी रस्सी इलास्टिक वाली एक लम्बी रस्सी होती है जो आनन्द प्रेमियों को आनन्दित करती है, इसका प्रयोग पुल और ऊँचे स्थानों से कूदने के लिए किया जाता है. बग्गी रस्सी ज़मीन से कुछ मीटर दूरी तक खिंचती है और जब रस्सी सिकुड़ती है तो वह उस व्यक्ति को पुन: उसी स्थान पर खींच लेती है जहाँ से उसने छलाँग लगाई थी.

18 फिलिप डे, द माइण्ड गेम (क्रीडेन्स पब्लिकेशन्स 2002), प्रस्तावना से

19 नेल्ली ज़ोला एण्ड रेनाटा सिंगर, टू स्टोरीज़ फ्रॉम द लैण्ड ऑव डिवोर्स, पृष्ठ 2.

20 उपरोक्त. **21** – कॉनवे, पृष्ठ 31 **22** – यूहन्ना 8:44 **23** – 2 शमूएल 18:33

24 1 पतरस 1:20, प्रकाशितवाक्य 13:8 **25** – जकर्याह 6:13

26 वीनेस एक्सपोजीटरी डिक्सनरी-बैर

27 यहाँ पर जब हम जीवन की ज़िक्र करते हैं तो हम ट्रायल के लिए दिये गये जीवन की बात कर रहे हैं. परमेश्वर ने इस पृथ्वी पर प्रत्येक व्यक्ति को जीवन दिया है कि वह परमेश्वर और उसके राज्य के विषय में सत्य को चुनने या नकारने का चुनाव कर सके.

28 मत्ती 5:45 **29** – फिल्लिप्पियों 3:9,10 **30** – प्रकाशितवाक्य 14:6,7; प्रकाशितवाक्य 4:1-9

32 उत्पत्ति 4:3 **34**– उत्पत्ति 4:13-बाइबल के शब्दों का शाब्दिक अर्थ **35** – उत्पत्ति 4:16

36 इब्रानियों 2:9 **37** – मरकुस 1:3 **38** – मत्ती 4:3 **39** – 1 कुरिन्थियों 15:55

40 पश्चिमी संस्कृति बहुत हद तक यूनानी संस्कृति पर आधारित है जो व्यवहारिक कम, शैक्षिक अधिक है. यह ध्यान देने योग्य बात है कि प्रकाशितवाक्य 13 के पशु को जो पूरे संसार की अगुवाई करता है उसे चीते के रूप में दिखाया गया है जो यूनान के राज्य का प्रतीक है.

41 http:www.chinawestexchange.com/Chines/Culture/Custum.htm

42 लूका 10:25,26 **43** – लूका 10:27 **45** – प्रकाशितवाक्य 13:2,7;

46 प्रकाशितवाक्य 14:6,7 **47** – उत्पत्ति 10:10 **48** – यहोव के सामने शब्द का अर्थ यहोवा के विरोध में भी होता है

49 ए. टी. जोन्स, एम्पाइर्स ऑव द बाइबल, पृष्ठ 51.

‘पहचान के लिए युद्ध’ आत्मखोज की एक यात्रा है. यह आपको आमंत्रित करती है कि आप अपने रिश्तों के द्वारा अपने महत्व को खोजना सीखें.

चारों ओर से हमें लगातार एक ही बात सिखाई जा रही है कि सफलता का अर्थ यह है कि हमें अपने आपको और संसार को यह साबित करके दिखाना ही होगा कि हमारे अन्दर सफल होने की क्षमता है. यह एक सिस्टम है जो हमें यह सिखाता है कि हमारा महत्व तभी होता है जब हम एक विशेष स्तर का कार्य करते हैं या कोई उपलब्धि हासिल करते हैं. इस सिस्टम को मानने के परिणाम अच्छे नहीं रहे हैं. लाखों लोग निराशा का जीवन जी रहे हैं और सैकड़ों लोग निराशा में प्रतिदिन आत्महत्या कर रहे हैं.

आइये हम मिलकर इस युद्ध-पहचान के लिए युद्ध; जो हमारे महत्व और अहमियत को निर्धारित करता है और जिसमें हम सब लड़ रहें हैं, इसकी प्रकृति को जानें. इस किताब में मेरी यात्रा और उन सिद्धान्तों का वर्णन है जो मैंने यात्रा के दौरान सीखें हैं. आज़ादी एक दूसरी चीज़ है, परन्तु यह किताब आज़ादी की राह पर मेरी यात्रा का वर्णन करती है.

एड्रियन ईबन्स

www.identitywars.org

Identity Wars - Hindi